व्याकरण-भानु

संस्कृत भाषा का पूर्ण व्याकरण

VYAKARN BHANU

OR

A Manual of Sanskrit Grammar

BY

Pt. BHANU DATT VIDYA RATTAN,

Government Pensioner, Lahore.

PUBLISHED BY

UTTAR CHAND KAPUR & SONS,

BOOK-SELLERS & PUBLISHERS,

Anarkali, Lahore.

1917

—:o:—

All Rights Reserved.

20th Edition] 2000 Copies Price 0-8-0.

कापी २०००] [मूल्य ।) आठ आना।

सूची पत्र ।

विषय	पृष्ठ
१—वर्ण प्रकरण ...	१
२—व्याकरण संज्ञा ...	२
३—सन्धि प्रकरण ...	३
४—णत्व विधान ...	८
५—षत्व विधान ...	८
६—सुबन्त प्रकरण ...	८
७—अजन्त पुलिंग प्रकरण	९
८—अजन्त स्त्रीलिंग ...	१७
९—अजन्त क्लीबलिंग ...	२३
१०—हलन्त पुलिंग ...	२५
११—हलन्त स्त्रीलिंग ...	४३
१२—हलन्त नपुंसकलिंग	४६
१३—सर्वनाम प्रकरण ...	५१
१४—विशेष्य विशेषण ...	५७
१५—अव्यय प्रकरण ...	५८
१६—स्त्री प्रत्यय ...	६०
१७—कारक प्रकरण ...	६१
१८—समास प्रकरण ...	६६
१९—तद्धित प्रत्यय ...	७०
२०—उत्तरार्द्ध ...	७३
२१—तिङ विभक्तयः ...	७४
२२—वाच्य प्रकरण ...	७८
२३—भ्वादयः ...	७८
२४—अदादयः ...	८२
२५—जुहोत्यादयः ...	८५
२६—दिवादयः ...	८७
२७—स्वादयः ...	८७
२८—तुदादयः ...	८९
२९—रुधादयः ...	९१
३०—तनादयः ...	९२
३१—क्रयादयः ...	९३
३२—चुरादयः ...	९४
३३—णिजन्त प्रकरणम्	९९
३४—सन्नन्त प्रकरणम् ...	१००
३५—यङन्त प्रकरणम्	१०१
३६—यङ्लुगन्त प्रकरणम्	१०२
३७—नाम धातु प्र० ...	१०२
३८—परस्मैपद प्र० ...	१०३
३९—आत्मनेपद प्र० ...	१०३
४०—वाच्य प्रकरणम् ...	१०४
४१—लकारार्थ निर्णय ...	१०५
४२—कृदन्त प्रकरणम् ...	१०६
४३—प्रश्न पत्रम् ...	११२

—:०:—

ओं तत्सत्

व्याकरण-भानुः ।

वर्ण माला (Alphabet)

१—शब्द के अखण्ड्य अंश को वर्ण (Letter) कहते हैं।

२—वर्ण दो प्रकार के होते हैं—स्वर (व अच्) (Vowel) और व्यञ्जन [व हल] (Consonant)।

स्वर (Vowels)

३—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ इन चतुर्दश को स्वर कहते हैं। स्वर तीन भांति के होते हैं, ह्रस्व Short दीर्घ (Long) और प्लुत Longest अ, इ, उ, ऋ, लृ, ह्रस्व। आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, औ दीर्घ। आ३ ई३ ओ३, प्लुत हैं। यह संज्ञा प्रायः दूर से पुकारने, गाने और रोने में बनती है॥

४—इन स्वरों के उदात्त आदि और भी कई भेद हैं, जिससे, अ इ, उ के अठारह २, ऋ लृ, के तीस २ ए, ऐ, ओ औ-के चौवीस २ भेद बनते हैं। यह ग्रंथ बाहुल्य और बहुधा बालकों के लिये निष्प्रयोजन समझ के नहीं लिखे॥

व्यञ्जन [Consonants]

५—क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ। ट ठ ड ढ ण। त थ द ध न। प फ ब भ म। य र ल व श ष स ह। (ं) अनुस्वार (ः) और विसर्ग

६—इन में 'क' से 'म' तक स्पर्श य र ल व अन्तस्थ श ष स ह ऊष्म (ं) (ः) अयोगवाह कहलाते हैं। स्पर्शों को वर्गीय अक्षर भी कहते हैं और वर्ग ५ हैं। क वर्ग। च वर्ग। त वर्ग। ट वर्ग। और प वर्ग

स्थान [Places where letters are uttered]

७—वर्ग के ५, अक्षर युक्त, व अन्तस्थ संयुक्त, 'ह' उरस्थ, अ कवर्ग ह (ः) कण्ठ्यः (gutturals) इ चवर्ग, य श तालव्यः (Platals) ऋ टवर्ग, र ष मूर्धन्यः (Linguals) लृ तवर्ग ल स दन्त्य Dentals उ, पुवर्ग, ⌒ [उपध्मानीय, ओष्ठ्य, (Labials)

ङ, ञ, ण, न और म नासिक्य (Nasals) भी हैं। ए ऐ कण्ठ तालव्य (Palato gutturals) ओ औ कण्ठोष्ठ्य (Labio gutturals) व दन्तयोष्ठ्य (Dento labial) (ँ) नासिक्य (Nasals) कहते हैं। जिह्वा मूलीय का जिव्हा मूल स्थान है ॥

८—क ख से पूर्व अर्द्ध विसर्ग (◡) जिह्वा मूलीय (Aspirote) कहलाते हैं, और प फ से पूर्व अर्द्ध विसर्ग (◡) उपध्मानीय कहलाते हैं ॥

—०—

व्याकरण संज्ञा ।

९—दो वर्णों के अति समीप्य को सन्धि या संहिता (Euphony ar Combinaton of Letters) कहते है ॥

१०—सुबन्त और तिङन्त शब्द को पद (Inflected forms of bases and roots कहते हैं ॥

११—स्वरों से व्यवध्यान रहित हलों को संयोगिक कहते हैं॥

१२—ह्रस्व स्वर को लघु, दीर्घ स्वर को गुरु तथा संयुक्त अक्षर से पूर्व वर्ण को भी गुरु वर्ण कहते हैं ॥

१३—क्रिया, वस्तु व वस्तु के गुणादि के ज्ञापक को प्रकृति कहते है। प्रकृति दो प्रकार की होती है—धातु Verb और प्रतिपादिक (Non Verbal bases ॥

१४—क्रिया वाचक शब्द को 'धातु' और धातु प्रत्यय और प्रत्ययान्त शब्द को छोड़ सार्थक शब्द को प्रतिपादिक कहते हैं ॥

१५—धातु और प्रातिपदिक के परे जो अंश मिलाये जाते हैं उन्हें 'प्रत्यय' affix कहते हैं। जैसे विभक्ति कृत् तद्धित और धात्ववयव आदि ॥

१६—इ, उ, ऋ, लृ, को ए, ओ अर् अल् यथा क्रम होते हैं उन्हें गुण कहते हैं ॥

१७—अ, ऋ, ऌ, ए ओ को क्रम से आ आर आल् ऐ औ होते हैं उन्हें वृद्धि कहते हैं ॥

स्वर सन्धि (Conj unction of Vowels and Consonants)

१८—एक जातीय दो स्वर मिलने से दीर्घ हो जाता है जैसे दैत्य+=अरिः=दैत्यारिः। दया+अर्णवः=दयार्णवः। गिरि+इन्द्र=गिरीन्द्रः गौरी+ईशः=गौरीशः। विधु+उदयः=विधूदयः। भू+ऊर्द्धम्=भूर्द्धम्। पितृ+ऋणम्+पितृणाम् इत्यादि ॥

१९—अवर्ण से परे इ, उ, ऋ, ऌ, होने से दोनों मिल कर गुण होते हैं। जैसे—उप+इन्द्र=उपेन्द्रः। महा+ईशः=महेशः। नर+उत्तमः=नरोत्तमः। देव+ऋषिः=देवर्षिः। राजा+उवाच=राजोवाच इत्यादि

२०—अवर्ण से परे ए ऐ ओ औ होने से उभय मिलकर वृद्धि होती है। जैसे तव—+एषः=तवैषः। प्रजा+ऐश्वर्य्य=प्रजैश्वर्य्य। गङ्गा+ओघः=गंगौघः। महा+औषधि=महौषधिः इत्यादि ॥

२१—इ उ ऋ ऌ को क्रम से य् व् र् ल् होते हैं असमान स्वर परे होने से। यथा-दधि+आनय=दध्यानय। सुधी+उपास्यः=सुध्युपास्यः। मधुः+अरिः=मध्वरिः। पितृ+अनुमतिः=पित्रनुमतिः। ऌ+अनुबन्धः=लनुबन्धः आदि।

२२—ए ऐ ओ औ के स्थान में क्रम से अय् आय् अव् आव् होते हैं स्वर परे होने से। जैसे शे+अनम्=शयनम्। भो+अनम्=भवनम्। नै+अकः=नायकः। पौ+अकः=पावकः आदि ॥

२३-पदान्त "ए" "ओ" से परे अ का लोप होकर ऽ यह चिन्ह रह जाता है, जैसे-हरे+अव=हरेऽव। विष्णो+अव=विष्णोऽव आदि।

२४-पदान्त अय् आय् अव् आव् का अन्त्य वर्ण विकल्प करके लुप्त होता है, लोप होने से फिर सन्धि नहीं होती। यथा—सखे+आगच्छ=सखाऽयागच्छ वा सख्यागच्छ। पटी+इह=पटीह। श्रियै+पति=श्रियापति। रवौ+उदिते=रवावुदिते ॥ पटो+इह=पट

२५—गो के ओ को अव् होता है इन्द्रादि गण परे होने से। जैसे गो+इन्द्र=गवेन्द्रः, गो+अजिनम् ॥ गवाजिनम्। गो+अक्षः=गवाक्षः आदि ॥

२६—द्वि वचन के ई ऊ और ए को सन्धि नहीं होती। जैसे कवि+इमौ, गुरू=आगतौ। गंगे=अमू आदि ॥

२७—ओकारान्त निपात अथवा एक स्वर निपात को सन्धि नहीं होती, जैसे—अहो+आगच्छ, इ+इन्द्रः। उ+उमेशः आदि ॥

२८—अदस् शब्द के म से परे 'ई' को सन्धि होती। जैसे अमी+ईशाः आदि ॥

व्यञ्जन (हल्) सन्धि (Conjunction of Consonants)

२९—तवर्ग चवर्ग का योग हो तो तवर्ग को चवर्ग के अक्षर क्रम से होते हैं। सत्+चित् सच्चित्। तद्+जयः=तज्जयः भवान्+जयति=भवाञ्जयति। यज्+नः=यज्+ञः=यज्ञः आदि ॥

३०—तवर्ग टवर्ग का योग हो तो, सवर्गीय अक्षर को क्रम से टवर्गीय अक्षर हो जाते हैं। यथा—तत्+टीका=तट्टीका एतद्+ठक्कुरः=एतट्ठक्कुरः। उद्+डयते=उड्डयते। महान्+डामरः=महाण्डामरः आदि

३१—पादान्त 'ट' वर्ग से परे तवर्ग हो तो 'ट' वर्ग नहीं होता। जैसे—षट्+ते षट्ते। सम्राट आदि ॥

३२—ष से परे तवर्ग को टवर्ग हो जाता है यथा—आकृष+तः=आकृष्टः। इष्+तः=इष्टः। षष्+थः=षष्ठः ॥

३३—तवर्ग को ल् परे होने से ल् होता है, यथा—तत्+लयः=तल्लयः। तद्+लाभः=तल्लाभः। भवान्+लिखति=भवाँल्लिखति।

३४—वर्ग के १म, २य, रा, श, ष, स परे होने, वर्ग के २य, ३य, और चतुर्थ, वर्ण को १म, वर्ण हो जाता है जैसे—वृक्षक्+छाय=वृक्षच्छाया, क्षुद+पिपासा=क्षुत्पिपासा,तद+सकलम्=तत्सकलम आदि

३५—स्वर तथा वर्ग के ३य, ४र्थ, ५म वर्ण और अन्तस्थ वर्ण परे होने से पदान्तस्थ १म, वर्ण के स्थान में ३य, वर्ण होता है, सम्यक्+ उवाच=सम्यगुवाच, वाक्+दानं=वाग्दानम्, जगत+ईश्वरः=जगदीश्वरः अप+जलम्=अब्जलम् ॥

३६—पदान्त वर्ग के १म, २य, ३य, और ४र्थ अक्षर के परे 'ह' हो तो उसको उस वर्ग का ४र्थ विकल्प से होता है। जैसे वाक्+हरिः=वागहरिः वा वाग्घरि, सम्राट+हतः=सम्राडहतः वा सम्राडढतः। तत्+हितम्= तद्धितम्=वा तदहितं। अप + हरणम्=अवहरणं वा अब्भरणम्। पद के मध्य में न् म् को 'अनुस्वार' होता है। स्पर्श, श, ष, स और 'ह' परे होने से यथा दन्+शनं=दंशनं। रम्+स्ये=रंस्ये आदि ॥

३७-पदन्त 'म' को अनुस्वार होता है, स्पर्श वर्ण परे होने से फिर अन्तस्थ 'व' उष्म वर्ण परे हो तो नित्य अनुस्वार, वा जिस वर्ग का अक्षर परे हो उसका ५म, होजाता है। जैसे-किम्+करोषि=किंकरोषि वा किङ्करोषि। शीघ्रम्+चलति=शीघ्रं चलति=शीघ्रञ्चलति, नदीम्+ तरति=नदींतरति=नदीन्तरति, किम्+फलम्=किंफलम्=किम्फलम्, भारम्+ वहति=भारंवहति=भारम्वहति। करुणम्+रोदिति=करुणं=रोदिति। सुखम्+शेते सुखं=शेते। कष्टम्+सहते=कष्टं सहते ॥

३८—पदान्त वर्ग के १म, अक्षर को, ५म, वा ३य, होता है, व 'म' परे होने से। परन्तु 'मात्र' और 'मय' परे होने से ५म ही होता है दिक्+ नागः=दिग्नागः=दिङ्नागः। जगत्+नाथः=जगन्नाथः=जगदनाथः अप+ नदी=अम्नदी वा अब्नदी, एतत+मात्रम्=एतन्मात्रम्, एतत्+मय=एतन्मय

३९—उद उपसर्ग से परे 'स्था स्तम्भ' धातुओं के 'स' का लोप होता है-उद=स्थानं=उत्थानं, उद्+स्तंभनं,+उत्तम्भनम् ॥

४०—पदान्त 'त्' वा 'न' को श परे होने से क्रम से, च ञ होते हैं, और 'श' को 'छ' होता है। जैसे:—तत्+श्रुत्वा+तच्छ्रुत्वा। निन्दन्+ शठः=निन्दञ्छठः आदि ॥

४१—स्वर वर्ण से परे 'छ' को विकल्प करके द्वित्व होता है जैसे वृक्ष+छाया=वृक्षच्छाया आदि ॥

४२—ह्रस्व से परे ङ, न, ण द्वित्व होते हैं, स्वर परे होनेसे यथा प्रत्यङ+आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा । सुगण+ईशः=सुगण्णीशः । सन्=अच्युतः सन्नच्युतः इत्यादि ॥

४३—पदान्त न् से परे च छ को श्च, ट ठ को ष्ट ष्ठ, त थ को स्त और न को अनुस्वार होता है, जैसे कस्मिन्+चित्=कस्मिंश्चित् । महान्+छेदः=महांछेदः । चक्रन्+टिट्टिभिः=चक्रंष्टिट्टिभि । महान्+ठक्कुरः महांष्ठक्कुरः । पतन्+तरुः=पतंस्तरुः क्षिपन्+थुत्करः=क्षिपंस्थुत्करःआदि

४४—पदान्त 'स' 'र' को विसर्ग (:) होता है, जैसे रामस्=रामः पुनर्=पुनः । पितर्=पितः आदि ॥

४५—(:) विसर्ग को श, ष और स क्रम से विकल्प करके होते हैं श ष स परे होने से । कःशेते=कश्शेते=कः शेते । राम+शेते=रामश्शेते रामःशेते सरितः+षट्=सरितष्षट् वा सरितः षट् । प्रथम+सर्गः= प्रथमस्सर्गः वा प्रथमः सर्गः आदि ॥

४६—च छ परे हो तो 'श' ट ठ परे हो तो 'ष' त् थ परे हो तो 'स' होता है । जैसे निः+चयः=निश्चयः तरोः+छाया=तरोश्छाया । भीतः+टलति=भीतष्टलति । कःठक्कुरः=कष्ठक्कुरः । नदीः+तरति= नदीस्तरति ॥

४७—क ख वा प फ, परे होने से इ उ परस्थित विसर्ग को ष् होता है, यथा—अविः+कृतं=अविष्कृतं= । दुः+कृतं=दुष्कृतं परन्तु पदांत विसर्ग को विकल्प होता है । यथा सर्पिः+करोति=सर्पिष्करोति वा सर्पिःकरोति । धनु+करोति । धनु=करोति । धनुष्करोति वा धनुःकरोति

४८—मनस् वा पुरस् के विसर्ग को क ख,प फ परे होने से स् होता है । नमः+करोति=नमस्करोति । पुरः-करोति, पुरस्करोतिआदि

४९—अ के परस्थित विसर्ग को ओ होजाता है, और परे

का, अः लुप्त हो जाता है, वर्ग का ३य, ४र्थ वा य, र, ल, व, ह परे होने से ओ हो जाता है। यथा—देवः+अयम=देवोऽयं। शोभनः+गंधः=शोभनो गंधः। नूतनघटः+नूतनोघटः। नरः+याति=नरोयाति। इत्यादि॥

५०—अ आ भिन्न स्वर के परे स्थित (ः) विसर्ग को 'र' होता है स्वर वा वर्ग के ३य, ५म, य, र, ल, व, ह, परे होने से। जैसे—हरिः+अयम्=हरिरयम्। रविः+उदेति=रविरुदेति। श्रीः+एषा=श्रीरेषा। तैः+उक्तम्=तैरुक्तम्। आदि॥

५१—अकार के परस्थित भी रेफजात विसर्ग को 'र' होता है, स्वर ३य, ५म, य, र, ल, ब, ह, परे होने से। यथा—पुनः+आगच्छ=पुनरागच्छ भ्रातः+देहि=भ्रातर्देहि। अन्तः+यामी=अन्तर्यामी। भ्रातः+याहि=भ्रातर्याहि॥

५२—'र' परे हो तो पूर्व र का लोप होकर पूर्व ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है। यथा—पुनर+रक्ष=पुनारक्ष। हरि+रक्षति=हरीरक्षति। निर+रक्त=नीरक्तम्॥

५३—अकार के परे स्थित विसर्ग का लोप होता है अकार भिन्न स्वर परे होने से। लोप होने से फिर संधि नहीं होती। यथा—रामःआगतः राम आगतः। देवः+उवाच=देव उवाच। कः+एषः=कएषः॥

५४—भो भगोः अघोः और आ के परिस्थित विसर्ग का लोप होता है स्वर ३य, ४र्थ, ५म, वर्ण तथा य र ल व ह परे होने से यथा—देवाः+आगतः=देवागतः। मानवाः+गच्छन्ति=मानवागच्छन्ति। नराः+पते=नरापते। भोः+देवदत्त=भो देवदत्त आदि॥

५५ सः और एषः के परे स्थित विसर्ग का लोप होता है 'अ' भिन्न सब अक्षर परे होने से। यथा—सः+आह=स आह। एषः+उवाच=एष उवाच। सःगच्छति इत्यादि॥

णत्व विधि (Change) "न" Into "ण"

५६—ऋ, र् ष् के पर स्थित अपदान्त 'न' को 'ण' हो जाता है। यथा—नृनाम्+नृणाम्। चतुर+नाम्+चतुर्णाम्। षष्+नाम्+षणाम्। इत्यादि।

५७—स्वर कवर्ग पवर्ग आ न, य, व, र, ह, इनके समस्त वा व्यस्त के व्यवधान में भी 'न' को ण हो जाता है यथा—नराणाम् ऋषीणाम्, दीर्घेण कृपणः॥

५८—तथा त थ द ध संयुक्त न को ण नहीं होता। यथा—कृन्तन, ग्रन्थः, क्रन्दनम्, अरुन्धती आदि॥

५९—एक पद में ऋ, र, ष, और २य पद में न हो तो ण नहीं होता। यथा—दुर्नीतिः, नर नाथः, परन्तु विभक्ति युक्त वा इन प्रत्यय से मिला हो, तो विकल्प होता है। यथा—प्रभावेन (णं) पुरगाभिया (ना) हरि भाविनो (णो आदि)॥

षत्व विधि (Change of) 'स' (into) 'ष'

६०—'अ' भिन्न स्वर कवर्ग से परे अपदान्त आदेश रूप और प्रत्यय के अवयव स को ष् होता है। यथा—(प्रत्यय का अवयव) नरेषु, विष्णु, चतुर्षु॥

६१—अनुस्वार (:) विसर्ग स्वर तथा ह, य, व, र, के व्यवधान में भी होता है, यथा—धनूंषि हविःषु आदि॥

६२—इकारान्त उकारान्त उपसर्ग से परे सकारादि कुछ धातुओं के 'स' को 'ष' होता है। जैसे—नि+स्था+निष्ठा, अभि:+कः अभिषकः आदि

सुवन्त प्रकरणम् (Declusion)

६२—शब्द तीन प्रकार के होते हैं १ रूढि, २ यौगिक और ३ योगरूढि जिस का अर्थ सांकेतिक हो प्रकृति प्रत्यय की कुछ अपेक्षा न रखे उसे रूढि, प्रकृति प्रत्यय के अर्थ से जिनका अर्थ निकले, वे यौगिक;

और जो प्रकृति प्रत्यय के अर्थ को लेकर किसी पदार्थ विशेष को जतावें उसे योग-रूढी कहते हैं। यथाः—वृक्षः, मण्डपः, घटः, रूढीः, पाचकः भूचर,आदयः,यौगिकः। पङ्कजं, जलजंशिरस्त्राणमित्यादयोयोगरूढाः।

६५—शब्द के तीन लिङ्ग होते हैं। यथा—पुलिङ्ग (Masculine) स्त्रीलिङ्ग (Fiminine) और नपुंसकलिङ्ग (Neuter) और इनके आगे आठ विभक्तियें लगती हैं—उन्हें प्रथमा (Nominative) द्वितीया (Accusative) तृतीया (Instrumental) चतुर्थी (Dative) पञ्चमी (Ablative) षष्ठी (Genetive) सप्तमी (Locative) और संबोधन (Vocative) कहते हैं॥

प्रत्येक विभक्ति के तीन २ वचन हैं। यथा—एक वचन (Singular) द्विवचन (Dual) बहुवचन (plural)।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा,	सु (:)	औ	जस् (आः)
द्वितीया,	अम्	औ	शस् (अः)
तृतीया,	टा (आ)	भ्याम्	भिस् (भिः)
चतुर्थी,	ङे (ए)	भ्याम्	भ्यस् (भ्यः)
पञ्चमी,	ङसि (अः)	भ्याम्	भ्यस् (भ्यः)
षष्ठी,	ङस (अः)	ओस (ओः)	आम्
सप्तमी,	ङि (इ)	ओस (ओः)	सुप् (सु)

अजन्त पुलिंग प्रकरणम्।

६६—अजन्त पुलिंग शब्दों की सि को विसर्ग (:) हो जाता है, परन्तु ऋकारान्तों में सि लुप्त हो जाती है, और ऋ को (आ) होता है॥

६७—आ इ और उकारान्त शब्दों के परे अम् का म् रह जाता है और पुलिंग शस् विभक्ति में न होता है और पूर्व स्वर को दीर्घ होता है॥

६८—अकारान्त शब्दों के परे स्थित टा, भिस, ङे, ङसि, ङस को क्रम से इन ऐस, आय आत् और स्य होते हैं ॥

६९—भ्याम् परे होने से पूर्व आकार को दीर्घ और भ्यस् ओस परे होने से एकार होता है ॥

७०—ह्रस्व स्वरान्त शब्दों के आम् को नाम होकर ह्रस्व स्वर को दीर्घ होता है ॥

७१—ह्रस्व स्वरान्त शब्दों की सि सम्बोधन में लुप्त होती है ॥

देव (God)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	देवः	देवौ	देवाः
२या,	देवम्	देवौ	देवान्
३या,	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः
४र्थी,	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
५मी,	देवात् (द)	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
६ष्ठी,	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
७मी,	देवे	देवयोः	देवेषु !
सम्बोधन	हे देव !	हे देवौ !	हे देवाः !

राम, कृष्ण, घट, वृक्ष, कुम्भ, मृग, महिष आदि अकारान्त पुलिंग सब ऐसे ही समझ लो ॥

७२—शस आदि स्वरादि विभक्ति परे होने से धातु से बने हुए आकारान्त शब्दों के आ का लोप होता है। यथा—विश्वपा, जलपा, शंखध्मा, सोमपा आदि ॥

विश्वपा (All preserving)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	विश्वपा	विश्वपौ	विश्वपाः
२या,	विश्वपाम्	विश्वपौ	,,

३या,	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः
४र्थी,	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
५मी,	विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
६ष्ठी,	विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपाम्
७मी,	विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपासु
सम्बोधन	हे विश्वपाः !	हे विश्वपौ !	हे विश्वपाः !

७३—इदुदन्त शब्दों, के ओ को क्रम से 'ई' ' जस में गुण टा को 'न' ङे ङसि ङस् में 'प' ङसि ङस् के 'अ' का लोप और 'ङि' होकर इ, उ, का लोप होता है ॥

मुनि (Sage)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	मुनिः	मुनी	मुनयः
२या,	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
३या,	मुनिना	मुनिभ्यां	मुनिभिः
४र्थी,	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
५मी,	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
६ष्ठी,	मुनेः	मुनयोः	मुनीनाम्
७मी,	मुनौ	मुनयोः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने !	हे मुनी !	हे मुनयः !

'पति' 'सखि' को छोड़, कवि भूपति आदि सब इकारान्त पुलिंग ऐसे ही जानों, इस लिये इन दोनों, के रूप लिख लिये हैं ॥

७४—पति सखि शब्द के ङसि (अः) ङस् के (अः) के 'अ' को 'उ' होता है और सखि के सि को छोड़, शेष चार वचनों में 'इ' को 'ऐ' वृद्धि होती है और 'सि' का लोप 'इ' को आ होता है ॥

पति (Lord)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	पतिः	पती	पतयः
२या,	पतिम्	पती	पतीन्
३या,	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
४र्थी,	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
५मी,	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
६ष्ठी,	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
७मी,	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते !	हे पती !	हे पतयः !

सखि (Friad)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	सखा	सखायौ	सखायः
२या,	सखायम्	सखायौ	सखीन्
	शेष पतिवत्		

भानु (The Sun)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	भानुः	भानू	भानवः
२या,	भानुम्	भानू	भानून्
३या,	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
४र्थी,	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
५मी,	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
६ष्ठी,	भानोः	भान्वोः	भनूनाम्
७मी,	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो !	हे भानू !	हे भानव !

शम्भु विधु ऋतु गुरु लघु मृदु तरु आदि ह्रस्व उकारान्त पुलिंग सब ऐसे ही होते हैं ॥

धातु निष्पन्न ईदूदन्त सुधी स्वयम्भू आदि शब्दों की स्वरादि विभक्तियों में "ई" को इय "ऊ" को "उव" हो जाता है ॥

सुधी (Intelligent)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
२या,	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
३या,	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
४र्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
५मी,	सुधियेः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
६ष्ठी,	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
७मी,	सुधियै	सुधियो	सुधीषु
सं०	हे सुधी !	हे सुधियौ !	हे सुधियः !

स्वयम्भू (Self-existent Brahma)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	स्वयम्भुः	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
२या,	स्वयम्भुवम्	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
३या,	स्वयम्भुवा	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभिः
४र्थी,	स्वयम्भुवे	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
५मी,	स्वयम्भुवः	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
६ष्ठी,	स्वयम्भुः	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भुवाम्
७मी,	स्वयम्भुवि	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भुषु
सं०	हे स्वयम्भुः	हे स्वयम्भुवौ !	हे स्वयम्भुवः !

अग्रणी, ग्रामणी, सेनानी आदि ईदन्त, और हम्भू, कारभू, खलपू

और सुल्लु आदि ऊदन्त शब्दों को छोड़ सारे ईदूदन्त ऐसे ही समझो ।

ग्रामणी (Chief)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	ग्रामणीः	ग्रामण्यौ	ग्रामण्यः
२या,	ग्रामण्यम्	ग्रामण्यौ	ग्रामण्यः
३या,	ग्रामण्या	ग्रामणीभ्याम्	ग्रामणीभिः
४र्थी,	ग्रामण्ये	ग्रामणीभ्याम्	ग्रामणीभ्यः
५मी,	ग्रामण्यः	ग्रामणीभ्याम्	ग्रामणीभ्यः
६ष्ठी,	ग्रामण्यः	ग्रामण्योः	ग्रामणीनाम्
७मी,	ग्रामण्याम्	ग्रामण्योः	ग्रामणीषु

खलपूः ।

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	खलपूः	खलप्वौ	खलप्वः
२या,	खलप्वम्	खलप्वौ	खलप्वः
३या,	खलप्वा	खलपूभ्याम्	खलपूभिः
४र्थी,	खलप्वे	खलपूभ्याम्	खलपूभ्यः
५मी,	खलप्वः	खलप्वोः	खलपूनाम्
६ष्ठी,	खलप्वः	खलप्वोः	खलपूनाम्
७मी,	खलप्वि	खलप्वोः	खलपुषु

सम्बोधन प्रथमावत् !

ऋकारान्तों के नियम ।

७५—ऋकारान्त पु० स्त्री० शब्दों की प्रथमा और सम्बोधन के एक वचन की विभक्ति लुप्त होती है, ऋ को "आ" हो जाता है ॥

७५—औ जस् और विभक्ति परे होने से "ऋ" को कहीं वृद्धि और कहीं गुण हो जाता है ॥

७७—ऋदन्त शब्दों के परस्थित ५मी, ६ष्ठी, के एक वचन में अ को "उ" होकर पूर्ववर्ती ऋ का लोप हो जाता है ॥

७८—ङि और सम्बोधन की ऋ को गुण होता है ॥

धातृ (Creator)

विभ०	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	धाता	धातारौ	धातारः
२या,	धातारम्	धातारौ	धातॄन्
३या,	धात्रा	धातृभ्याम्	धातृभिः
४र्थी,	धात्रे	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
५मीं,	धातुः	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
६ष्ठी,	धातुः	धात्रोः	धातॄणाम्
७मी,	धातरि	धात्रोः	धातृषु
सं०	हे धातः !	हे धातारौ !	धातारः !

पित्रादि शब्दों को छोड़ सब ऋकारान्त धातृवत होते हैं ॥

पितृ (Eather)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहु वचन
१मा,	पिता	पितरौ	पितरः
२या,	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
३या,	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
४र्थी,	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
५मी,	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
६ष्ठी,	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
७मी,	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सं०	हे पितः !	हे पितरौ !	हे पितरः

एकारान्त और ऐकारान्त शब्द

७९—स्वरादि विभक्तियों में ए को अय और ऐ को आय होजाता है।

से (wealthy)

१म,	से	सयौ	सयः
२या,	सयं	सयौ	सयः
३या,	सया	सेभ्याम्	सेभ्यः
४र्थी,	सयेः	सेभ्याम्	सेभ्यः
५मी,	सयः	सेभ्याम्	सेभ्यः
६ष्ठी,	सयः	सयोः	सयाम्
७मी,	सयि	सयोः	सेषु

रै (wealthy)

१मा,	राः	रायौ	रायः
२या,	रायम्	रायौ	रायः
३या,	राया	राभ्याम्	राभिः
४र्थी,	राये	राभ्याम्	राभ्यः
५मी,	रायः	राभ्याम्	राभ्यः
६ष्ठी,	रायः	रायोः	रायाम्
७मी,	रायि	रायोः	रैषु

ओकारान्तों के नियम।

८०—सि औ जस् विभक्ति में "ओ" को औ, अम् शस् विभक्ति में "आ" हो जाता है। यथा—ङसि (स) ङस अः का "अ" लुप्त हो जाता है॥

गौ (ox)

विभ०	एक वचन	द्वि वचन	बहुवचन
१मा,	गौ	गावौ	गावः
२या,	गाम्	गावौ	गाः
३या,	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
४र्थी,	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
५मी,	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
६ष्ठी,	गोः	गवोः	गोषु
७मी,	गवि	गवोः	गोषु

शेष प्रथमावत्

८१—स्वरादि विभक्तियों में आ आव में बदल जाता है॥

ग्लौ (Moon)

विभ०	एक वचन	द्विवचन	बहु वचन
१मा,	ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः
२या,	ग्लावम्	ग्लावौ	ग्लावः
३या,	ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः
४र्थी,	ग्लावे	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
५मी,	ग्लावः	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
६ष्ठी,	ग्लावः	ग्लावोः	ग्लावाम्
७मी,	ग्लावी	ग्लावोः	ग्लौषु
सं०	हे ग्लौः !	हे ग्लावौ !	हे ग्लावः

इति अजन्त पुल्लिंग।

—:०:—

अजन्त स्त्री लिंग प्रकरणम्।

८१—आकारान्त तथा ईकारान्त शब्दों के परे स्थित "सि" का लोप होता है, और औ को ई होता है॥

अवी, तन्त्री तरी, लक्ष्मी, श्री, ह्री, और धी, की 'सि' का लोप नहीं होता है॥

८२—ऊकारान्तों में 'औ' को 'ऊ' होता है॥

८३—आकारान्त शब्दों को टा ओस् विभक्ति में 'आ' को 'ए' हे ङसि, ङस्, ङि, में आ के परे 'या' और ङि, को 'याम' होता है॥

८४—स्वरान्त स्त्री वाचक शब्दों के आम् को 'नाम' हो कर पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है॥

८५—आकारान्त शब्दों के सम्बोधन के एक वचन के 'आ'को'ए' होजाता है और अन्य स्वरान्तो में दीर्घ स्वर 'ह्रस्व' होजाता है॥

८६—इकारान्त उकारान्त शब्दों के परेस्थित 'औ' को 'ई, 'ऊ' क्रम से होते हैं॥

८७—स्वरान्त स्त्री-लिंग शब्दों में आम् को 'नाम्' हो जाता है और ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है ॥

रमा (Lakshmi) आवन्त स्त्री लिंग

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	रमा,	रमे	रमाः
२या,	रमाम्	रमे	रमाः
३या,	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
४र्थी,	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
५मी,	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
६षष्ठी,	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
७मी,	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे !	हे रमे !	हे रमाः

अम्बा अक्का और अल्ला शब्द के सम्बोधन में एक वचन के दो २ रूप बनते हैं। यथा—हे अम्बे ! हे अम्ब ! इत्यादि।

अकारान्त स्त्री लिंग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं, परन्तु जरा नासिका और निशा शब्द को स्वरादि विभक्ति में विकल्प से जरस् नस् और निश् क्रम से होजाता है। यथाः—

जार (Old age)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	जरा	जरसौ (जरे)	जरसः (जराः)
२या,	जरां (जरसं)	जरसौ (जरे)	जरसः (जरा)
३या,	जरसा (जरया)	जराभ्याम्	जराभिः
४र्थी,	जरसे (जरायै)	जराभ्याम्	जराभ्यः
५मी,	जरसः (जरायाः)	जराभ्याम्	जराभ्यः

६ष्ठी,	जरसः (जरायाः)	जरसोः (जरयोः)	जरसाम् (जरायाम्)
७मी,	जरसि (जरायां)	जरसोः (जरयोः)	जरासु
सम्बोधन	हे जरे !	हे जरे (जरसौ)	हे जराः (जरसः)

८९—इदुदन्त तथा ऋदन्त धातु भिन्न शब्दों में शस् विभक्ति के 'अ' का लोप होता है, और शस् के पूर्व स्वर को दीर्घ होता है ॥

९०—ऋ, औ को छोड़ सब स्वरान्त स्त्री लिंग शब्दों की के, 'ए' ङसि ङस् 'अ' ए, और 'ङि' औ, आम् में पलट जाते हैं परन्तु धातु निष्पन्न इदुदन्त में विकल्प होता है।

5498

मति (Intellect)

विभ०	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	मतिः	मती	मतयः
२या,	मतिम्	मती	मतीः
३या,	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
४र्थी,	मत्यै (मतये)	मतिभ्याम्,	मतिभ्यः
५मी,	मत्याः (मतेः)	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
६ष्ठी	मत्याः (मते)	मत्योः	मतीनाम्
७मी,	मत्यां (मतौ)	मत्योः	मतिषु
सं०	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

नदी (River)

विभ०	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	नदीः	नद्यौ	नद्यः
२या,	नदीम्	नद्यौ	नदीः
३या,	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
४र्थी,	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः

५मी,	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
६ष्ठी,	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
७मी,	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सं०	हे नदि !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

१०—धातु निष्पन्न शब्द तथा स्त्री शब्द को छोड़ सब ईकारान्त स्त्री लिंग नदीवत् समझ लो।

११—' स्त्री ' शब्द की ई को स्वरादि विभक्तियों में 'इय' होता है, परन्तु अम् शस् में विकल्प।

स्त्री (Women)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
२या,	स्त्रियम् (स्त्रीम्)	स्त्रियौः	स्त्रियः (स्त्रीः)
३या,	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रिभिः
४र्थी,	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
५मी,	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
६ष्ठी,	स्त्रिया	स्त्रीयोः	स्त्रीणाम्
७मी,	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सं०	हे स्त्रि !	हे स्त्रियौ !	हे स्त्रियः !

१२—धातु निष्पन्न इकारान्त शब्द पुम्वत ही होते हैं परन्तु 'आम्' विभक्ति में इय् उव् होने पर ' आम् ' को ' नाम् ' विकल्प से होता है।

धी (Understanding)

विभ०	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	धीः	धियौ	धियः
२या,	धियम्	धियौ	धियः

३या,	धिया	धीभ्याम्	धीभिः
४र्थी,	धिये (धियै)	धीभ्याम्	धीभ्यः
५मी,	धियः (धियाः)	धीभ्याम्	धीभ्यः
६ष्ठी,	धियः (धियाः)	धियोः	धियाम् (धीनाम्)
७मी,	धियि (धियाम्)	धियोः	धीषु
सं०	हे धी !	हे धियौ !	हे धियः !

ह्री, श्री, भी आदि सब धातुओं के रूप इसी प्रकार होवे हैं ॥

धेनु (Cow)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	धेनुः	धेनू	धेनवः
२या,	धेनुम्	धेनू	धेनूः
३या,	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
४र्थी,	धेन्वै (धेनवे)	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
५मी,	धेन्वाः (धेनोः)	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
६ष्ठी,	धेन्वाः (धेनोः)	धेन्वोः	धेनूनाम्
७मी,	धेन्वाम् (धेनौ)	धेन्वोः	धेनुषु
सं०	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः !

वधू (Wife woman)

विभ०	एक	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	वधूः	वध्वौ	वध्वः
२या,	वधूम्	वध्वौ	वधूः
३या,	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
४र्थी,	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
५मी,	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः

६ष्ठी,	बध्वाः	बध्वोः	बधूनाम्
७मी,	बध्वाम्	बध्वो	बधूषु
सं०	हे बधु !	हे बध्वौ !	हे बध्वः !

धातु निष्पन्न शब्दों को छोड़, सब ऊकारान्त स्त्री लिङ्ग बधूवत् होते हैं ॥

धातु निष्पन्न भू (The Earth)

विभ०	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	भूः	भुवौ	भूवः
२या,	भुवम्	भुवौ	भूभिः
३या,	भुवा	भूभ्याम्	भूभ्यः
४र्थी,	भुवै (भुवे)	भूभ्याम्	भूभ्यः
५मी,	भुवः	भुवोः	भुवाम् (भूनाम्)
६ष्ठी,	भुवि	भुवोः	भूषु
७मी,	भुवि	भुवोः	भूषु

सब धातु निष्पन्न दीर्घ ऊकारान्त शब्द भूवत् होते हैं ॥

परन्तु 'सुभ्रू' शब्द के सम्बोधन में 'हे सुभ्रू' ऐसा ही होता है ॥

ऋकारान्त स्त्री लिंग

वह केवल पांच हैं मातृ, दुहितृ, ननान्दृ, यातृ और स्वसृ, पूर्व चारों के मातृवत् और स्वसृ के धातृवत् रूप होते हैं, केवल शस् विभक्ति में 'ऋ' 'ॠ' हो कर अन्त में (ः) होता है । यथा स्वसृ आदि

नौ (Ship or Boat)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	नौः	नावौ	नावः
२या,	नावम्	नावौ	नावः
३या,	नावा	नौभ्याम्	नौभिः

४र्थी,	नावे	नौभ्याम्	नौभ्यः
५मी,	नावः	नौभ्याम्	नौभ्यः
६ष्ठी,	नावः	नावोः	नावाम्
७मी,	नावि	नावोः	नौषु
सं०	हे नौ !	हे नावौ !	हे नावः

इति ।

—:-०-:—

अथ अजन्त क्लीवलिंग प्रकरणम्

६३—आकारान्त नपुंसक शब्दों की सम्बोधन भिन्न सि, और आम् को 'म्' होता है ।

६४—औ के स्थान में 'ई' जस्, शस्, को 'नि' होकर पूर्व को दीर्घ होता है ॥

फल (Fruit)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	फलं	फले	फलानि
२या,	फलम्	फले	फलानि

शेष पूर्ववत्

ज्ञान, धन, पत्र, मूल वन आदि क्लीव लिंग १मा, २या, में फलवत् और शेष विभक्तियें देव की न्याई होती हैं । दीर्घ आकारान्त क्लीव भी ऐसे होते हैं यथा—श्रीपा ।

६५—इदुदन्त और ऋकारान्त क्लीव लिंग शब्दों के उत्तर 'सि' 'अम्' विभक्ति का लोप होता है ॥

६६—स्वरादि विभक्ति में आम् को छोड़ उक्त शब्दों के आगे लगता है, और आम् में पुलिंग सूत्रों से सिद्ध होगा ॥

६७—उक्त शब्दों के सम्बोधन के एक वचन में विकल्प से गुण होता है ॥

वारि (Water)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	वारि	वारिणी	वारीणि
२या,	वारि	वारिणी	वारीणि
३या,	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
४र्थी,	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
५मी,	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
६ष्ठी,	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
७मी,	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सं०	हे वारे (वारि) प्रथमावत ॥		

इकारान्त क्लीव सब ऐसे ही होते हैं केवल अस्थि, दधि, और सक्थि शब्दों में कुछ भेद होता है:—(३या, १ व०) दध्ना, (४र्थी, १ व०) दध्ने (५मी, ६ष्टी) के एक वचन से दध्नः [७मी १व० दधीन दध्नि ऐसे ही अस्थि और अक्षि आदि ॥

५८—तृतीयादि स्वरादि विभक्तियों में इ, उ, और ऋकारान्त विशेषण क्लीव शब्द, पुलिंगवत् भी होते हैं ॥

अनादि (Without any biginning)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	अनादि	अनादिनी	अनादीनि
२या,	अनादि	अनादिनी	अनादीनि
३या,	अनादिना	अनादिभ्याम्	अनादिभिः
४र्थी,	अनादिने (दये)	अनादिभ्याम्	अनादिभ्यः
५मी,	अनादिनः (देः)	अनादिभ्याम्	अनादिभ्यः
६ष्ठी,	अनादिनः (दे)	अनादिनोः (द्योः)	अनादीनाम्

७मी,	अनादिनि ! (दि) !	अनादिनोः (द्नोः)	अनादिषु
सं०	हे अनादे (दि) ! शेष प्रथमावत्		

मधु (Honey)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	मधु	मधुनी	मधूनि
२या,	मधु	मधुनी	मधूनि
३या,	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
४र्थी,	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
५मी,	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
६ष्ठी,	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
७मी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सं०	हे मधो ! (मधु) शेष प्रथमावत्		

अम्बु मृदु लघु आदि नपुंसक ऐसे ही जानो ॥

धातृ (Creator)

वि०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	धातृ	धातृणी	धातॄणि
२या,	धातृ	धातृणी	धातॄणि
३या,	धातृणा (धात्रा)	धातृभ्याम्	धातृभिः
४र्थी,	धातृणेः (धात्रे)	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
५मी,	धातृणः (धातुः)	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
६ष्ठी,	धातृणः (धातुः)	धातृणोः (धात्रोः)	धातॄणाम्
७मी,	धातरि (धातृणि)	धातृणोः (धात्रोः	धातृषु
सं०	हे धातृ ! (धातः)	हे धातृणी	हे धातॄणि

हलंत पुल्लिंग प्रकरणम् ॥

हलन्त शब्दों के परे "सि" का लोप होता है ॥

चकारांत, जकारांत और दिश् दृश् उष्णिह् शब्दों को व्यञ्जनादि विभक्ति में अन्त्य वर्ण के "क्" को ग् होता है, परन्तु जिनके अन्त में राज् और भ्राज् आता है उनके "ज्" को ट् होजाता है ॥

जलमुच् (Cloud)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	जलमुक् (ग)	जलमुचौ	जलमुचः
२या,	जलमुचम्	जलमुचौ	जलमुचः
३या,	जलमुचा	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भिः
४र्थी,	जलमुचे	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्यः
५मी,	जलमुचः	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्यः
६ष्ठी,	जलमुचः	जलमुचोः	जलमुचाम्
७मी,	जलमुचि	जलमुचोः	जलमुक्षु

प्राञ्च् प्रत्यच् तिर्यञ्च और उदच् को छोड़ और सारे चकारान्त शब्द इसी प्रकार होते हैं ॥

अञ्च विभक्तयन्त होने से "च" ङ् में बदलता है और शसन्त "ञ्च" च होता है ॥

प्राच् (Turned towords the front, Eastern)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	प्राङ्	प्राञ्चौ	प्राञ्चः
२या,	प्राञ्चम्	प्राञ्चौ	प्राचः

शेष "जलमुच" वत् । स्त्रीलिङ्ग "प्राची" नदीवत् होता ॥

पुलिङ्ग की औ, जस अम् और क्लीव की अम, जस्, और शस् विभक्तियों को छोड़ ई प्रत्यय और स्वरादि विभक्ति से पहिले प्रत्यच और उदच् शब्दों के अच् को "ई" होता है ॥

प्रत्यच् (Pehind or western)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	प्रत्यङ्	प्रत्यञ्चौ	प्रत्यञ्चः
२या,	प्रत्यञ्चम्	प्रत्यञ्चौ	प्रतीचः
३या,	प्रतीचा	प्रत्यग्भ्याम्	प्रत्यग्भिः
४र्थी,	प्रतीचे	प्रत्यग्भ्याम्	प्रत्यग्भ्यः
५मी,	प्रतीचः	प्रत्यग्भ्याम्	प्रत्यग्भ्यः
६ष्ठी,	प्रतीचः	प्रतीचोः	प्रतीचाम्
७मी,	प्रतीचि	प्रतीचोः	प्रत्यक्षु

उदच् (Upwards, or Northern)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	उदङ्	उदञ्चौ	उदञ्चः
२या,	उदञ्चम्	उदञ्चौ	उदीचः
३या,	उदीचा	उदग्भ्याम्	उदग्भिः
४र्थी,	उदीचे	उदग्भ्याम्	उदग्भ्यः
५मी	उदीचः	उदग्भ्याम्	उदग्भ्यः
६ष्ठी,	उदीचः	उदीचोः	उदीचाम्
७मी,	उदीचि	उदीचोः	उदक्षु

स्त्री० प्रतीची उदीची नदीवत् ।

"औ" "जस्" "अम्" विभक्ति को छोड़, स्वरादि विभक्तियों में और क्लीव को "औ" विभक्ति में भी तिर्यंच् का तिरश्च बन जाता है ॥

तिर्यच् (Ablique)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	तिर्यङ्	तिर्यञ्चौ	तिर्यञ्चः
२या,	तिर्यञ्चम्	तिर्यञ्चौ	तिरश्च

३या,	तिरश्चा	तिर्यग्भ्याम्	तिर्यग्भिः
४र्थी,	तिरश्चे	तिर्यग्भ्याम्	तिर्यग्भ्यः
५मी,	तिरश्चः	तिर्यग्भ्याम्	तिर्यग्भ्यः
६ष्ठी,	तिरश्चः	तिरश्चोः	तिरश्चाम्
७मी,	तिरश्चि	तिरश्चोः	तिर्यक्षु
सं०	हे तिर्यङ्	हे तिर्यञ्चौ	हे तिर्यञ्चः

स्त्री लिङ्ग तिरश्ची नदीवत्

छकारान्त शब्दों की १मा, के एकवचन में छ को ट् ड् होते हैं हलादि विभक्ति में ड् होता है और स्वरादि विभक्ति में विकल्प से श् भी होता है ॥

तत्वप्राछ्

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	तत्वप्राट् (ड्)	तत्वप्राछौ (शौ)	तत्वप्राछः (शः)
२या,	तत्वप्राछम् (शम्)	तत्वप्राछौ (शौ)	तत्वप्राछः (शः)
३या,	तत्वप्राछा (शा)	तत्वप्राड्भ्याम्	तत्वाप्राड्भिः
४र्थी	तत्वप्राछे (शे)	तत्वप्राड्भ्याम्	तत्वप्राड्भ्यः
५मी,	तत्वप्राछः (शः)	तत्वप्राड्भ्याम्	तत्वप्राड्भ्यः
६ष्ठी,	तत्वप्राछः (शः)	तत्वप्राछोः (शोः)	तत्वप्राछाम् (शां)
७मी,	तत्वप्राछि (शि)	तत्वप्राछोः (शोः)	तत्वप्राट्सु (प्राटत्सु)
सं०	हे तत्वप्राट् (ड्)	शेष प्रथमावत् ।	

स्त्रीलिंग तत्वप्राछी नदीवत्

वणिज् (Merchant)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	वणिक्,(ग्)	वणिजौ	वणिजः
२या,	वणिजम्	वणिजौ	वणिजः

३या,	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
४र्थी,	वणिजे	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
५मी,	वणिजः	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
६ष्ठी,	वणिजः	वणिजोः	वणिजाम्
७मी,	वणिजि	वणिजोः	वणिक्षु
सं०	हे वणिक् (ग्) शेषं प्रथमावत् ।		

विराज् (Ring)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	विराट्	विराजौ	विराजः
२या,	विराजम्	विराजौ	विराजः
३या,	विराजा	विराड्भ्याम्	विराड्भिः
४र्थी,	विराजे	विराड्भ्याम्	विराड्भ्यः
५मी,	विराजः	विराड्भ्याम्	विराड्भ्यः
६ष्ठी,	विराजः	विराजोः	विराजाम्
७मी,	विराजि	विराजोः	विराट्सु (विराट्त्सु)

सम्बोधन प्रथमावत् ।

देवराज्, परिव्राज्, सम्राज्, विश्वसृज् आदि शब्दों को छोड़ सारे जकारान्त शब्द ऐसे ही होते हैं ।

उक्त शब्दों को 'सि' विभक्ति में ट् ड् और हलादि में ड् और सुप् विभक्ति में ट् से परे त् भी होता है ॥

सुगण् (Accountant)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	सुग (गा) ण्	सुग (गा) णौ	सुग (गा) णः
२या,	सुग (गा) णम्	सुग (गा) णौ	सुग (गा) णः

३या,	सुग (गा) णा	सुग (गा) ग्भ्याम्	सुग (गा) ग्भिः

इत्यादि । णकारान्त सब इसी भान्ति होते हैं ॥

भूभृत् (mountain)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	भूभृत् (द)	भूभृतौ	भूभृतः
२या,	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
३या,	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
४र्थी,	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
५मी,	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
६ष्ठी,	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
७मी,	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु

अत् स्यत् वत् मत् तवत् प्रत्यान्त और महत् भिन्न सारे तकारान्त शब्दों के रूप भूभृत की न्याई होते हैं। और इनके भी सि से औट् तक ५ विभक्तियों में रूप भेद है। आगे भूभृत वत् जानलो ॥

धावत् (Runing)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	धावन्	धावन्तौ	धावन्तः
२या,	धावन्तम्	धावन्तौ	धावतः
३या,	धावता	धावद्भ्याम्	धावद्भिः
४र्थी,	धावते	धावद्भ्याम्	धावद्भ्यः
५मी,	धावतः	धावद्भ्याम्	धावद्भ्यः
६ष्ठी,	धावतः	धावतोः	धावताम्
७मी,	धावति	धावतोः	धावत्सु
स०	प्रथमावत् ।		

स्यत् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप भी अत् प्रत्ययान्त की न्याई होते हैं, अभ्यस्त धातु और जक्षत्, दरिद्रत्, शासत्, चकासत्, दीध्यत्, वेव्यत् भिन्न सारे अत् और स्यत् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप धावत् वत् होते हैं।

वत् मत् और तवत् प्रत्ययान्त शब्द सब अत् प्रत्ययान्त धावत् की न्याई होते हैं केवल सम्बोधन भिन्न प्रथमा के एकवचन में 'न' के पूर्व "अ" को दीर्घ होता है। यथा श्रीमत् का श्रीमान्, ज्ञानवत् का ज्ञानवान्, श्रुतवत् का श्रुतवान् आदि।

महत् शब्द के "न" के पूर्व "अ" को १म, पांच वचनों में दीर्घ होजाता है। यथा महान् महान्तौ महान्तः महान्तं महान्तौ महतः हे महन्! शेष भूभृत् की न्याई।

दान्त शब्दः।

दान्त पुलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग शब्द भी भूभृत् वत् ही होते हैं, केवल १मा, के एकवचन और ७मी. के बहुवचन में 'द्' 'त्' में पलट जाता है॥

उद्भिद् (Vegetable)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	उद्भिद् (त्)	उद्भिदौ	उद्भिदः
२या,	उद्भिदम्	उद्भिदौ	उद्भिदः
३या,	उद्भिदा	उद्भिद्भ्याम्	उद्भिद्भिः
४र्थी,	उद्भिदे	उद्भिद्भ्याम्	उद्भिद्भ्यः
५मी,	उद्भिदः	उद्भिद्भ्याम्	उद्भिद्भ्यः
६ष्टी,	उद्भिदः	उद्भिदोः	उद्भिदाम्
७मी,	उद्भिदि	उद्भिदोः	उद्भित्सु
सं०	हे उद्भिद् शेष प्रथमावत्		

सुहृद्, आपद्, विपद्, सम्पद्, दृषद्, शरद् आदिक सारे पुलिंग और स्त्रीलिंग शब्द उद्भिद् की न्याई ही होते हैं।

दान्तः शब्दाः ।

यह तीन प्रकार के होते हैं । इन् अन् और हन् भागान्त ।

इन्नन्ताः ।

हलादि विभक्तियों में सम्बोधन को छोड़ कर नान्त शब्दों के 'न' का लोप होता है ।

मालिन् (Agardener)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	माली	मालिनौ	मालिनः
२या,	मालिनम्	मालिनौ	मालिनः
३या,	मालिना	मालिभ्याम्	मालिभिः
४र्थी,	मालिने	मालिभ्याम्	मालिभ्यः
५मी,	मालिनः	मालिभ्याम्	मालिभ्यः
६ष्टी,	मालिनः	मालिनोः	मालिनाम्
७मी,	मालिनि	मालिनोः	मालिषु
सं०	हे मालिन्	हे मालिनौ !	हे मालिनः

(१) पथिन् मथिन् ऋभुक्षिन् को छोड़ सारे इन्, भागान्त ऐसे ही होते हैं ॥

(२) १म, पांच विभक्तियों में इन को अन और 'थ' को 'न्थ' होता है, पर सि में अन् का 'न' स् में पलट जाता है ॥

(३) जस् औ को छोड़ और स्वरादि विभक्तियों में 'इन' का लोप होता है, केवल पथ मथ् और ऋभुक्ष रह जाते हैं ।

पथिन् (Path)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा.	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः

२या,	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
३या,	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
४र्थी,	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
५मी,	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
६ष्ठी,	पथः	पथोः	पथाम्
७मी,	पथि	पथोः	पथिषु
सं०	हे पथिन् ।		

(१) पहिले पांच वचनों में अन्नन्त शब्दों को दीर्घ होता है ॥

(२) शसादि स्वरान्त विभक्ति तथा ङीप् परे होने से अन् के "अ" का लोप होता है, परन्तु "ङि" और नपुंसक की "औ" विभक्ति में विकल्प से होता है ॥

राजन् (King)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	राजा	राजानौ	राजानः
२या,	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
३या,	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
४र्थी,	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
५मी,	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
६ष्ठी,	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
७मी,	राज्ञि (राजनि)	राज्ञोः	राजसु
सं०	हे राजन् ! शेष प्रथमावत् ।		

स्त्रीलिंग राज्ञी शब्द नदीवत् ।

आत्मन् (Soul Selt)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
२या,	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः

३या,	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
४र्थी,	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
५मी,	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
६ष्ठी,	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
७मी,	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सं०	हे आत्मन्! शेष प्रथमावत्।		

श्वन्, युवन, मघवन् और हन् भागान्त शब्दों को छोड़ सब अन् भागान्त ऐसे ही होते हैं।

शसादि स्वरादि विभक्तियों में श्वन्, युवन् और मघवन्* शब्द के 'व' को 'उ' होजाता है॥

श्वन् (Dog)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	श्वा	श्वानौ	श्वानः
२या,	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
३या,	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
४र्थी,	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
५मी,	शुनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
६ष्ठी	शुनः	शुनोः	शुनाम्
७मी,	शुनि	शुनोः	श्वसु

युवन् (Youngman)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	युवा	युवानौ	युवानः
२या,	युवानम्	युवानौ	यूनः

*मघवन् को विकल्प से मघवत् भी होता है और उच्चारण मघवान् मघवन्तौ, मघवन्तः, मघवन्तं मघवन्तौ मघवतः, इस भांति॥

३या,	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
४र्थी,	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
५मी,	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
६ष्ठी,	यूनः	यूनोः	यूनाम्
७मी,	यूनि	यूनोः	युवसु
सं०	हे युवन् !		

मघवन् (Indra)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	मघवा	मघवानौ	मघवानः
२या,	मघवानम्	मघवानौ	मघोनः
३या,	मघोना	मघवद्भ्याम्	मघवद्भिः
४र्थी,	मघोने	मघवद्भ्याम्	मघवद्भ्यः
५मी,	मघोनः	मघवद्भ्याम्	मघवद्भ्यः
६ष्ठी,	मघोनः	मघोनोः	मघोनाम्
७मी,	मघोनि	मघोनोः	मघवत्सु

स्त्रीलिंग में श्वन् को शुनी, युवन् को यूनी—युवति, मघवन् को मघोनी—मघवती रूप नदीवत् होते हैं ॥

इन् भागान्त शब्दाः ।

(१) पूषन् और अर्य्यमन् को छोड़ पहिले पांच वचनों में दीर्घ होता है 'ह' को 'घ' होजाता है, जहां 'अ' लोप, हुआ है वहां 'न' को 'ण' होजाता है और थ् युक्त होता नहीं।

वृत्रहन् (Indra)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	वृत्रहा	वृत्रहणौ	वृत्रहणः
२ना,	वृत्रहनम्	वृत्रहणौ	वृत्रघ्नः

३या,	वृत्रघ्ना	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभिः
४र्थी,	वृत्रघ्ने	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः
५मी,	वृत्रघ्नः	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः
६ष्ठी,	वृत्रघ्नः	वृत्रघ्नोः	वृत्रघ्नाम्
७मी,	वृत्रघ्नि (हणि)	वृत्रघ्नोः	वृत्रहसु

पूषण (the Sun)

१मा, के एकवचन और भादि विभक्तियों में "प" को "व" होजाता है।

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	गुप् (व्)	गुपौ	गुपः
२या,	गुपम्	गुपौ	गुपः
३या,	गुपा	गुव्भ्याम्	गुव्भिः
४र्थी,	गुपे	गुव्भ्याम्	गुव्भ्यः
५मी,	गुपः	गुंभ्याम्	गुव्भ्याम्
६ष्ठी,	गुपः	गुपोः	गुपाम्
७मी,	गुपि	गुपोः	गुप्सु

मकारान्त प्रशाम् शब्दः ।

१मा, के एकवचन और भादि विभक्तियों में "म" "न" में पलट जाता है ॥

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	प्रशान्	प्रशामौ	प्रशामः
२या,	प्रशामम्	प्रशामौ	प्रशामः
३या,	प्रशामा	प्रशान्भ्याम्	प्रशान्भिः
४र्थी,	प्रशामे	प्रशान्भ्याम्	प्रशान्भ्यः

इत्यादि ।

लान्त गमल् शब्दः ।

गमल्	गमलौ	गमलः	गमलु

वान्त सुदिव् (Nice-day)

१ मा, के एकवचन में 'व' को औ और भादि विभक्ति में 'व' को उ होजाता है ॥

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा,	सुद्यौः	सुदिवौ	सुदिवः
२ या,	सुदिवम्	सुदिवौ	सुदिवः
३ या,	सुदिवा	सुद्युभ्याम्	सुद्युभिः
४ र्थी,	सुदिवे	सुद्युभ्याम्	सुद्युभ्यः
५ मी,	सुदिवः	सुद्युभ्याम्	सुद्युभ्यः
६ ष्ठी,	सुदिवः	सुदिवोः	सुदिवाम्
७ मी,	सुदिवि	सुदिवोः	सुद्युषु

शकारान्ताः शब्दाः ।

पदान्त में वा हलादि विभक्ति परे होने से छ्, ष् श् और ह को ट् ड् होता ॥

विश् (Vaisya)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	विट् (ड्)	विशौ	विशः
२या,	विशम्	विशौ	विशः
३या,	विशा	विड्भ्याम्	विड्भिः
४र्थी,	विशे	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
५मी,	विशः	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
६ष्ठी,	विशः	विशोः	विशाम्

७मी,	विशि	विशोः	विट्सु (विट्त्सु)
सं०	हे विट् (ड्)	हे विशौ	हे विशः

क्विन् प्रत्ययान्त शब्दों को छोड़ सारे शांत शब्द ऐसे ही जानो इनके 'श' को ट् नहीं होता क् ग् होते हैं ।

तादृश् (Such Like)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	तादृक् (ग्)	तादृशौ	तादृशः
२या,	तादृशम्	तादृशौ	तादृशः
३या,	तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भिः
४र्थी,	तादृशे	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
५मी,	तादृशः	तादृग्भ्याम	तादृग्भ्यः
६ष्ठी,	तादृशः	तादृशोः	तादृशाम्
७मी,	तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु
सं०	हे तादृक (ग्)	हे तादृशौ	हे तादृशः

त्विन् प्रत्ययान्त शब्द ऐसे ही होते हैं ॥

द्विष् (An enemy)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	द्विट् (ड्)	द्विषौ	द्विषः
२या,	द्विषम्	द्विषौ	द्विषः
३या,	द्विषा	द्विड्भ्याम्	द्विड्भिः
४र्थी,	द्विषे	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्यः
५मी,	द्विषः	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्यः
६ष्ठी,	द्विषः	द्विषोः	द्विशाम्
७मी,	द्विषि	द्विषोः	द्विट्सु
सं०	हे द्विट्! (ड्)	हे द्विषौ !	हे द्विषः

प्रायः सब षकारान्त शब्दों के रूप इसी प्रकार के होते हैं ॥

१मा के एकवचन में अस् भागान्त शब्दों के 'अ' को 'आ' होता है हलादि विभक्ति परे होने से वा पदान्तस्थ र् स् को विसर्ग होता है।

वेधस् (Creator)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	वेधाः	वेधसौ	वेधसः
२या,	वेधसम्	वेधसौ	वेधसः
३या,	वेधसा	वेधोभ्याम्	वेधोभिः
४र्थी,	वेधसे	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
५मी,	वेधसः	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
६ष्ठी,	वेधसः	वेधसोः	वेधसाम्
७मी,	वेधसि	वेधसोः	वेधस्सु
सं०	हे वेधः !	हे वेधसौ !	हे वेधसः

उशनस्, दोस्, विद्वस्, अग्निवस् लघीयस् आशिस् और डुमस् को छोड़, सब अकारान्त शब्दों के रूप ऐसे ही जानो ॥

उशनस् के सब रूप वेधस् वत् होते हैं, केवल सम्बोधन की १मा के एकवचन में भेद है। १मा, एक० उशनः, सं० के एकवचन में उशन ! उशनस्—उशनः।

शसादि विभक्तियों में दोस् को दोषन् होजाता है।

पहिले पांच वचनों में 'वस्' और 'ईयस् प्रत्ययान्त शब्दों के अन्त्य स्वर के पहिले अन् होता है ॥

'सि' विभक्ति के लोप होने पर वस् और ईयस् प्रत्ययान्त शब्द के अन्त्य स् का लोप होजाता है ॥

पुलिंग की औ जस् और अम् नपुंसक के अम् जस् और शस् को छोड़ के स्वरादि विभक्ति और ईयस् प्रत्यय में वह के अथवा व के स्थान में 'उ' होता है

पदान्त वा हलादि विभक्ति में वस् और ईयस् प्रत्ययान्त शब्दों के 'स्' के स्थान में 'द्' होता है ॥

सम्बोधन के एकवचन में वसु और ईयस् प्रत्ययान्त शब्दों के अन्त्य स्वर परे होने से 'स्' को 'न्' होता है ॥

विद्वस् (Learned man)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
२या,	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
३या,	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
४र्थी,	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
५मी,	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
६ष्ठी,	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
७मी,	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सं०	हे विद्वन् !	हे विद्वांसौ !	हे विद्वांसः

स्त्रीलिंग विदुषी शब्द नदीवत् ।

जग्मिवस् (Having Gone)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	जग्मिवान्	जग्मिवांसौ	जग्मिवांसः
२या,	जग्मिवांसम्	जग्मिवांसौ	जग्मुषः
३या,	जग्मुषा	जग्मिवद्भ्याम्	जग्मिवद्भिः
४र्थी,	जग्मुषे	जग्मिवद्भ्याम्	जग्मिवद्भ्यः
५मी,	जग्मुषः	जग्मिवद्भ्याम्	जग्मिवद्भ्यः
६ष्ठी,	जग्मुषः	जग्मुषोः	जग्मुषाम्
७मी,	जग्मुषि	जग्मुषोः	जग्मिवत्सु
सं०	हे जग्मिवन् !	हे जग्मिवांसौ	हे जग्मिवांसः

स्त्री जग्मुषी नदीवत्

जग्मुषी

मधुलिह् (A bee)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	मधुलिट् (ड्)	मधुलिहौ	मधुलिहः
२या,	मधुलिहम्	मधुलिहौ	मधुलिहः
३या,	मधुलिहा	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भिः
४र्थी,	मधुलिहे	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
५मी,	मधुलिहः	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
६ष्ठी,	मधुलिहः	मधुलिहोः	मधुलिहाम्
७मी	मधुलिहि	मधुलिहोः	मधुलिट्सु[ट्त्सु]
सं०	हे मधुलिट् [ड्] शेष प्रथमावत् !		

१—अनडुह् आदि कई एक शब्दों को छोड़ अन्य हान्त शब्द ऐसे ही होते हैं ॥

स्यादि पांच वचनों में उक्त शब्द के उपधा स्वर को "आ" आगम होता है, परन्तु सम्बोधन में "आ" होकर "ह्" को "न्" होता है, हलादि विभक्ति में उक्त शब्द और उपानह शब्द का ह् "द्" में पलटता है ॥

अनडुह् (An ox)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः
२या,	अनड्वाहम्	अनड्वाहौ	अनडुहः
३या,	अनडुहा	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भिः
४र्थी,	अनडुहे	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
५मी,	अनडुहः	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः

६ष्ठी,	अनडुहः	अनडुहो:	अनडुहाम्
७मी,	अनडुहि	अनडुहोः	अनड्डुत्सु
सं०	हे अनड्वन् ? शेष प्रथमावत् !		

स्त्री०, अनडवाहि—अनडुही नदीवत् ।

उपानह् (Shoes)

१मा, उपानत् [ड्] उपानद्भ्याम् इत्यादि । उपानत्सु ।

हजादि विभक्तियों में दादि धातु के "ह्" और उष्णिह् के 'ह' को "क्" "ग्" होते हैं और "द्" "ध्" में पलट जाता है ॥

गोदुह् (Cowhefb)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	गोधुक् [ग्]	गोदुहौ	गोदुहः
२या,	गोदुहम्	गोदुहौ	गोदुहः
३या,	गोदुहा	गोधुग्भ्याम्	गोधुग्भिः
४र्थी,	गोदुहे	गोधुग्भ्याम्	गोधुग्भ्यः
५मी,	गोदुहः	गोधुग्भ्याम्	गोधुग्भ्यः
६ष्ठी,	गोदुहः	गोदुहोः	गोदुहाम्
७मी,	गोदुहि	गोदुहोः	गोधुक्षु
सं०	हे गोधुक् ! [ग्] शेष प्रथमावत् !		

उष्णिह् (Name of Letre)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	उष्णिक् [ग्]	उष्णिहौ	उष्णिहः
२या,	उष्णिहम्	उष्णिहौ	उष्णिहः
३या,	उष्णिहा	उष्णिग्भ्याम्	उष्णिग्भिः

४र्थी,	उष्णिहे	उष्णिग्भ्याम्	उष्णिग्भ्यः
५मी,	उष्णिहः	उष्णिग्भ्याम्	उष्णिग्भ्यः
६ष्ठी,	उष्णिहः	उष्णिहोः	उष्णिहाम्
७मी,	उष्णिहि	उष्णिहोः	उष्णिक्षु

सम्बोधन प्रथमावत् !

हलन्त स्त्रीलिंग प्रकरणम् ।

चान्त, प्रायः जलमुच् वत् और हान्त प्रायः अनडुह् वत् होते हैं "सि" "औ" इत्यादि विभक्तियों में धकारान्त भकारान्त शब्दों के ध् भ् यथाक्रम "त्" "प्" में बदलते हैं ॥

वीरुध (Creeper)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	वीरुत् (द्)	वीरुधौ	वीरुधः
२या,	वीरुधम्	वीरुधौ	वीरुधः
३या,	वीरुधा	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भिः
४र्थी,	वीरुधे	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भ्यः
५मी,	वीरुधः	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भ्यः
६ष्ठी,	वीरुधः	वीरुधोः	वीरुधाम्
७मी,	वीरुधि	वीरुधोः	वीरुत्सु

संबोधन प्रथमावत् !

ककुभ् (Direction, Quarter)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	ककुप् [ब्]	ककुभौ	ककुभः
२या,	ककुभम्	ककुभौ	ककुभः
३या,	ककुभा	ककुब्भ्याम्	ककुब्भिः

४र्थी,	ककुभे	ककुब्भ्याम	ककुब्भ्यः
५मी,	ककुभाम्	ककुब्भ्यः	ककुब्भ्यः
६ष्ठी,	ककुभः	ककुभो	ककुभाम
७मी,	ककुभि	ककुभोः	ककुप्सु

धामन् मामन् आदि स्त्रीलिंगी शब्द राजन् की भान्ति होते हैं। अप शब्द बहुवचनान्त है जिसमें "आ" को 'अ' और भादि विभक्तियों में प् को ब् होजाता है॥

१ आपः २ अपः ३ अपभिः ४ अप्भ्यः ५ अप्भ्यः ६ अपाम ७ अप्सु। रान्तों में 'इर' 'उर' भागान्त शब्दों की 'सि' और हलादि विभक्तियों में दीर्घ होता है॥

गिर् (Speech)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	गीः	गिरौः	गिरः
२या,	गिरम	गिरौ	गिरः
३या,	गिरा	गीर्भ्याम	गीर्भिः
४र्थी,	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
५मी,	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
६ष्ठी,	गिरः	गिरोः	गिराम्
७मी,	गिरि	गिरोः	गीर्षु
सं०	प्रथमावत्!		

पुर (City)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	पूः	पुरौ	पुरः
२या,	पुरम	पुरौ	पुरः
३या,	पुरा	पूर्भ्याम	पूर्भि

४र्थी,	पुरे	पूर्भ्याम	पूर्भ्यः
५मी,	पुरः	पूर्भ्याम	पूर्भ्यः
६ष्ठी,	पुरः	पुरोः	पुराम
७मी,	पुरि	पुरोः	पूर्षु:
सं०	प्रथमावत् !		

शान्ताः स्त्रीलिंगा पुम्वत् बोध्याः

दिश् (Side)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	दिक् (ग्)	दिशौ	दिशः
२या,	दिशम्	दिशौ	दिशः
३या,	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
४र्थी,	दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
५मी,	दिशः	दिग्भ्याम	दिग्भ्य;
६ष्ठी,	दिशः	दिशोः	दिशाम
७मी,	दिशि	दिशोः	दिक्षु

षकारान्ताः स्त्रीलिंगाः ।

त्विष्, द्विष्, रुष् और विप्रुष् आदि षान्त शब्दों के रूप "द्विष्" की भान्ति होते हैं ॥

आशिस् को छोड़ अप्सरस् आदि सान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप दिश् की भान्ति होते हैं ॥

आशिस् (Blessing)

सि और हलादि विभक्तियों में आशिस् और सुजुस् का ह्रस्व स्वर दीर्घ होजाता है ॥

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	आशीः	आशिषौ	आशिषः
२या,	आशिषम्	आशिषौ	आशिषः
३या,	आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः
४र्थी,	आशिषे	आशीर्भ्याम	आशीर्भ्यः
५मी,	आशिषः	आशीर्भ्याम	आशीर्भ्यः
६ष्ठी,	आशिषः	आशिषोः	आशिषाम्
७मी,	आशिषः	आशिषोः	आशीषु
सं०	हे आशीः	हे आशिषौ	हे आशिष

हलन्त क्लीवलिंग प्रकरणम् ।

[१] हलन्त-क्लीव-लिंग-शब्दों के रूप पुलिंगवत् होते हैं, केवल १मा, २या, में रूप के भेद हैं, इसलिये १मा, और २या, के रूप दिखाये जाते हैं जहां नहीं मिलते वहां सब दिखाये जायगे ।

[२] जस् शस् बिभक्ति में नकारान्त को छोड़ सब हलन्त क्लीव लिंग शब्दों के पिछले स्वर से परे न् होता है ॥

प्राच् (Eastern)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	प्राक् (ग्)	प्राची	प्राञ्चि
२या,	प्राक् [ग्]	प्राची	प्राञ्चि
सं०	हे प्राक् [ग्]	हे प्राची	हे प्राञ्चि

प्रत्यच् (Western)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	प्रत्यक् [ग]	प्रतीची	प्रत्यञ्चि

२या,	प्रत्यक् [ग्]	प्रतीची	प्रत्यञ्चि
संबोधन	हे प्रत्यक् [ग्]	हे प्रतीचि	प्रत्यञ्चि

उदच् (Northern)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	उदक् [ग्]	उदीची	उदञ्चि
२या,	उदक् [ग्]	उदीची	उदञ्चि
संबोधन	हे उदक् [ग्]	हे उदीची	हे उदञ्चि

तिर्यच् (Obipue)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	तिर्यक [ग्]	तिरश्ची	तिर्यञ्चि
२या,	तिर्यक् [ग्]	तिरश्ची	तिर्यञ्चि
संबोधन	हे तिर्यक् [ग]	हे तिरश्ची	हे तिर्यञ्चि

असृज् (Blood)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	असृक् [ग]	असृजी	असृञ्चि
२या,	असृक् [ग]	असृजी	असृञ्चि
संबोधन	वे असृक् [ग]	हे असृजी	हे असृञ्चि

स्यत् प्रत्यन्त शब्दों की औ विभक्ति में तथा भ्वादि, दिवादि, चुरादि, धातुओं से निर्मित शतृप्रत्ययान्त शब्दों का "तू" "न्त" हो जाता है ॥

तुदादि क्रयादि और आकारान्त अदादि धातुओं से निर्मित शतृ प्रत्ययान्त शब्द का तू विकल्प से "न्त" होजाता है।

अहन् को छोड़ नान्त क्लीब के पदान्त न् का विकल्प से लोप होता है ॥

भविष्यत् (Future)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	भविष्यत् [द]	भविष्यति	भविष्यन्ति
२या,	भविष्यत् [द]	भविष्यति	भविष्यन्ति
संबोधन	हे भविष्यति	हे भविष्यती	हे भविष्यन्ति

धावत् (Running)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	धावत् [द]	धावती	धावन्ति
२या,	धावत् [द]	धावती	धावन्ति
सं०	हे धावत् [द]	हे धावती	हे धावन्ति

इच्छत् (Longing for)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	इच्छत् [द]	इच्छती	इच्छन्ति
२या,	इच्छत् [द]	इच्छती	इच्छन्ति
सं०	हे इच्छत् [द]	हे इच्छती	हे इच्छन्ति

ददत् (Giving)

विभ०	एकवचन	द्वितचन	बहुवचन
१मा,	ददत् [द]	ददती	ददन्ति [ददति]
२या,	ददत् (द)	ददती	ददन्ति (ददति)
सं०	हे ददत् (द)	हे ददती	हे ददन्ति (ददति)

महत् (Grate)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	महत् (द)	महती	महांति (महति)

३या,	महत् [द]	महती	महान्ति	[महति]
सं०	हे महत् [द]	हे महती	हे महान्ति	[हे महति].

हृद् (Heart)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	हृत् [द]	हृदी	हृन्दि
२या,	हृत् (द)	हृदी,	हृन्दि
सं०	हे हृत [द]	हे हृदी	हे हृदि

कर्मन (Action)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
२या,	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
सं०	हे कर्म्म	हे कर्म्मणी	हे कर्म्माणि

नामन् (Name)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	नाम	नामनी (म्नी)	नामानि
२या,	नाम	नामनी (म्नी)	नामानि
सं०	हे नाम	हे नामनी (म्नी)	हे नामानि

पदान्त और हलादि विभक्तियों में अहन् का "न्" "(ः)" में पलटता है ॥

अहन् (Day)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	अहः	अह्नी [अहनी]	अहानि
२या,	अहः	अह्नी [अहनी]	अहानि
३या,	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
४र्थी,	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभिः
५मी,	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः

६ष्ठी,	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
७मी,	अह्नि (अहनि)	अह्नोः	[redacted]
सं०	हे अहः	हे अह्नी [अहनी]	हे अहानि

पयस (Milk or Water)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	पयः	पयसी	पयांसि
२या,	पयः	पयसी	पयांसि
३या,	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
४र्थी,	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
५मी,	पयसः	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
६ष्ठी,	पयसः	पयसोः	पयसाम्
७मी,	पयसि	पयसोः	पयस्सु
सं०	हे पयः	हे पयसी	हे पयांसि !

हविस् (Oblation)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	हविः	हविषी	हवींषि
२या,	हविः	हविषी	हवींषि
३या,	हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः
४र्थी,	हविषे	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
५मी,	हविषः	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
६ष्ठी,	हविषः	हविषोः	हविषाम्
७मी,	हविषि	हविषोः	हविःषुः
सं०	हे हविः	हे हविषी	हे हवींषि

धनुष् (Bow)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	धनुः	धनुषी	धनूंषि

२या,	धनुः	धनुषी:	धनूंषि
३या,	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
४र्थी,	धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
५मी,	धनुषः	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
६ष्ठी,	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
७मी,	धनुषिः	धनुषोः	धनुःषु
स०	हे धनुः	हे धनुषी !	हे धनूंषि

इस उस् भागान्त क्लीवलिंग सब शब्द ऐसे ही जानो ॥

सर्वनाम् प्रकरणम् (Pronoun)

सारे सर्व नाम पांच गणों में विभक्ति हैं। यथा १ सर्वादि २ पूर्वादि ३ अन्यादि ४ यदादि और ५ इमदादि ॥

१ सर्वादि । सर्व, विश्व, उभ, उभय, भवत्, तत्, त्व, एकतर, सम, सिम, नेम ॥

२ अन्यादि अन्य, अन्यतर, इतर, कतर, कतम, एकतर, एकतम ॥

३ पूर्वादि । पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अधर, अन्तर, स्व ॥

४ यदादि । यद्, तद्, त्यद्, एतद्, किम्, द्वि ॥

५ इदमादि । इदम्, अदस, युष्मद्, अस्मद्. ॥

सर्वादि, अन्यादि, और पूर्वादि, अकारान्त सर्वनाम शब्दों के के रूप सामान्य अकारान्तों की न्याई होते हैं केवल रमा के बहुवचन ४र्थी, ५मी और ७मी के एक वचन और ६ष्ठी, के बहुवचन में भेद है ॥

सर्व (All) पुलिंग ।

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
२या,	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
३या,	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
४र्थी,	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
५मी,	सर्वस्मात	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः

६ष्ठी,	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
७मी,	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सं०	हे सर्व !	हे सर्वौ	हे सर्वे

नपुंसक ।

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
२या,	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

शेष पुंलिंगवत जानो ॥

स्त्री-लिंग ।

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
२या,	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
३या,	सर्वस्या	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
४र्थी,	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
५मी,	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
६ष्ठी,	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
७मी,	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु
सं०	हे सर्वे !	हे सर्वे !!	हे सर्वाः !

विश्व, उभय, त्व, एक, एकतर, सम, नेम, इन शब्दों के रूप सर्व की न्याई हैं ॥

अन्यादि ।

अन्यादि शब्दों के रूप सर्वादि की न्याई होते हैं केवल क्लीव लिंग १मा, २या के एकवचन में भेद है । यथा, अन्यत, इतरत्, आदि ॥

पूर्वादि शब्दों में केवल जस ङसि, ङि विभक्तियों में सर्वादि कार्य विकल्प से होता है । यथा, पूर्वे: (पूर्वाः) पूर्वस्मात् (पूर्वात्) पूर्वस्मिन् (पूर्वे) ॥

यदादि ।

यदादि अकारान्त होजाते हैं। यथा:—य, त, और एत क्व, छ इनके रूप सर्वादि की न्याई होते हैं, केवल क्लीब लिंग की १मा, २या, के एकवचन 'में' त् (वा) द् हो जाता है, किम् शब्द किम् शब्द ही रहता हैं और तत्‌ और एत का त 'स' होजाता है। यथा यः यौ ये। स तौ ते। एषः एतौ एते। कः कौ के और त्यः त्यौ त्ये इत्यादि। सर्व तीनों लिंगों में। और द्वि के केवल द्विवचन में ही रूप होंगे इदम् और इतर शब्दों की २या, 'टा' और ओस विभक्ति में 'एन' भी होता है। यथा, एतम् (एतत्) एतौ एनौ) एनान् (एनान्) एतेन (एनेमद) एतयोः (एनयोः) उक्त शब्दों का एन अन्वादेश (कहे हुए के फिर कथन में) होता हैं। यथा अनेन व्याकरणमधीतं, एनं छन्दोऽध्यापय ॥

इदमादिगण

इदम् (This) पुलिङ्ग ।

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	अयम्	इमौ	इमे
२या,	इमम् (एनम्)	इमौ (एनौ)	इमान् (एनान्)
३या,	अनेन [एनेन]	आ,भ्याम्	एभिः
४र्थी,	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
५मी,	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
६ष्ठी,	अस्य	अनयो [एनयोः]	एषाम्
७मी,	अस्मिन्	अनयोः [एनयोः]	एषु
विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	इयम्	इमे	इमः
२या,	इमाम् [एनाम]	इमे (एने)	इमाः [एनाः]

३या,	अनया [एनया]	आभ्याम्	आभिः
४र्थी,	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
५मी,	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
६ष्ठी,	अस्याः	अनयोः	[एनयोः] आसाम्
७मी,	अस्याम्	अनयोः [एनयोः]	आसु

नपुंसक लिंग

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	इदम्	इमे	इमानि
२या,	इदम [एनम्]	इमे [एने]	इमानि]

शेष पुल्लिंगवत् जानो ।

अद् (That)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	असौ	अमू	अमी
२या,	अमुम्	अमू	अमून्
३या,	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
४र्थी,	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
५मी,	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
६ष्ठी,	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
७मी,	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

स्त्रीलिंग ।

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	असौ	अमू	अमूः
२या,	अमुम्	अमू	अमूः
३या,	अमुया	अमूभ्याम्	अमीभिः
४र्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
५मी,	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः

६ष्ठी,	अमुष्याः	अमुयोः	अमुषाम्
७मी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

नपुंसक लिंग

वि०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	अदः	अमुनी	अमूनि
२या,	अदः	अमुनी	अमूनि

युष्मद् (You)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
२या,	त्वम् (त्वा)	युवाम् (वां)	युयम (वः) युष्मान्
३या,	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
४र्थी,	तुभ्यम् (ते)	युवाभ्याम् (वाम्)	युष्मभ्यं
५मी,	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
६ष्ठी,	तव (ते)	युवयोः (वाम्)	युष्माकं (वः)
७मी,	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अस्मद् (I)

विभ०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा,	अहम्	आवाम्	वयम्
२या,	मां (मा)	आवां (नौ)	अस्मान् (नः)
३या,	मया	आवाभ्याम् (नौ)	अस्माभिः
४र्थी,	मह्यम् (मे)	आवाभ्याम (नौ)	अस्मभ्यम (नः)
५मी,	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
६ष्ठी	मम (मे)	आवयोः (नौ)	अस्माकम् (नः)
७मी,	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् अस्मद् के तीनों लिंगों में एक से रूप होते हैं ॥

संख्यावाचक (Ordenal) शब्द

एक शब्द वचनान्त तीनों लिंगों में:—

(पु) एकः एकम् एकेन एकस्मै एकस्मात् एकस्य एकस्मिन्

(न) एकम् एकम् शेषं पुम्वत् " " "

(स्त्री०) एका एकाम् एकया एकस्यै एकस्याः एकस्याः एकस्याम्

द्वि (Tow) शब्द द्वि वचनान्त।

(पु) द्वौ द्वौ द्वाभ्याम् द्वाभ्याम् द्वयोः द्वयोः

(नं०) द्वे द्वे द्वाभ्याम् द्वाभ्याम् द्वयोः द्वयोः द्वयोः

(स्त्री०) द्वे द्वे द्वाभ्याम् द्वयोः द्वयोः

त्रि (Three) शब्द बहुवचनान्त।

(पु) त्रयः त्रीन् त्रिभिः त्रिभ्यः त्रिभ्यः त्रयाणाम् त्रिषु

(नं०) त्रीणि त्रीणि त्रिभिः त्रिभ्यः त्रयाणाम् त्रिषु

(स्त्री०) तिस्रः तिस्रः तिसृभिः तिसृभ्यः तिसृभ्यः तिसृणाम् तिसृषु

चतुर (Four) शब्द

(पु) चत्वारः चतुरः चतुर्भिः चतुर्भ्यः चतुर्भ्यः चतुर्णाम् चतुर्षु

(नं०) चत्वारि चत्वारि चतुर्भिः चतुर्भ्यः चतुर्भ्यः चतुर्णाम् चतुर्षु

(स्त्री) चतस्रः चतस्रः चतसृभिः चतसृभ्यः चतसृभ्यः चतसृणाम् चतसृषु

पञ्चन (Five)

पञ्च पञ्च पञ्चभिः पञ्चभ्यः पञ्चभ्यः पञ्चानाम् पञ्चसु।

षष् (Six) शब्द स्त्रीलिंग

षट् (ड्) षट् (ड्) षड्भिः ४ षड्भ्यः ५ षड्भ्यः षण्णाम् षट्सु (षट्त्सु)

एवं 'सप्तन' (Seven) 'अष्टन' (Eight) 'नवम' दशन।

१ सप्त २ सप्त ३ सप्तभिः ४ सप्तभ्यः ५ सप्तभ्यः ६ सप्तनाम्

७ सप्तसु अष्टौ (अष्ठ) अष्टौ (अष्टः) अष्ट [ष्ट] भिः अष्टाभ्यः

अष्ट (ष्टा) भ्यः अष्टानां अष्ट (ष्टा) सु

१ नव २ नव ३ नवभिः ४ नवभ्यः ५ नवभ्यः ६ नवानाम् ७ नवसु

१ दश २ दश ३ दशभिः ४ दशभ्यः ५ दशभ्यः ६ दशानाम ७ दशसु

विशेष्य विशेषण [Noun and Adjective]

जिस से केवल किसी व्यक्ति वा वस्तु का बोध हो, उसे विशेष पद कहते हैं। यथा—गृहम, जलम, वृक्ष, लता, इत्यादयः।

जिस से विशेष्य की अवस्था और गुण जाना जाय उसे विशेषण कहते हैं और यह सदा विशेष्य के पहले आता है, और उसीका लिंग वचन होता है। यथा—सुन्दरःशिशुः। उत्तमा कन्या। नूतने कृत्रमइत्यादि ×

अव्यय शब्दाः (Indeclinable)

जो शब्द लिंग, विभक्ति, और वचन में एक रूप रहें उन्हें अव्यय कहते हैं केवल अन्तस्थ "र्" और "स्" विसर्ग में बदलते हैं और द् कभी २ "त्" में॥

अव्यय	अर्थ	अव्यय	अर्थ
१ अकस्मात्	अचानक	११ अथकिम	फिर किस प्रकार
२ अग्रतः अग्रे	पहले आगे	१२ अथवा	वा, या
३ अङ्ग	सम्बोधन	१३ अद्धा	सचमुच
४ अचिरम	शीघ्र, तुरन्त	१४ अद्य	आज
५ अचिरेण अचिरात्	शीघ्र, तुरन्त	१५ (अध) स (स्तात्)	नीचे
		१६ अधुना	अब
६ अतः	इसलिये	१७ अनु	पश्चात् पीछे
७ अति, अतिक्रम	बढ़कर	१८ अन्तिम	अनन्तर
८ अतीव	बहुत ही	१९ अनिशं	सदा
९ अत्र	यहाँ	२० अन्तर (रे) (रेण)	सिवाय, बीच
१० अथ (अथो)	इससे, अनंतर, अब	२१ अन्यच्च	और भी

अव्यय	अर्थ	अव्यय	अर्थ
२२ अन्यत	और	४५ उच्चैस	ऊंचे
२३ अन्यत्र	और जगह	४६ उत	भी, क्यों
२४ अन्यथा	और तरह	४७ उता,ह (ही)	क्या?
२५ अपि	भीः सत्य	४८ ऋते	बिना
२६ अयि	सम्बोधन हर्ष	४९ एकत्र	एक जगह
२७ अभि	सम्मुख	५० एकदा	एकदा समय
२८ अभितस	चारों ओर से	५१ एकदा	एक प्रकार
२९ अभीक्ष्णम्	बारम्बार	५२ एतर्हि	अब
३० आम	हां	५३ एव	केवल, भी
३१ अमुत्र	वहां पर उस लोक में	५४ एवम	ऐसे
		५५ कथम	कैसे, क्योंकर
३२ अये (अपि)	सम्बोधन	५६ कदा	कब
३३ असकृत	बार २	५७ कदाचित	कभी
३४ अहो, हो	सम्बोधन	५८ कहि	कब
३५ अहो ? हो ?	विस्मय	५९ किंच	और भी
३६ आदि	वगैरह	६० किञ्च	कुछ !
३७ आरात	निकट दूर	६१ किन्तु	परन्तु
३८ आविस	प्रकट	६२ किम	क्या
३९ इतस	यहां से	६३ किमु	निश्चय
४० इति	यहां तक	६४ कुतम	वहां से क्योंकि
४१ इत्थम	इस भांत	६५ कुत्र	कहां
४२ इदानीम	अब	६६ जातु	कभी
४३ इव	न्याई, तुल्य	६७ झटिति	शीघ्र
४४ ईषत	थोड़ा	६८ ततस	यहां से

अव्यय	अर्थ
६९ तथा	वैसे
७० तदा (नीम)	(तर्हि) तब
७१ तावत	तब तक
७२ दिष्ट्या	भाग्य से
७३ दोषा	सन्ध्यासमय
७४ नक्त	रात
७५ ननु	जो, शंका
७६ नमस	नमस्कार
७७ नाना	बहुतेरे
७८ पुनर्	फिर
७९ पुरतस (पुरः)	साम्हने, आगे
८० प्रसह्य	बल से
८१ प्रायशस	बहुत करके
८२ बाहिर	बाहर
८३ भवतु	होवे
८४ भमोस भोस	सम्बोधन
८५ भूयस	फिर, बहुत
८६ भूयंस	बहुत
८७ मनाक	थोड़ा
८८ मिथस	आपस में
८९ मुहुः	बार २
९० मृषा	झूठ
९१ यतस	क्योंकि
९२ यत्र	जहां
९३ यदि	जो, अगर
९४ वत	तुल्य
९५ यावत	जितना
९६ शनैस	धीरे
९७ शाश्वत	सदा
९८ श्वस	आने वाला
९९ सकृत	एकबार
१०० सदा	नित्य
१०१ (सना त)	सदा
१०२ सम्प्रति	अब, हाल में
१०३ सर्वतस	सब प्रकार से
१०४ सर्वत्र	सब जगह
१०५ सर्वदा	सब काल में
१०६ सुष्ठु	अच्छा
१०७ स्यात	जो हो
१०८ स्वधा	पितरों के दान में
१०९ स्वित	प्रश्न, या सन्देह
११० है	पदपूर्णार्थक शब्द
१११ हा	हर्ष, विषाद विस्मय
११२ हाहा	खेद बोधक
११३ हन्त	हर्ष, विषाद,अनुकंप
११४ हि	हद, निश्चय, क्योंकि
११५ ही	हिरुक, निश्चय
११६ हो	विस्मय, बुलायहेतु
११७ हुम	असन्तोष प्रकाशक

स्त्री प्रत्यय (Eormation of Feminines)

(१) अजादि*शब्द और अकारान्त शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाना हो तो अन्त में 'आ' लगता है, अजादि-जैसे-अज=अजा, अश्व=अश्वा अकारान्त, जैसे कृश=कृशा, प्रिय=प्रिया, राम=रामा, आदि।

(२) अष्टक आदि कई एक शब्दों को छोड़ अक प्रत्ययान्त शब्दों के "अ" को "इ" होजाता है। यथा, पाचक पाचिका, पाठक=पाठिका, नायक=नायिका, कारिक=कारिका, गायक=गायिका आदि॥

(३) गिरादि शब्दों में "ईष्" होता है। गौर=गौरी, कुमार=कुमारी, नट=नटी, तट=तटी आदी॥

(४) जाति (Class or Race) वाचक शब्दों में भी "ईष" होता है। जैसे सिंह=सिंही, मृग=मृगी, हरिण=हरिणी, हंस=हंसी,†मत्स्य=मत्स्यी मनुष्य मनुषी, गोप=गोपी आदि॥

(५) बहुव्रीहि समास अङ्गादि‡को छोड़ यदि अन्त वर्ण संयुक्त न हो, तो विकल्पसे "ईप्" § होता है, चन्द्रमुख=चन्द्रमुखी (खा) सुकेश=सुकेशी (शा]॥

[६] ऋकारान्त तथा नान्त शब्दों में ई आता है। यथा दातृ ईप=दात्री, धातृ=धात्री, मालिन=मालिनी, ज्ञानिन=ज्ञानिनी आदि॥

[७] जिन प्रत्ययों का 'उ' वा ऋ इत जाय, उन में भी "ईप" होता है। गतवत्=गतवती, यावत=यावती, भवत=भवती, सत=सती, ददत्=ददती, कुर्वत=कुर्वती, भ्रवत=भ्रवती आदि॥

[८] संख्यावाचक और अन्मागन्त शब्दों के उत्तर ईप नहीं होता है। जैसे सीमन्=सीम, पञ्चन्=पञ्च, सप्तन्=सप्त आदि॥

---

*अज, कोकिल, अश्व, शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय, आदि।

† मत्स्य और मनुष्य के अन्त्य वर्ण [य] का लोप होता है।

‡ अङ्ग, गात्र ओष्ट, जिह्वा, दन्त, कर्ण, शृङ्ग, पुच्छ।

§ प लोप होता है और पूर्ववर्ती "अ" "इ" में बदल जाता है॥

[९] उकारान्त गुण वाचक शब्दों (Adjective) के परे विकल्प से "ईप होता है। मृदु, मृद्वि मृदु लघु = लघ्वी, लघु आदि ॥

[१०] क्ति प्रत्ययान्त को छोड़ इकारान्त शब्दों के उत्तर ई होता है। यथा, रात्रि = रात्रि, श्रेणी = श्रेणी आदि ॥

[११] उकारान्त शब्दों के परे स्त्रीलिंग में ऊ होता है, यथा—कर्कन्धु = कर्कन्धू, ब्रह्मबन्धु = ब्रह्मबन्धूः। परन्तु तनु आदि शब्दों के परे विकल्प होता है, यथा, तनुः, तनूः, चञ्चु चञ्चूः।

[१२] इन्द्र वरुण भव शर्व रुद्र मृड हिम अरण्य यव यवन मातुल और आचार्य शब्दों से परे आनी होता है—जैसे इन्द्राणी वरुणानी भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी, हिमानी, अरण्यानी यवानी मातुलानी

[१३] निम्नलिखित पद, भिन्न २ अर्थों में निपात से सिद्ध होते हैं। महाशूद्री, आचार्याणी, गुरु की स्त्री आचार्या, उस्तादनी ॥

क्षत्रियाणी, क्षत्रिय जाति की स्त्री। क्षत्रिया, क्षत्रिय, ज्ञाती या स्त्री।

क्षत्रिया	क्षत्रिय की स्त्री।
आर्याणी	आर्य जाति की स्त्री
आर्यी	आर्य की स्त्री।
युवति, युवति, यूनी	एक जवान स्त्री।
उपाध्यायनी, उपाध्यायी	उपाध्याय की स्त्री।
उपाध्याया	स्त्री पढ़ाने वाली।
पत्नी	भार्या
सपत्नी	सौतन

घटोघ्नी—गौ जिस का घड़े जितना लेवा हो ॥

कारक प्रकरण।

जो क्रिया उत्पन्न करे उसे कारक कहते हैं। इस के मुख्य छः, और अवान्तर तेईस भेद हैं। कर्त्ता पंच विध, कर्म सप्त विध, करण त्रिविध सम्प्रदान पंच विध, अपदान द्विविध, और आधार चतुर्विध होता है। अन्य विस्तार के भय से सब हम नहीं लिखते ॥

कर्तृकारक (Nominative)

(१) जो काम करे उसे कर्ता कहते हैं इस में १मा, विभक्ति होती है। यथा रामो गच्छति, बालको रोदित, मृगौ धावतः, इन वाक्यों में रामः बालकः मृगौ यह कर्तृ पद हैं।

(२) जहां कोई कर्म वा क्रिया पद न भी रहे, केवल समझने के लिये शब्द प्रयोग हों, वहां १मा, विभक्ति होती है। यथा—वृक्षः नदी, पुष्पम् इत्यादि ॥

(३) सम्बोधन में भी प्रथमा होती है। यथा—हे पितः, हे पुत्रः।

(४) कहीं निपात के अभिधान में भी प्रथमा होती है यथा—विष वृक्षोपि सम्वर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम् ॥

कर्मकारक (द्वितीया) (Objective case)

(५) कर्ता को जो इच्छित है, वह कर्म कहलाता है, इसमें २या, विभक्ति होती है। यथा घटं करोति, चन्द्रम्पश्यति, अन्नं खादति, शास्त्रम् अधीते पुष्पम् चिनोति। यहां—घटं, चन्द्रं, अन्नं शास्त्रम् आदि पद कर्म हैं, क्योंकि वे ही कर्ता को इच्छित हैं ॥

(६) धिक् प्रति आदि शब्दों के योग में २या, होती है। यथा—पापिने धिक्, साम्प्रति सदयो भव, दीनं प्रति दया उचिता ॥

(७) क्रिया के विशेषण में २या, का एक वचन नपुंसक लिंग, होता है, यथा शीघ्रं गच्छति, मधुरं हसति, शीघ्रं धावति इत्यादि ॥

करण-कारक (तृतीया) (Instrumental)

(११) जिस के द्वारा कार्य सिद्ध हो, उसे करण कहते हैं, उस में ३या, विभक्ति होती है। यथा हस्तेन गृह्णाति, चक्षुषा पश्यति, दन्तेन चर्वति, जलेन क्षालयति इत्यादि ॥

(१२) फल प्राप्ति अर्थ जानने में ३या, होती है, यथा अह्ना क्रोशेन वा व्याकरण मधीतम् ॥

(१३) सह, साकं, अलम् किम् इत्यादि कई एक शब्दों के योग में ३या, होती है। रामः लक्ष्मणेन सह वनं जगाम। तेन सार्धं विरोधं माकुरु। कलहेनालम्, क्रोधेन किम्॥

(१४) ऊनार्थ वारणार्थ और प्रयोजनार्थ शब्दों के योग में ३था, होती हैं। जैसे एकेन ऊना विंशति, विद्यया हीनः, अलंमहीपाल तव श्रमेण, प्रयोजनार्थधनेन किं यो न ददाति नाश्नुते॥

(१५) जिस अंग के विकार से अंगी का विकार देख पड़े उस अंग वाचक शब्द में ३या, होती है, यथा चक्षुषा काणः पादेन खञ्जः, शिरसा खल्वाटः, पृष्ठेन कुब्जः॥

(१६) जिससे किसी का किसी प्रकार का विशेष लक्षण जताया जावे, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे जटाभिः तापसः सूत्रेण द्विजः॥

(१७) हेतु अर्थ में तृतीया और पञ्चमी होती है हर्षेण हर्षाद्वा नृत्यति। भयात् भयेन वा कम्पते। दुःखेन दुःखात् वा रोदति॥

संप्रदान (चतुर्थी) (Dative)

(१८) जिसको कोई वस्तु दान दीजाय, उसे सम्प्रदान कहते हैं। और इसमें ४र्थी, विभक्ति होती हैं। यथा-मह्यं पुस्तकन्देहि। दरिद्राय अन्नं देहि, धनिने धनं मा प्रयच्छ, इत्यादि।

(१९) प्रभु आदि सामर्थ्यार्थक शब्दों के योग में ६ष्ठी, ४र्थी, दोनों होती हैं। यथा-मल्लो मल्लस्यवा अलम्, प्रभुः समर्थः शक्तः वा।

(२०) आशीः अर्थ में ६ष्ठी, ४र्थी, दोनों होती हैं। यथा-राज्ञे राज्ञो व कुशलं भूयात्, तुभ्यं, तव वा निरामयं भूयात्।

(२१) निमित्त अर्थ में ४र्थी, होती है। यथा-ज्ञानाय अध्ययनम् परोपकाराय सतां संपत्, इत्यादि॥

(२२) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट्, इन शब्दों के

योग में ४र्थी, विभक्ति होती है। ब्रह्मणाय नमः, प्रजाभ्यः स्वस्ति, पितृभ्यः स्वधा, विषादाय अलम्, अग्नये वषट्, आदि।

(२३) तादर्थ्य (उसके अर्थ) में ४र्थी होती है। यथाः— यूपाय दारु, भूषणाय स्वर्णम्, इत्यादि।

अपादान कारक (पंचमी) (Ablative)

(२४) वियोग में ध्रुव वस्तु का अपादान कहते हैं. इसमें ५मी, विभक्ति होती है। यथा-वृक्षात् पत्राणि पतन्ति, सरोवरात् जलं गृह्णाति, अश्वात् पतितः अश्ववारः, इत्यादि ॥

(२५) जिसने अध्वा वा काल परिच्छेद हो, उनमें ५मी, और उसके योग में अध्व वाची शब्दों में १मा, और ७मी, और काल वाचक शब्दों में ७मी होती है। यथा वनात् ग्रामी योजने योजनं वा योजनात् परं आगमनादानन्तरम् विवाहात सप्तमे दिने ॥

(२६) भय और त्राण का हेतु भी सम्प्रदान होता है। यथा—चोरात् विभेति, व्याघ्रात् त्रायते, इत्यादि ॥

(२७) हेतु अर्थ में ३या, ५मी, होती है। यथा भयेन, कम्पते, भयात् कम्पते, क्रोधेन ताडयति, दुःखात् रोदिति इत्यादि ॥

(२८) अन्य, पृथक् आदि शब्दों के योग में अपेक्षा अर्थ में ५मी. विभक्ति होती है। यथा—मित्रादन्यः कः त्रातुं समर्थः, इदमस्मात् पृथक्, अन्नात् क्षियागरीयसी, गृहात् उत्तरः इत्यादि ॥

(२९) विना और ऋते शब्द के योग में २या, और ५मी, होती है यथा—विद्यां वा विद्यायाः विना वृथा जीवनम्, पापात पापं विनां वा दुःखं भवति, श्रमात् वा ऋते विद्या न भवति।

[३०] अन्य आरात इतर ऋते दिक्वाची शब्द अञ्चूत्तर पद, आच् और आहि शब्द के योग मे ५मी, होती है। यथा—अन्यः मित्र इतरः वा कृष्णात्। आरात वनात् [पूर्वोग्रामात्] प्राक् नगरात् दक्षिणा ग्रामात् दक्षिणाहिग्रामा ॥त्

सम्बन्ध (षष्ठी) (Genitive)

[३१] सम्बन्ध अर्थ में ६ष्ठी, विभक्ति होती है। यथा–मम हस्तः, तव पुत्रः, नद्या जलम्, पितुर्गृहम्, वृक्षस्य शाखा, इत्यादि ॥

[३२] दूर और निकट वाची शब्दों के योग में ६ष्ठी, ५मी, दोनों होती हैं। दूरं ग्रामस्य ग्रामात् वा निकटं नगरस्य नगराद्वा ॥

[३३] कृत् प्रत्यय के योग में कर्त्ता और [कर्म] में ६ष्ठी, होती है। [कर्त्ता] शिशोः शयनम्, ममपिपासा, [कर्म] अन्नस्य पाक, सुखस्य भोग, वृक्षस्य छेदकः आदि ॥

[३४] वर्त्तमान काल में क्त प्रत्यय हो तो कर्त्ता में षष्ठी, होती है। यथा—साधूनां पूजितः, सतां सम्मतः, पंडितानां विदितः ॥

[३५] क्त्वा में "क्त" हो तो कर्त्ता में ६ष्ठी, और ३या, दोनों होती हैं। यथा— मम वा मया स्नातम् शिशोः शिशुना वा शयितम् ॥

[३६] कृत प्रत्यय के प्रयोग में कर्त्ता में विकल्प से ६ष्ठी, होती है, यथा,–मया मम वा सेव्यो हरिः, त्वया पुस्तकस्पठितम् आदि ॥

[३७] सम तुल्य समान सदृश इत्यादि शब्दों के योग में ३या, और षष्ठी, होती है। यथा–विद्याय समं धनं नास्ति, निर्धनस्य तुल्यो दुःखी नास्ति ॥

[३८] निर्धारण अर्थ में ६ष्ठी, और ७मी, होती है। यथा–पर्वतानां पर्वतेषु वा हिमालयः श्रेष्ठः कविषु कवीनां वा कालीदासः श्रेष्ठः।

अधिकरण (सप्तमी) (Locative)

[३९] क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं और उसमें ७मी, विभक्ति होती है। यथा–शय्यायां शेते, आसने उपविशति, गृहे तिष्ठति, दुग्धे माधुर्य्यमस्ति, तिलेषु तैलं विद्यते, वर्षासु वृष्टिर्भवति, रात्रौ चन्द्र उदेति ॥

[४०] कर्म कारक के योग में ७मी, होती हैं। जैसे–चर्मणि द्वीपिनं हन्ति, दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम, केशेषु चमरी, हन्ति ॥

[४१] अनादर अर्थ समझा जाने में ६ष्ठी, और ७मी, दोनों होती हैं यथा-रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत् ॥

[४२] जाति गुण क्रिया वा संज्ञा द्वारा समुदाय में से एकको पृथक् करना निर्धारण होता है, उसमें ६ष्टी, और सप्तमी, होती है। यथा-[जाति] नृणां नृषु, वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः] गुण] गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा। [क्रिया] गच्छतां गच्छत्सु वा धावन शीघ्रः [संज्ञा] छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः ॥ इति कारक प्रक्रिया ॥

अथ समास प्रकरणम् (Compound words)

[१] दो वा अनेक पदों का एक पद करना समास कहलाता है, समास होने पर पूर्व पदों की विभक्तियें जाती रहती हैं, केवल अन्त के पद में विभक्ति रहती है ॥

[२] समास छ्य प्रकार के होते हैं। यथा-द्वन्द्व (Copulative Compounds) तत्पुरुष (Determinative Compounds) कर्मधारय (Appositional Compounds) द्विगु (Numeral Compounds बहुव्रीहि (Relative Compounds) [अव्ययीभाव] (Indeclinable Compounds).

द्वन्द्व (Copulative Compunds)

[३] "च" *के अर्थ में आनेवाले अनेक पदों के समास को द्वन्द्व कहते हैं। यथा-हरिश्च हरश्च हरि हरौ, रामश्च लक्ष्मणश्च राम लक्ष्मणौ। ब्राह्मणश्च क्षत्रियश्चश्च वैश्यश्च ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यः

*च के दो अर्थ होते हैं, इतरेतर योग, और समाहार। १म, वह है जहां एक वचनान्त दो पदों का समास हो तो अन्तिम पद द्विवचनान्त और बहुत पदों का हो तो अन्तिम पद बहुवचनान्त होता है। और २या, में चाहे कितने पदों का समास हो अन्तिम पद क्लीव एक वचनान्त होता है ॥

माता च पिता च माता पितरौ वा पितरौ*जाया च†पतिश्च जम्पती, दम्पती, दम्पति। देवाश्च गन्धर्वाश्च किन्नराश्च,देवगन्धर्व किन्नराः।

[४] प्राण्यङ्ग, तुर्य्याङ्ग और सेनाङ्ग वाची, पदों का समाहार द्वन्द्व होता है। यथा—:[प्राण्यङ्ग] पाणिश्च,पादश्च, पाणिपादम्, दन्ताश्च, ओष्ठौ च दन्तोष्ठम् [तुर्याङ्ग] मार्दङ्गिकश्च पाणविकश्च, मार्दङ्गिक पाणविकम् [सेनाङ्ग] रथिकश्च, अश्वारोहश्च, रथिकाश्वरोहम् ॥

[५] जिन का सदैव विरोध है उन में भी समाहार द्वन्द्व होता है। यथा—अहिनकुलम्, गोव्याघ्रम्, काकोलुकम् आदि ॥

[६] स्त्री पुरुष वाची पदों के समास में पु० वाची पद रह जाता है। यथा—हंसी हंसश्च हंसौ, छागी च छागश्च छागौ आदि ॥

[७] मातृ के साथ पितृ शब्द का समास हो तो विकल्प से पिता शेष रहता है। यथा—माता च पिता च मातृ पितरौ वा ॥

तत्पुरुषः (Determinative Compounds)

[८] श्रितादि सुबन्त पदों के साथ द्वितीयान्त पदों का समास होता है, कष्टंश्रितः 'कष्टश्रितः' दुःखं अतीतः दुःखातीतः" कूपं पतितः "कूपपतितः" गृहं गतः "गृहगतः" सुखं प्राप्तः "सुखप्राप्तः" विपदां आपन्नः "विपदापन्नः" ॥

[९] पूर्व सदृश सम ऊनार्थक शब्द कलह निपुण मिश्र और लक्षण शब्दों के साथ तृतीयान्त पद का समास होता है, मासेनपूर्वः "मासपूर्वः" मात्रा सदृशः "मातृसदृश" पित्रासमः" "पितृसमः" मासेन ऊनः "मासोनः" वाचा कलहः 'वाककलहः' वाचापटुः "वाक्पटुः". गुडेन मिश्रः "गुडमिश्रः" इत्यादि ॥

---

* माता के साथ जब पिता का समास हो तो पिता शेष रह जाता है।

† जाया को जं और दंमी होते है ॥

से समास होता है। यथाः—हरिणा त्रातः हरि-त्रातः, नखैर्भिन्नः नख—भिन्नः।

[११] निमित्त, अर्थ बलि, हित, सुख, रक्षित शब्दों के साथ ४र्थी, समास होता है। धनाय निमित्तं, धननिमित्तं देवेभ्योबलिः देव बलिः करायहितं "करहितं"।

[१२) भय शब्द के साथ ५मी, समास होता है, चौरात् भयं चौर-भयं आदि॥

(१३) षष्ठयन्त पद के साथ जो समास होता है, उसे षष्ठी समास कहते हैं। यथा-राज्ञः, पुरुषः राजपुरुषः, गङ्गायाः जलम गङ्गा-जलम्, मनोःवचनम्, मनुवचनम्।

(१४) शौण्डादि शब्दों के साथ सप्तम्यन्त का समास होता है। अक्षेषु शौण्डः, अक्षशौण्डः, शास्त्र प्रवीणः शास्त्र प्रवीणः इत्यादि।

(१५) कु और प्रादि उपसर्गों का समर्थ के साथ समास होता है यथा कुत्सितः पुरुषः कुपुरुषः। कुत्सितं अन्नं कुदन्नं इत्यादि॥

कर्मधारयः (Appositional Compounds)

(१६) विशेषण विशेष्य के समास को कर्म्म धारय कहते हैं। यथा—नीलं उत्पलं=नीलोत्पलं, शीतः पवनः शीतपवनः महान् राजा महाराजा, उन्नतः तरुः उन्नततरु इत्यादि॥

(१७) कर्म धारय और बहुव्रीहि समास में स्त्री वाचक शब्द पुंवत होते हैं। यथा-महती नवमी, महानवमी, कृष्णा चतुर्दशी कृष्ण-चतुर्दशी, पाचिका स्त्री, पाचिकस्त्री इत्यादि॥

द्विगु (Numeral Compounds)

(१८) उपमान और उपमेय के समान धर्म वाचक पदों के साथ उपमान वाचक पदो का समास होता है। यथा-घन इवश्यामः घन-श्यामः, अनल इव उज्वलः अनलोज्वलः, इत्यादि॥

(१९) जिस के पूर्व संख्या वाचक पद हों उसे द्विगु कहते हैं।

यथा-पंचानांगवां समाहारः पञ्चगवम्, चतुर्युगम्, पञ्चरात्रं, त्रिभुवनम् आदि २ ॥

(२०) अकारान्त द्विगु कभी कभी स्त्रीलिंग होता है, यथाः-त्रयाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी, चतुर्णांपदानां समाहारः चतुष्पदी सप्तानां पदानां समाहारः सप्तपदी, आदि ॥

बहुव्रीहि [Relative Compounds]

(२१) अनेक प्रथमान्तादि पद जब अन्य पद के अर्थ में वर्तमान हों वह बहुव्रीहि समास कहलाता है। यथा-प्राप्तं उदकं यं प्राप्तोदकं (ग्रामः) कृतकर्म येन स 'कृतकर्मा' दत्तं धनं यस्य, दत्त धनः। उद्धृतं उदकंयस्मात् उद्धृतोदकः कूपः। पीतं अम्बरंः यस्यस पीताम्बरः,(हरिः

(२२) बहुव्रीहि समास दो भान्त के होते हैं। समानाधिकरण और व्यधिकरण, विशेष्य विशेषण के बहुव्रीहि को समानाधिकरण और अन्य प्रकार के समासों को व्यधिकरण बहुव्रीहि कहते हैं। १म, जैसे पीताम्बरः, २य, यथाः-दण्डः पाणौ यस्यसः दण्डपाणिः, आदि ॥

(२३) आहिताग्नि आदि पदों में पिछला पद पूर्व भी होजाता है। यथा अग्निः आहितो येन सः आहिताग्नि इत्यादि ॥

अव्ययी भावः (Indeclinable Compounds)

(२४) विभक्ति समीप समृद्धि, वृद्धि, अर्थाभाव अत्यय असम्प्रति,साकल्प और पर्यन्त अर्थों में अव्यय शब्द के साथ समास होता है, और इसे अव्ययी-भाव समास कहते है जैसे (विभक्त्यर्थ) हरौ अधि, अधिहरि गृहे अधि अधि गृहम् (समीप) गृहस्यसमीपं,उपगृहम् गङ्गायाः समीपं, उपगङ्गम् (वाराणसी)(समृद्धि) मद्राणां समृद्धि सुमद्रम् (व्यृद्धि) यवनानांव्यृद्धिः दुर्यवनं (अर्थाभाव) मक्षिकानामभावोनिर्मक्षकं (अत्यय) हिमस्य अत्ययः अतिहिमम् निद्रासंप्रति न युज्यते अतिनिद्रम् (शब्दप्रादुर्भाव) हरिशब्दस्य प्रकाशः इतिहरि (पश्चात्) रामस्यपश्चात्

अनुरामं, यथा,रूपस्य योग्यं अनुरूपम् (विप्सा) दिनं दिनं प्रति प्रति दिनम् (अनतिक्रम) शक्तिमनतिक्रम्य यथा शक्ति (आनुपूर्वे) ज्येष्ठ स्यानुपूर्व्येण अनुजेष्टम् (यौगपद्य) चक्रेण युगपत् सचक्रम् (सादृश्य) हरेः सादृश्यं सहरि (सम्पत्ति) क्षत्राणां सम्पत्ति सक्षत्रं (साकल्प) तृणमपि अपरित्यज 'सतृणम्' (पर्यंत) अग्नि ग्रन्थ पर्यंतमधीते साग्नि ॥

(२५) मर्यादा और अभिविधि अर्थ में पञ्चम्यन्त के साथ "आङ्" इस अव्यय का समास होता है, यथा—आबालं आबालेभ्यः हरिभक्तिः, आकुमारं आकुमारिभ्यः यशःकालिदासस्य आदि ॥

(२६) आभिमुख्यवाचक अभि और प्रति इन दो अव्ययों का चिन्ह वाची पद के साथ विकल्प से समास होता है। अग्निं अभि अभ्यग्नि प्रत्यग्नि, अग्नि, प्रति आदि ॥

(२७) जिसकी दीर्घता समझी जाती है उसके साथ "अनु" कवि कल्पि समास होता है। गंगायां अनु=अनुगंगं (वाराणसी) गंगा दैर्घ्य सदृश दैर्घ्योपलक्षिता ॥

तद्धित प्रत्यय (Nominal Affxes)

(१) प्रातिपदिक के परे अर्थ विशेष में ता, त्व, वत्, मत् आदि कई प्रत्यय होते हैं उनको तद्धित कहते हैं। तद्धित प्रत्यय अनेक हैं, उनमें से कईयों का विवरण संक्षेप से किया जाता है ॥

(२) अपत्य अर्थ में अण् इण् इकण् आदि प्रत्यय होते हैं। यथा—शिवस्य अपत्यं (शैवः) शूरस्यापत्यः (शौरिः) विनताया अपत्यं वैनतेयः आदि ॥

(३) भाव अर्थ में "ता त्व" दोनों प्रत्यय लगते हैं 'ता' प्रत्यांत स्त्रीलिंग और "त्व" प्रत्यान्त शब्द नपुंसक होते हैं। यथा—प्रभोर्भावः प्रभुता=प्रभुत्वं लघुत्वम् पशुता पशुत्वम्, बलता बलत्वम् ॥

(४) भाव में गुण वाचक शब्दों में इमन् भी होता है। यथा-नीलस्य भावः नीलिमा रक्तस्य भावः रक्तिमा आदि ॥

(५) सादृश अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर "वत्" होता है तद्न्त शब्द अव्यय होते हैं । यथा चन्द्रेण तुल्यम् चन्द्रवत् पितृवत् मातृवत् पुत्रवत् गुरुवत् आदि ॥

(६) जिसका अथवा जिसमें है इस अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर मत् होता है । यथा—बुद्धि विद्यते अस्मिन् बुद्धिमान्, श्रीमान्, अंशुमान् इत्यादि ॥

(७) असन्त और माया मेधा और स्रज के परे विन् भी होता है यथा—यशस्वान् यशस्वी तेजस्वी, मेधावी इत्यादि ॥

(८) कइयों के उत्तर (ल) भी होता है। यथा मांसलः । शीतलः । आदि ॥

(९) जिसका, अथवा जिसमें, है, इस अर्थ के अनेक स्वर-युक्त अवर्णान्त शब्द के उत्तर विकल्प इन् होता है । इन् होने से अन्त्य स्वर का लोप होता है यथा-ज्ञानी, गुणी, धनी, मानी । ज्ञानवान् धनवान् गुणवान् मानवान् इत्यादि ॥

(१०) दो में से एक की उत्कर्षता जनाने में 'तर' और 'ईयस' प्रत्यय होते हैं, अयमनयोरतिशयेन पटुः पटुतरः, पटीयान् ॥

(११) अनेकों में एक की उत्कर्षता जताने में प्रातिपदिक के उत्तर तम और इष्ठन् होते हैं । यथा—सर्वेषु, दृढः दृढिष्टः, दृढतमः गुरुतमः गरिष्टः, पटुतमः पटिष्टः ॥

(१२) विकार, व्याप्ति, अवयव, संसर्ग, और अपृथग्भाव, अर्थों में मय प्रत्यय होता है । यथा-स्वर्णमयः, रजितमयः, लोहमय, दारुमयम ऊर्णामयम, काष्ठमयम, घृतेन संसृष्टं घृतमयम, ब्रह्ममयम, जगत् ॥

(१३) प्रकार अर्थ बोधक होने से संख्या वाचक प्रातिपदिक के उत्तर 'धा' प्रत्यय होता है, और सर्व-नाम के आगे था होता है । यथा, एकधा [एक प्रकार] एवं द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, पञ्चधा, सर्वथा अन्यथा उभयथा इत्यादि ॥

[१४] युष्मद् अस्मद् को छोड़ और सर्व नाम तथा बहु शब्द के उत्तर सप्तमी में त्रल् होता है सर्वस्मिन् सर्वत्र, एकस्मिन् एकत्र, यस्मिन् यत्र, आदि ॥

[१५] एक, सर्व अन्य, किम्, यद् शब्दों के परे काल अर्थ में सप्तमी के स्थान में दा होता है। यथा-एकस्मिन् काले एकदा, सदा, सर्वदा, इत्यादि ॥

[१६] ५मी, और ७मी, विभक्ति के स्थान में विकल्प से तसु होता है। यथा-गृहात् गृहतः ग्रामात् ग्रामतः एकस्मिन् एकतः ॥

(१७) सर्व नाम प्रातिपदिक की सप्तमी के स्थान में त्र होता है। यथा-सर्वस्मिन् सर्वत्र, अन्यस्मिन् अन्यत्र, परस्मिन् परत्र इत्यादि ॥

(१८) प्रकार अर्थ में सर्वनाम की ३या, के अर्थ में "था" होता है। यथा-अन्येन प्रकारेण अन्यथा, सर्वैः प्रकारैः सर्वथा, इतरेण प्रकारेण इतर था, उभयेन प्रकारेण उभयथा आदि ॥

(१९) उत्पत्ति अथवा घटना बोधक होने से काल वाचक अव्यय शब्द के आगे तन लगता है, यथा अद्यभवः अद्यतनः पुराभवम् पुरातनम, इदानींभवम इदानीतनम अधुनाभवम अधुनातनम आदि ॥

(२०) विभक्त्यन्त किम् के उत्तर अनिश्चित व्यक्ति बताने में चित् और चन होते हैं, यथा—काचित्, कश्चित्, कश्चन, किम्, चित् किञ्चित् किञ्चन, केचिद् कुतश्चित कुतश्चन, इत्यादि ॥

इति पूर्वार्द्धः ॥

* ओ३म् *

अथ उत्तरार्द्धः।

क्रिया वाचक प्रकृति को धातु कहते हैं। यथा—भू (to be) स्था (to sit) गम् (to go) दृश् (to see)॥

(२) धातु दो प्रकार के होते हैं। १ सकर्मक (Transitive) २ अकर्मक (Intransitive)॥

१ २ ३
(३) धातु के उत्तर दश विभक्तियें लगती हैं। यथा—लट् लोट् लङ्
४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
विधिलिङ् लुट् लृट् आशीर्लिङ्, लिट् लुङ् लेट् *प्रत्येक विभक्ति के तीन पुरुष (Person) हैं। प्रथम, 3rd मध्यम, 2nd और उत्तम 1st अस्मद् के योग में युष्मद् के मध्यम, और यतद् भिन्न सब शब्दों के योग में १म, पुरुष समझा जाता है। प्रत्येक पुरुष के तीन २ वचन होते हैं, जिनको एक वचन, द्विवचन, और बहुवचन कहते हैं॥

(४) संस्कृत के सब धातु दशगणों Conjugations) में
१ २ ३ ४ ५ ६
विभक्त हैं यथा भ्वादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादिरेवच,तुदादिश्च,
७ ८ ९ १० १ २ ३
रुधादिश्च, तन, क्र्यादि, चुरादयः॥ तेषां विकरणाः शप् † लुक्, श्लु,
४ ५ ६ ७
श्यन्, श्नुशः, श्नमे, च। उश्नाणिचोदशगणेषु, क्रमाद्वैपरिकीर्तिताः॥

(५) विभक्तियें परस्मैपद और आत्मनेपद के नाम से दो पदों में विभक्त हैं, और हरएक के, अठारह २ रूप होते हैं। इसी तरह प्रत्येक धातु के प्रायः १८० एक सौ अस्सी प्रयोग होते हैं॥

---

*इसका प्रयोग वेद में ही होता है, इसलिये १० लिखे हैं॥

† शप्=अश्लु=उ। श्यन=य। श्नु=न। श=अ। श्नम=न। श्ना=ना। णिच=इ। रहते हैं॥

विभक्तियों की आकृति ।

लट् परस्मैपद वर्तमानकाल (Present Tense)

	प्रथम पुरुष (3rd per)	मध्यम पुरुष (2nd per)	उत्तम पुरुष (1st per)
एकवचन	ति	सि	मि
द्विवचन	तः	थः	वः
बहुवचन	अन्ति	थ	मः

स स्वपिति (सोता है) स भवति (होता है) यहां स्वप् और भू को कर्म की कोई इच्छा नहीं, इसलिये अकर्मक हैं। स पठति, स पचति, यहां शास्त्र वा चावल आदि कर्म अपेक्षित हैं इसलिये पठ, पच, दोनों सकर्मक हैं ॥

आत्मने पद ।

	१म. पुरुष	म० पु०	उ० पु०
एकवचन	ते	से	ए
द्विवचन	आते	आथे	वहे
बहुवचन	अन्ते	ध्वे	महे

लोट् परस्मैपद (Imperative)

१म, पु, एक,	तु (तात्)	म० हि (तात्)	उ० आनि
द्वि०	तां	तम्	आव
बहु०	अन्तु	त	आम
(आपद) १म, एक०	ताम्	स्व	उ० ऐ
द्वि०	आताम्	आथाम्	आवहै
बहु०	अन्ताम्	ध्वम्	आमहै

लङ् परस्मैपद (First Preterite)

१म, पु० एक०	त्	म० पु० स्	उ० पु० अम्
द्वि०	ताम्	तम्	व
बहु०	अन्	त	म

आ० १म, पु, एक०	(त)	म१ थाः	उ० इ
द्वि०	आताम्	आथाम्	वहि
बहु०	अन्त	ध्वम्	महि

विधिलिङ्ग (Second Future)

	प्रथम पुरुष	मध्यम-पुरुष	उत्तम-पुरुष
(प०) एक०	यात्	यास्	याम्
द्वि०	याताम्	आतम्	याव
बहु०	युस्	यात	याम
आ० एक०	ईत्	ईथाः	ईय
द्वि०	ईयाताम्	ईयाथाम्	ईवहि
बहु०	ईरन्	ईध्वम	ईमहि

लृट् (First Future)

(प०) प्र०	स्यति	स्यतः	स्यन्ति	प्र० स्यते	स्येते	स्यन्ते
म०	स्यसि	स्यथः	स्यथ	म० स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
	स्यामि	स्याव	स्याम	उ० स्ये	स्यावहे	स्यामहे

लुट् (Benedictive)

(प०) एक०	ता	म० पु० तासि	उ० पू० तास्मि
द्वि०	तारौ	तास्थः	तास्वः
बहु०	तारः	तास्थ	तास्मः
आ० १म, एक०	ता	म० पु० तासे	उ० पु० ताहे
		तासाथे	तास्वहे
बहु०	तारः	ताध्वे	तास्महे

आशीर्लिङ्ग (Benedictive)

(प०) १म, एक०	यात्	म० पु० यास्	उ० पु० यासम
		यास्तम्	यास्व
बहु०	यासुः	यास्त	यास्म
आत्मने० एकवचन	सीष्ट	सीष्ठाः	सीय
द्विवचन	सीयास्ताम्	सीयास्थाम्	सीवहि
बहुवचन	सीरन		ीमहि

लिट् 2nd (Preterite)

(प०) एक० प्र०	अ	म० पु०	थ	उ० पु०	अ
द्विवचन	अतुः		अतुः		व
बहु०	उः		अ		म्
आत्मने०एकवचन	ए	म० पु०	से	उ० पु०	ए
द्वि०	आते		आथे		वहे
बहु०	इरे		ध्वे		महे

लुङ् (Preterite)

(प०) १म, पु० एक०	त्	म० पु०	(:)	उ० पु०	अम्
द्विवचन	तां		ते		व
बहुवचन	अन्		त		म
आ० १म, पु० एक०	त	म० पु०	थास्	उ० पु०	इ
द्विवचन	आतां		आथाम्		वहि
बहुवचन	अन्त		ध्वम्		महि

लृङ् (Conditional Tense)

(प०) १म, एक	स्यत्	म० पु०	स्यः	उ० पु०	स्यम्
द्वि०	स्यताम्		स्यतम्		स्याव
बहु०	स्यन्		स्यन्त		स्याव
आ० १म, पु० एक०	स्यत	म० पु०	स्यथाः	उ० पु०	स्ये
द्वि०	स्येताम्		स्येथाम्		स्यावहि
बहु	स्यन्त		स्यध्वम्		स्यामहि

(६) वाच्य (Voice) तीन हैं। यथा—कर्तृ Active) वाच्य-कर्म (Passive) वाच्य, और भाव (Intransitive impersonal Passive) वाच्य ॥

(७) कर्तृवाच्य में धातु त्रिविध होते हैं। परस्मैपदी, आत्मनेपदी और उभयपदी। परस्मैपदी, धातुओं के उत्तर परस्मैपद की विभक्ति, आतमनेपदी के उत्तर आत्मने पद की, और उभयपदी के उत्तर दोनों पदों की विभक्तियें लगती हैं ॥

(८) कर्तृ-वाच्य में कर्त्ता के वचन के अनुसार क्रिया का वचन होता है। यथा—स पचति, तौ पचतः ते पचन्ति। त्वं पचसि, युवां पचथः यूयं पचथ, अहं पचामि आवां पचावः, वयं पचामः ॥

(९) अकार के परस्थित विधिलिङ् के युः के स्थान में इयुः, याम् के स्थान में इयम् लङ्लिङ् या, के स्थान ई होता है। यथा—भव+युः=भवेयुः भव+यम्=भवेयम्। भव+यात्=भवेत्। भव+यातम्=भवेतम् ॥

(१०) नु और उ इन आगमों के परस्थित हि का लोप होता है। यथा—भव+हि=भव। कुरु+हि=कुरु। शृणु+हि=शृणु ॥

(११ नु किसी वर्ण से मिला हो, तो, हि का लोप नहीं होता। यथा—आप्नु+हि=आप्नुहि ॥

(१२) अभिन्न वर्ण के परस्थित अन्त, अन्तां और अन्ते आदि कई विभक्तियों का न लुप्त होता है, यथा—आस+अन्त=असत् आस+अन्तात=आसताम्। आस+अन्ते=आसते। अभ्यस्त धातु के उत्तर अन्ति अन्तु के न का लोप होता है, यथा=जुह+अतु+जुहतु, जुह+अन्ति=जुह्वति ॥

(१३) अभ्यस्त धातु के लङ् के अन् को उस होकर उसके पूर्व अन्त्यस्वर का गुण होता है, अजोहु+अन्=अजुहवुः ॥

१४) लङ् लुङ्, विभक्ति में धातु के आदिस्थ इ ई को ऐ उ ऊ को औ, ऋ को आर होता है। यथा—इन्द, ऐन्दित, इह ऐहिष्ट उख औखत, ऋछ आर्छत् मा और मास्म के योग में नहीं होता। यथाः— मा ईहिष्ट, मास्म ऋच्छत् ॥

(१५) व्यञ्जनान्त के परस्थित त् स् लुप्त होते हैं। यथाः— अवेद्त=अवेद्। अवेदस=अवेद्।

(१६) स्वर परे हो तो धातु के अन्त की इ, ई, इय्, । उ ऊ, उव् में पलटते हैं। यथाः—इ+आय=इयाय, उ+ओष=उवोष ॥

(१७) च, छ्, ज्, श् ह इन वर्णों के परे स आवे, तो दोनों

मिलकर "क्ष" होता है। वच+स्यति=वक्ष्यति, प्रछ्+स्यति=प्रक्ष्यति यज+स्यत्=यक्ष्यति॥

(१८) छ्‌ श्‌ के परे स्थित त हो तो दोनों को मिलकर ष्ट होता है, थ हो तो ष्ठा, है। यथा—प्रछ्+ता=प्रष्ठ द्रश्+ता=द्रष्टा आदि।

(१९) छ्‌ श्‌ और ष्‌ के परे ध्‌ हो तो इस को ड्‌ होता है और ध्‌ ढ्‌, में बदलता है। यथा—अपृच्छ्+ध्वम्=अपृड्ढवम्‌ अवेश्+ध्वम्= अवेड्ढवम्‌, अवेष्+ध्वम्=अवेड्ढवम्‌॥

कर्म वाच्य (Passive voice)

कर्म्मवाच्य में कर्म प्रधान, होता है, और कर्ता अप्रधान, और उस में ३या विभक्ति लगती है और कर्म्म में १मा, और इसी के वचनानुसार क्रिया के वचन बदलते है यथा—शिष्येण गुरुः पृच्छ्यते गुरु पृच्छ्येते, गुरुवः पृच्छ्यन्ते इत्यादि॥

भाववाच्य (Intransitive)

इस वाच्य में कर्ता तृतीयान्त और कर्म नहीं होता क्रिया में प्रथम पुरुष एक वचन ही होता है यथा—तेनच स्थयते, युवाभ्याम् स्थीयेते अस्माभिः स्थीयन्ते इत्यादि॥

कर्मकर्तृ वाच्य (Passive voice)

जहां कर्म ही कर्तृ रूपसे प्रतीयमान हो, इसवाच्यमें आत्मनेपद होता है। यथा—गजेन विद्यमानः स्वयमेव विद्यते वृक्षः, असि स्वमेव छिद्यते इत्यादि॥

लकार और अवस्था (Tense and mood)

संस्कृत भाषा के धातुओं के त्रयकाल और चार अवस्था होती है, लिट्‌, लङ्‌, प्रायः भूतकाल द्योतन करते हैं। लुट्‌ लृट्‌ और लृङ्‌, भविष्यत्‌ अर्थ को, लट्‌ वर्तमानकाल को और लोट्‌ लिङ्‌ और विधि लिङ शेष अवस्थाओं को बोधन करते हैं॥

भ्वादिगण

लिट् लोट् लङ् और विधिलिङ् में भ्वादिगणीय धातुओंके उत्तर "अ" आता है, और वह अन्त्य वर्ण में मिल जाता है ॥

परस्मैपदी "भू" (To be)

लट् वर्त्तमान (Present tense)

वचन०	प्रथम-पुरुष	मध्यम-पुरुष	उत्तम-पुरुष
एक०	भवति	भवसि	भवामि
द्वि०	भवतः	भवथः	भवावः
बहु०	भवन्ति	भवथ	भवामः

लोट् (Imperative mood)

१म०, पु० एक०	भवतु (तात्)	म० भव (तात्)	उ० भवानि
द्वि०	भवताम्	भवतम्	भवाव
बहु०	भवन्तु	भवत	भवाम

लङ् (Imperfect tense)

१म, पु० एक०	अभवत्	म० पु० अभवः	उ० अभवम्
द्वि०	अभवताम्	अभवतम्	अभवाव
बहु०	अभवन्	अभवत्	अभवाम

विधिलिङ् (Potential mood)

१म, पु० एक०	भवेत	म० भवेः	उ० भवेयम्
द्वि०	भवेताम्	भवेतम्	भवेव
बहु०	भवेयुः	भवेत	भवेम्

सेव (To serve) लट् आत्मनेपदी ।

१म, पु० एक०	सेवते	म० सेवसे	उ० सेवे
द्वि०	सेवेते	सेवेथे	सेवावहे
बहु०	सेवन्ते	सेवध्वे	सेवामहे

लोट् (Imperative)

१म, पु० एक०	सेवताम्	म० सेवस्व	उ० सेवै
द्वि०	सेवेताम्	सेवेथाम्	सेवावहै
बहु०	सेवन्ताम्	सेवेध्वम्	सेवामहै

लङ् (First preterite)

१म, पु० एक०	असेवत	म० असेवथाः	उ० असेवे
द्वि०	असेवेताम्	असेवेथाम्	असेवावहि
बहु०	असेवन्त	असेवध्वम्	असेवामहि

विधि लिङ् (Potential)

१म, पु० एक०	सेवेत	म० सेवेथाः	उ० सेवेय
द्वि०	सेवेयाताम्	सेवेयाथाम्	सेवेवहि
बहु०	सेवेरन	सेवेध्वम्	सेवेमहि

धाव उभ० (To run)

लट् (Present tense)

१म, पु० एक०	धावति (ते)	म० धावसि (से)	उ० धावामि (वे)
द्वि०	धावतः (वेते)	धावथः (वेथे)	धावावः (वहे)
बहु०	धावन्ति (वन्ते)	धावाथ (वध्वे)	धावमः (महे)

लोट् आदिक चारों पुर्ववत जानो ॥

जि (To win) प० लट्

१म, पु० एक०	जयति	म० जयसि	उ० जयामि
द्वि०	जयतः	जयथः	जयावः
बहु०	जयन्ति	जयथ	जयामः

शेषाः, 'भू' वत् बोध्याः ।

लट् आदि चार विभक्तियों में भ्वादि धातुओं के अन्त्य स्वर तथा उपधा इ र को गुण होता है ॥

स्मृ (To remember)

१म, पु० एक०	स्मरति	म० स्मरसि	उ० स्मरामि
द्वि०	स्मरतः	स्मरथः	स्मरावः
बहु०	स्मरन्ति	स्मरथ	स्मरामः

सिध् (To be accomplished)

१म, पु० एक०	सेधति	म० सेधसि	उ० सेधामि
द्वि०	सेधतः	सेधथः	सेधावः
बहु०	सेधन्ति	सेधथ	सेधामः

शुच् (To regret) प० लट्

१म, पु० एक०	शोचति	म० शोचसि	उ० शोचामि
द्वि०	शोचतः	शोचथः	शोचावः
बहु०	शोचन्ति	शोचथ	शोचामः

वृत् (To be) आ०

१म, एकवचन	वर्तते	म० वर्तसे	उ० वर्ते

गम् गच्छ (To go) प० लट्

१म, पु० एक०	गच्छति	म० गच्छसि	उ० गच्छामि
द्वि०	गच्छतः	गच्छथः	गच्छावः
बहु०	गच्छन्ति	गच्छथ	गच्छामः

लङादयः पूर्ववत् ।

दृश् [To see] प० लट्

१म, पु० एक०	पश्यति	म० पश्यसि	उ० पश्यामि
द्वि०	पश्यतः	पश्यथः	पश्यावः
बहु०	पश्यन्ति	पश्यथ	पश्यामः

क्रम [To walk] लट्

१म, पु० एक० क्राम [म्य] ति, म० क्राम० [म्य] सि, उ० क्रामा [म्या] मि

---

* लडादि] चार विभक्तियों में "गम्" को "गच्छ" "दृश्" "पश्य" क्रम को "क्राम" काम्य, सद को 'सीद' दा को यच्छ और 'ष्ठिव्' को ष्ठीव् होता है ।

षद् (To sit perish) प० लट्

१म, पु० एक०	सीदति	म० सीदसि	उ० सीदामि

ष्ठिव (To spit) प० लट्

१म, पु० एक०	ष्ठीवति	म० ष्ठीवसि	उ० ष्ठीवामि

दा [To give] प० लट्

१म, पु० प०	यच्छति	म० यच्छसि	उ० यच्छामि

स्था [To sit] प० लट्

१म, पु० एक०	तिष्ठति	म० तिष्ठसि	उ० तिष्ठामि
	तिष्ठतः	तिष्ठथः	तिष्ठावः
	तिष्ठन्ति	तिष्ठथ	तिष्ठामः

पा [To drink] प० लट्

१म, पु० एक०	पिबति	म० पिबसि	उ० पिबामि

* घ्रा [To smell] प० लट्

१म, पु० एक०	जिघ्रति	म० जिघ्रसि	उ० जिघ्रामि

ध्मा [To blow] प० लट्

१म, पु० एक०	धमति	म० धमसि	उ० धमामि

म्ना [To rember]

१म, पु० एक०	मनति	म० मनसि	उ० मनामि

आ+चम [To sip] प० लट्

१म, पु० एक०	आचामति	म० आचामसि	उ० आचामामि

गुह [To hide] प० लट्

१म, पु० एक०	गुहति	म० गुहसि	गुहामि

२ अदादि गण

अद् [To eat] प० लट् (present)

१म, पु० एक०	अत्ति	म० अत्सि	उ० अद्मि

* लडादि चार विभक्तियों में "घ्रा" को "जिघ्र" "ध्मा" को धम और म्ना" को मन होता है ॥

द्वि०	अत्तः	अत्थः	अद्वः
बहु०	अदन्ति	अत्थ	अद्मः

लोट् [Imperative]

१म, पु० एक०	अत्तु [त्तात्]	म० अद्धि [अत्तात्]	उ० अदानि
द्वि०	अत्ताम्	अत्तम्	अदाव
बहु०	अदन्तु	अत्त	अदाम

लङ् [First Preterite]

१म, पु० एक०	आदत्	म० आदः	उ० आदम्
द्वि०	आत्ताम्	आत्तम्	आद्व
बहु०	आदन्	आत्त	आद्म

विधिलिङ् (Potential]

१म, पु० एक०	अद्यात्	म० अद्याः	उ० अद्याम्
द्वि०	अद्याताम्	अद्यातम्	अद्याव
बहु०	अद्यन	अद्यात्	अद्याम

आस [To sit] आ० लट्

१म, पु० एक०	आस्ते	म० आस्से	उ० आसे
द्वि०	आसाते	आसाथे	अस्वहे
बहु०	असते	आध्वे	आस्महे

लोट् [Imperaiv]

१म. पु० एक०	आस्ताम्	म० आस्स्व	उ० आसै
द्वि०	आसाताम्	आसाथाम्	आसावहै
बहु०	आसताम्	आध्वम्	आसामहै

लङ् [First Preterite]

१म, पु० एक०	आस्त	म० आस्थाः	उ० आसि
द्वि०	आसाताम्	आसाथाम्	आस्वहि
बहु०	आसत	आध्वम्	आस्महि

विधिलिङ् (Potential)

१म, पु० एक०	आसीत	म० आसीथाः	आसीय
द्वि०	आसीयाताम्	आसीयाथाम	आसीवहि
बहु०	आसीरन्	आसीध्वम्	आसीमहि

या [To go] लट्

१म, पु० एक०	यति	म० यासि	उ० यामि

लोट् (Imetative)

१म, पु० एक०	यातु (तात्)	याहि (तात्)	उ० यानि

लङ् (First Preterite)

१म, पु० एक०	आयात	म० अयाः	उ० अयाम्
द्वि०	अयाताम्	अयातम्	अयाव
बहु०	आयुः	अयात	अयाम्

विधिलिङ् (Potential)

१म, पु० एक०	यायात	म० यायाः	उ० आयाम्

द्विष (To hate) प० लट् (Present)

१म, पु० एक०	द्वेष्टि	म० द्वेक्षि	उ० द्वेष्मि
द्वि०	द्विष्टः	द्विष्टः	द्विष्वः
बहु०	द्विषन्ति	द्विष्ट	द्विष्मः

लोट् (Imperative)

१मं, पु, एक०	द्वेष्टु (द्विष्टात)	म० द्विड्ढि (ष्टात)	उ० द्वेषाणि
द्वि०	द्विष्टाम्	द्विष्टम्	द्वेषाव
बहु०	द्विषन्तु	द्विष्ट	द्विषाम

लङ् (First Preterite)

१म, पु० एक०	अद्वेड (ड्)	म० अद्वेट् (ड्)	उ० अद्विषम्
द्वि०	अद्विष्टाम्	अद्विष्टम्	अद्विष्व
बहु०	अद्विषुः	अद्विष्ट	अद्विस्म

विधिलिङ् (Potential)

१म, पु० एक० द्विष्यात् म० द्विष्याः उ० द्विष्याम्

(३) जुहोत्यादि वा (यवादि) ।

हु (To sacrifice) प० (Present)) लट् ।

१म, पु० एक०	जुहोति	म० जुहोषि	उ० जुहोमि
द्वि०	जुहुतः	जुहुथः	जुहुवः
बहु०	जुव्हति	जुहुथ	जुहुमः

लोट् (Imperative)

१म, पु० एक०	जुहोतु (तात्)	म० जुहुधि (तात्)	उ० जुहवानि
द्वि०	जुहुताम्	जुहुतम्	जुहवाव
बहु०	जुव्हतु	जुहुत	जुहवाम

लङ् (First Preterite)

एकवचन	प्र० अजुहोत्	म० अजुहोः	उ० अजुहवम्
द्विवचन	अजुहुताम्	अजुहुतम्	अजुहुव
बहुवचन	अजुहवुः	अजुहुत	अजुहुमः

विधिलिङ् (Potential)

एकवचन	प्र० जुहुयात्	म० जुहुयाः	उ० जुहुयाम्
द्विवचन	जुहुयाताम्	जुहुयातम्	जुहुयाव
बहुवचन	जुहुयुः	जुहुयात	जुहुयाम

ह्री (To be modest) लट् (Prosent)

एकवचन	प्र० जिह्रेति	म० जिह्रेषि	उ० जिह्रेमि
द्विवचन	जिह्रीतः	जिह्रीथः	जिह्रीवः
बहुवचन	जिह्रियन्ति	जिह्रीथ	जिह्रीमः

भी (To fear) प० लट् (Presrnt)

एकवचन	प्र० बिभेति	म० बिभेषि	उ० बिभेमि
द्विवचन	बिभीतः	बिभीथः	बिभीवः
बहुवचन	बिभ्यति	बिभीथ	बिभीमः

भृ (To dear fill)

एकवचन	प्र० बिभृात	म० बिभर्षि	उ० बिभर्मि
द्विवचन	बिभृतः	बिभृथः	बिभृवः
बहुवचन	बिभ्रति	बिभृथ	बिभृमः

उभयपदी

दा (To give) धा (To run)

एकवचन प० प्र०	ददाति	म० ददासि	उ० ददामि
द्विवचन	दत्तः	दत्थः	दद्वः
बहुवचन	ददन्ति	दत्थ	दद्मः
आ० एक०	प्र० दत्ते	म० दत्से	उ० ददे
द्वि०	ददाते	ददाथे	उद्वहे
बहु०	ददते	दद्ध्वे	दद्महे
प० १म, एक०	प्र० दधाति	म० दधासि	उ० दधामि
द्वि०	धत्तः	धत्थः	दध्वः
बहु०	दधति	धत्थ	दध्मः

दा, धा, लोट् (Imperative)

म० एक०	देहि	धेहि	ददानि (दधानि)

हा० उभ० (To give way) प० लट् (present)

१म, एक०	जहाति	म० जहासि	उ० जहामि
द्वि०	ज (हि) हितः	जहि (ही) था	जहि (ही) वः
बहु०	जहति	जहि (ही) थ	जहि (ही) मः

लोट् (Imperative)

आ० एक०	जहातु (जहितात्)	म० जहि (जहितात्)	उ० जहानि
द्वि०	जहि (हो) ताम्	जहि (ही) तम्	जहीव
बहु०	जहतु	जहि (ही) त	उ० जहीम
आ० १म, एक०	जहिताम	म० जहि (ही) थाः	उ० जहै

लङ् (First preterite)

प० १म, एक०	अजहात्	म० अजहाः	उ० अजहम्

विधिलिङ् (Potential

आ० मा, एक० जह्यात् म० जह्याः उ० जह्याम्

४ दिवादि गण।

दिव् (To play) सिव् (To sew)

१म, एक० दीव्यति म० दीव्यसि उ० दीव्यामि (एवं) सीव्यति

* जन् (To be born) आ० व्यध् (To kill) प०

† जॄ (To grow old) दृ (To kear)

१म, एक० जीर्यति दीर्यति

‡ सो (To destroy) प० लट्

१म, एक० स्यति म० स्यसि उ० स्यामि

---

५ स्वादि गण।

१—लडादि चार विभक्तियों में स्वादि गणीय धातुओं के उत्तर नु आगम लगता है ॥

२— ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, इन दस विभक्तियों में "नु" को 'नो' होता है ॥

सु (To extract the soma juice) उ० लट्

प० १म, एक० सुनोति म० सुनोषि उ० सुनोमि
आ० १म, सुनुते सुनुषे सुन्वे

लोट् (Imperative)

प० १म, एक० सुनोतु (तात्) म० सुनु (ताम्) उ० सुनवानि
आ० १म, एक० सुनुताम् सुनुष्व सुनवै

---

* लडादि चार विभक्तियों में जन को जा व्यध् को विध होता है।

† लडादि चार विभक्तियों में ॠ ईर होता है ॥

‡ लडादि चार विभक्तियों में ओ का लोप होता है ॥

लङ् (First preterite)

उ० प्र० असुनोत्, (नुत)	म० असुनोः (नुथाः)	उ० असुनव (न्वि)
द्वि० असुनुतान् (न्वाताम्)	असुनुत (न्वाथाम्)	असुनुव (न्वहि)
बहु० असुन्वन् (न्वत)	असुनुत (असुनुध्व)	असुनुम (न्महि)

विधि लिङ् (Potential)

प्र० उ० एक० सुनुयात्	म० सुनयाः	उ० सुनुयाम
आ० १या, एक० सुन्वीत	सुन्वीथाः	सुन्वीथ
द्वि० सुन्वीयाताम्	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीवहि
बहु० सुन्वीरन्	सुन्वीध्वम्	सुन्वीमहि

* आप (To obtain) प०

१म, एक० आप्नोति	म२ आप्नोषि	उ० आप्नोमि
द्वि० अप्नुत;	अप्नुथः	आप्नुवः
बहु० आप्नुवन्ति	अप्नुथ	आप्नुमः

लोट् (Imperative)

१म, एक० आप्नोतु (तात्) म० आप्नुहि उ० आप्नुवानि

लङ् (First preterite)

१म, एक० आप्नोत् म० आप्नोः उ० आप्नुवम्

विधि लिङ (Potential)

१म, एक० अप्नुयात् म० आप्नुयाः उ० आप्नुयाम्

अश् (To eat)

१म, पु० एक० अश्नुते	म० अश्नुषे	उ० अश्नुवे
द्वि० अश्नुवाते	अश्नुवाथे	अश्नुवहे
बहु० अश्नुवते	अश्नुध्वे	अश्नुमहे

* जब नु हल् से संयुक्त हो तो आनि, आव, आम, पे, आव है आम है, अम् (न्त) विभक्तियों में न नुव होता है ॥

लङ् (Imperative)

१म, एक०	अश्नुताम्	म० अश्नुष्व	उ० अश्नुवै
द्वि०	अश्नुवाताम्	अश्नुवाथाम्	अश्नुवावहै
बहु०	अश्नुवताम्	अश्नुध्वम्	अश्नुवामहै

लङ् (First pretterite)

१म, एक०	आश्नुत	म० आश्नुथाः	उ० आश्नुवि
द्वि०	आश्नुताम्	आश्नुवाथाम्	आश्नुवहि
बहु०	आश्नुवन्	आश्नुवध्वम्	आश्नुमहि

विधिलिङ् (Potential) आ०

१म, एक०	आश्नुवीत	आश्नुवीथाः	उ० आश्नुवीय
द्वि०	अश्नुवीयाताम्	अश्नुवीयाथाम्	आश्नुवीवहि
बहु०	अश्नुवीरन्	अश्नुवीध्वम्	अश्नुवीमहि

श्रु (To hear) प० लट्

१म, एक०	शृणोति	म० शृणोषि	उ० शृणोमि

लोट् (Imperative)

१म, एक०	शृणोतु (तात्)	म० शृणु (तात्)	उ० शृणवानि

लङ् (First preterite)

१म, एक०	अशृणोत्	म० अशृणोः	उ० अशृणवम्

विधिलिङ् (Potential)

१म, एक०	शृणुयात्	म० शृणुयाः	उ० शृणुयाम्

तुदादि ।

तुद् (To strike) लट् उभ०

१म, एक०	तुदति (ते)	म० तुदसि (से)	उ० तुदामि (तुदे)

लोट् (Imperative)

१म, एक०	तुदतु (ताम्)	म० तुद (तुदस्व)	उ० तुदानि (तुदै)

(तुद् उभ० लङ् First Preterite)

१म, एक०* अतुदत् (त) म० अतुदः (दथाः) उ० अतुदम् (तुदि)

प्रच्छ् प० (To ask)

१म, एक० पृच्छति म० पृच्छसि उ० पृच्छामि

लङ् (First Preterite)

१म, एक० अपृच्छत् म० अपृच्छः उ० अपृच्छम्

लोट् (Imperative)

१म, एक० पृच्छतु (तात्) म० पृच्छ (तात्) उ० पृच्छानि

विधिलिंग (Potential)

१म, एक० पृच्छेत् म० पृच्छेः उ० पृच्छेयम्

इष् प० (इच्छ) (To wish)

१म, एक० इच्छति म० इच्छसि उ० इच्छामि

लोट् (Imperative)

१म, एक० इच्छतु (तात्) म० इच्छ (तात्) उ० इच्छानि

लङ् (First Preterite)

१म, एक० ऐच्छत् ऐच्छः उ० ऐच्छम्

विधिलिंग (Potential)

१म, एक० इच्छेत् म० इच्छेः उ० इच्छेयम्

*मृ (To die) आ०

१म, एक० म्रियते म० म्रियसे उ० म्रिये

लङ् (First preterite)

१म, एकवचन अम्रियत म० अम्रियथाः उ० अम्रिये

द्विवचन अम्रियेताम् अम्रियेथाम् अम्रियावहि

बहुवचन अम्रियन्त अम्रियध्वम् अम्रियामहि

---

* लङ़ादि चार और आशीर्लिंग आत्मनेपद होकर ऋ को रिय होता है और शेष लकारों में परस्मैपद होता है ॥

लोट् (Imperative)

१म, एक० म्रियताम् म० म्रियस्व उ० म्रियै

विधिलिङ् (Potential)

१म, एक०	म्रियेत	म० म्रियेथाः	उ० म्रियेय
द्वि०	म्रियेयाताम्	म्रियेयाथाम्	म्रियेवहि
बहु०	म्रियेरन्	म्रियेध्वम्	म्रियेमहि

रुधादिगण।

रुध् उभ० (Check)

१म, एक०	रुणद्धि (रुन्धे)	म० रुणत्सि (रुन्त्से)	उ० रुणध्मि (रुन्धे)
द्वि०	रुन्धः (रुन्धाते)	रुन्धथः (रुन्धाथे)	रुन्ध्वः (रुन्ध्वहे)
बहु०	रुन्धन्ति (रुन्धते)	रुन्धथ (रुन्ध्वे)	रुन्ध्मः (रुन्ध्महे)

लोट् (Imperative)

१म, एक०	रुणद्धु (रुन्धतां)	म० रुन्धि (रुन्त्स्व)	उ० रुणधानि (रुणधै)
द्वि०	रुन्धाम् (रुन्धाताम्)	रुन्धम् (रुन्धाथाम्)	रुणधाव (रुणधावहै)
बहु०	रुन्धन्तु (रुन्धन्ताम्)	रुन्ध (रुन्धध्वम्)	रुणधाम् (रुणधामहै)

लङ् (First Preterite)

१म,	अरुणत् (अरुन्ध)	अरुन्धः (अरुन्त्स्व)	अरुणम् (अरुन्धि)
द्वि०	अरुन्धाम् (अरुन्धातां)	अरुन्धतं (अरुंधाथां)	अरुन्ध्व (अरुन्ध्वहि)
बहु०	अरुन्धन् (अरुन्धत)	अरुन्धत (अरुन्ध्व)	अरुन्ध्म (अरुन्धमहि)

विधि-लिङ् (Potential)

१म,	अरुन्ध्यात् (रुन्धीत)	म० रुन्ध्याः (रुन्धीथाः)	उ० रुन्ध्याम् (रुन्धि)
द्वि०	रुन्ध्याताम् रुन्धीयाताम्	रुन्ध्यातम रुन्धीयाथां	रुन्ध्याव रुन्धविा
बहु०	रुन्ध्युः (रुन्धीरन्)	रुन्ध्यात् (रुन्धीध्वे)	रुन्ध्याम् (रुन्धीमहि)

भुज आ० (To eat and drink)

१म, एक०	भुङ्क्ते	म० भुङ्क्षे	उ० भुञ्जे
द्वि०	भुञ्जाते	भुञ्जाथे	भुञ्ज्वहे
बहु०	भुञ्जते	भुङ्ग्ध्वे	भुंञ्ज्महे

हिंसा (To kill)

१न, एक०	हिनस्ति	हिंससि	उ० हिंस्मि
द्वि०	हिंस्तः	हिंस्थः	हिंस्वः
बहु०	हिंसन्ति	हिंस्थ	हिंस्मः

तनादि गणः ।

*तन (To spread) उभ० लट् (present)

१म, एक० तनोति (तुने) म० तनोषि (षे) उ० तनोमि (न्वे)

लोट् (Imperative)

१म, एक० तनोतु (ताम्) म० तनु (तनुष्व) उ० तनवानि (तनवै)

द्वि० तनुताम (तान्वाथां) तनुतम (तन्वाथां) तनवाव (तनवावहै)

बहु० तन्वन्तु (तन्वताम) तनुत (तनुध्वम) तनवाम (तनवामहै)

लङ् (First Preterite)

१म, एक० अतनोत् (तुन) म० अतनोः (नुथाः) अतनुवम (तन्वि)

द्वि० अतनुताम (न्वीताम) अतनुतम (न्वाथाम) अतनुव (अतनुहि)

बहु० अतन्वन (न्वत) अतनुत (नुध्वम) अतनुम (अतनुमहि)

विधिलिंग (Potential)

१म, एक० तनुयात् (न्वीत) म० तनुयाः (न्वीथाः) उ० तनुयाम (न्वीय)

द्वि० तनुयाताम (न्वीयाताम) तनुयातं (न्वीयाथाम) तनुयाव (न्वीवहि)

बहु० तनुयुः (तन्वीरन्) तनुयात (न्वीध्वम) तनुयाम (न्वीमहि)

कृ उभ० (To do)

१म, एक०	करोति (कुरुते)	म० करोषि (कुरुषे)	उ० करोमि (कुर्वे)
द्वि०	कुरुतः (वाते)	कुरुथः (वाथे)	कुर्वः (वहे)
बहु०	कुर्वन्ति (र्वते)	कुरुथ (कुरुध्वे)	कुर्मः (र्महे)

लोट् (Imperative)

१म, एक० करोतु (कुरुताम) म० कुरु (कुरुष्व) उ० करवाणि (करवै)

*लटादि चार विभक्तियों में तनादिगणीय धातुओं के उत्तर 'उ' होता है

द्वि० कुरुताम् (कुर्वाताम्) कुरुतं (कुर्वाथाम्) कुरुवाव (कुर्वावहै)
बहु० कुर्वन्तु (कुर्वताम्) कुरुत (कुरुध्वम्) कुरुवाम् (कुर्वामहै)

लङ् (First Preterite)

१म, एक० अकरोत् (अकुरुत) म० अकरो (अकुरुथाः) उ० अकुरवम् अकुर्वि
द्वि० अकुरुताम् (अकुर्वातां) अकुरुतं (अकुर्वाथाम्) अकुर्व (अकुर्वहि)
बहु० अकुर्वन् (अकुर्वत) अकुरुत (अकुरुध्वम्) अकुर्म (अकुर्महि)

विधिलिङ् (Potential)

१म, एक० कुर्यात् (कुर्वीत) म० कुर्याः (कुर्वीथाः) उ० कुर्याम् (कुर्वीय)
द्वि० कुर्याताम् (कुर्वीयाताम्) कुर्यातम् (कुर्वीयाथाम्) कुर्याव (कुर्वीवहि)
बहु० कुर्युः (कुर्वीरन्) कुर्यात (कुर्वीध्वम्) कुर्याम (कुर्वीमहि)

९ क्र्यादि । १ क्री (To buy)

१म, एक० क्रीणाति (णीते) म० क्रीणासि (णीषे) उ० क्रीणामि (णे)
द्वि० क्रीणीतः (णाते) क्रीणीथः (णाथे) क्रीणीवः (णीवहे)
बहु० क्रीणन्ति (णते) क्रीणीथ (क्रीणीध्वे) क्रीणीमः (णीमहे)

लोट् (Imperative)

१म, क्रीणातु (क्रीणीताम्) म० क्रीणीहि (णीष्व) उ० क्रीणानि (क्रीणै)
द्वि० क्रीणीताम् (क्रीणातां) क्रीणीतम् (क्रीणाथाम्) क्रीणाव (णावहै)
बहु० क्रीणन्तु (क्रीणताम्) क्रीणीत (णीध्वम्) क्रीणाम (णामहै)

लङ् (First Preterite)

१म, अक्रीणात् (णीत) म० अक्रीणाः (णीथाः) उ० अक्रीणाम् (अक्रीणि)
द्वि० अक्रीणीताम् (णातां) अक्रीणीतम् (णाथां) अक्रीणीव (णीवहि)
बहु० अक्रीणन् (अक्रीणत) अक्रीणीत (णीध्वम्) अक्रीणीम (णीमहि)

विधिलिङ् (Potential)

१म, क्रीणीयात् (णीत) म० क्रीणीयाः (णीथाः) उ० क्रीणीयाम् (णीय)
द्वि० क्रीणीयाताम् (,,) क्रीणीयातम् (णीयाथाम्) क्रीणीयाव (णीवहि)
बहु० क्रीणीयुः (णीरन्) क्रीणीयात (णीध्वम्) क्रीणीयाम (णीमहि)

*लडादि चार विभक्तियों में क्र्यादि धातुओं के उत्तर 'ना' आता है

अश् (To eat) लट् (Present)

१म, एक० अश्नाति म० अश्नासि उ० अश्नामि

द्वि० अश्नीतः अश्नीथः अश्नीवः

बहु० अश्नन्ति: अश्नीथ अश्नीम

२ अभ भिन्न स्वर परे हो तो ना के आ का लोप होता है ॥

३ ति, सि, मि, नि, द, स् भिन्न व्यञ्जन वर्ण परे हो तो "ना" को "नी" होता है ॥

लोट् (Imperative)

१म, एक० अश्नातु म० अशान उ० अश्नानि

द्वि० अश्नीताम् अश्नीतम् अश्नीव

बहु० अश्नन्तु अश्नीत अश्नीम

† ग्रह (To take) उभ०

१म, गृह्णाति (ह्णीते) म० गृह्णासि (ह्णीषे) उ० गृह्णामि (गृह्णे)

द्वि० गृह्णीतः (ह्णाते) गृह्णीथः (ह्णाथे) गृह्णीवः (गृह्णीवहे)

बहु० गृह्णन्ति (ह्णते) गृह्णीथ (ह्णीध्वे) गृह्णीमः (गृह्णीमहे)

१म, जानाति जानासि जानामि

पु० (To Purify)

म० पुनाति (नीते) स० पुनासि (नीषे) उ० पुनामि (पुने)

१० चुरादि गण ।

चु (To steal) लट् प०

प० १म, चोरयति म० चोरयसि उ० चोरयामि

भक्ष (To eat) लट् (Present tense)

	लट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्
१म, एक०	भक्षयति	अभक्षयत	भक्षयतु	भक्षयेत

*हि विभक्ति में व्यञ्जन वर्ण के पर स्थित ना आन होता है ॥

† लटादि चार विभक्तियों में ग्रहि 'को' 'गृह' और ज्ञा का 'जा' होता है

चिन्त (To think) पं०

१म, एक० 	चिन्तयति 	चिन्तयतु 	अचिन्तयत् 	चिन्तयेत्

लिट्, लुट्, ऌट्, लुङ् और लृङ्,

उक्त विभक्तियों में धातु के *अन्त्य स्वर और उपधास्वर को गुण होता है ॥

सेव आ० (To Serve) लिट् (Second Preterite)

१म, एक०	सिषेवे	म० सिषेविषे	उ० सिषेवे
द्वि०	सिषेवाते	सिषेवाथे	सिषेविवदे
बहु०	सिषेविरे	सिषेविध्वे (ढ्वे)	सिषेविमदे

लुट् (First Future)

१म, एक० 	सेविता 	म० सेवितासे 	सेविताहे

लृट् [Second Preterite]

१म, एक० 	सेविष्यते 	म० सेविष्यसे 	उ० सेविष्ये

लृङ् (Third Preterite)

१म, एक० 	असेविष्यत 	म० असेविष्यथाः 	उ० असेविष्ये

लुङ् (Third Preterite)

१म, एक० 	असेविष्ट 	असेविष्ठाः 	उ० असेवि

धाव उभ० (To run) लिट्

१म, एक० 	दधाव [वे] 	म० दधविथ 	उ० दधाव [वे]

लुट् (First Preterite)

१म, एक० 	धाविता 	धावितासि [से] 	धावितास्मि [ताहे]

लृट् [Second Future]

१म, एक० धाविष्यति [ते] 	धाविष्यसि [से] 	धाविष्यामि [ष्ये]

लिट् लुट् लृट् लिङ् लृङ्

जि [To win] जिगाय जेता जेष्यति जीयात् अजेषीत् अजेष्यत्

---

*अन्त स्थित दीर्घ "ऊ" ह्रस्व होता है ॥

स्मृ (To remember) सस्मर, स्मर्ता, स्मरिष्यति स्मर्यात् अस्मार्षीत् अस्मरिष्यत् ॥

सिध् (To accomplish) सिषेध, सेधिता, सेत्स्यति, सिध्यात् असेधीत् असेधिष्यत् ॥

शुच् (To regret) शुशोच, शोचिता, शोचिष्यति, शुच्यात् अशोचत् अशोचिष्यत् ॥

वृत् (To act) ववृते वर्तिता वे वर्तिष्यते वृत्यात् अवर्तिष्ट अवर्तिष्यत्

गम् (To go) जगाम, गन्ता, गमिष्यति, गम्यात् अगमद् अगमिष्यत्

दृश (To see) ददर्श द्रष्टा द्रक्ष्यति दृश्यात् अद्राक्षीत् अदर्शत् अद्रक्ष्यत्

क्रम (To walk) (चक्राम) क्रमिता, क्रमिष्यति क्रम्यात् अक्रमीत् अक्रमिष्यत्

सीद् (To sit) ससाद सेत्ता सेदिष्यति सीदेत् असेदीत् असेदिष्यत्

दो (To give) ददौ दाता दास्यति देयात् अदासीत् अदास्यत्

स्था (To sit) तस्थौ स्थाता स्थास्यति स्थेयात् अस्थासीत् अस्थास्यत

पा (To drink) पपौ पाता पास्यति पेयात् अपात् अपास्यत्

घ्रा (To smell) जघ्रौ घ्राता घ्रास्यति घ्रयात अघ्रासीत् अघ्रास्यत्

ध्मा (To blow) दध्मौ, ध्माता ध्मास्यति ध्मेयात् अध्मासीत् अध्मास्यत्

म्ना (To remember) मम्नौ म्नाता म्नास्यति म्नेयात् अम्नासीत् अम्नास्यत् ॥

२ अदादि गण ।

अद (Eat) आद (जघास) अत्ता अत्स्यति अद्यात् अघसत् आत्स्यत्

आस (To sit) आसाञ्चक्रे आसिता आसिष्यते आसिषीष्ठ आसिष्ट आसिष्यत

या (To go) ययौ याता यास्यति यायात् अयासीत अयास्यत्

द्विष् उ० (To hate) दिद्वेष (दिद्विषे) द्वेष्टा (टे) द्वेक्ष्यते (ति) द्विक्षीष्ट अद्वैक्षीत् अद्वेक्ष्यत् (द्विष्यात्) अद्विक्षत (७ । ३ । ८८१)

जुहोत्यादि गण।

हु (To sacrilce) जुहाव होता होष्यति हूयात् अहौषीत् अहोष्यत्
ह्रि (To be modest) जिह्राय, ह्रेता, ह्रेष्यति ह्रीयात् अह्रैषीत् अह्रैष्यत्
जिह्रियांचकार (बभूव, मास)
भी (To fear) बिभाय भेता भेष्यति भीयात् अभैषीत् अभेष्यत्
बिभियाञ्चकार (बभूव मास)
भृ (To bear) बभार भर्ता भरिष्यति भ्रियात् अभार्षीत् अभरिष्यत्
(बिभराम्मास) बिभराञ्चकार) (बिभराम्बभूव)
दा (To give) ददौ दाता दास्यति देयात् अदासीत् अदास्यत
(ददे) (से) (ते) दासीष्ट अदास्त अदास्यत
धा (To put) दधौ (दधे) धाता (से) धास्यति (ते) धेयात् धासीष्ट अधास्यत्
हा (To give way) जहौ हाता हास्यति हेयात् अहासीत् अहास्यत्

दिवादि गण।

दिव (To play) दिदेव देविता, देविष्यति दीव्यात् अदेवीत् अदविष्यत
जन (To be born) यज्ञ जनिता, (से) जनिष्यति, (ते) अजनिष्ट
अजनि, अजनिष्यत् ॥
सिव (To sew) सिषेव सेविता सेविष्यति असेवीत् असेविष्यत ।
व्यध् (To beat) विव्याध, व्यद्धा, व्यत्स्यति विध्यात, अव्यात्सीत, अव्यत्स्य
जॄ (To becomeold) जजार, जरि(री)ता, जरिष्यति, जीर्यात, अजारीत्
अजरिष्यत् ।
दृ (To tear) ददार (दरिरी) ता, दरिष्यति दीर्यात अदारीत अदरिष्यत
सो (To kill) ससौ सोता, सोष्यति, सेयात असावीत असोष्यत

स्वादि गण।

सु (To excract) सुषाव, सविता, सोष्यति, सोयात, असावीत, असो-
ष्यत (सुषवे) (से) (सोष्यते) (सुयात) (असोष्ट) (असोष्यत)
आप (To obtain आप, प्ति, आप्स्यात, आप्यत् आपत् आप्स्यत्

अश (To pervade) आनशे अशिता, [अष्टा] अशिष्यते आशिषीष्ट
श्रु (To hear) शुश्राव श्रोता श्रोष्यति श्रूयात् अश्रौषीत् अश्रोष्यत्

६ तुदादि गण ।

तुद (To give pain) तुतोद तोत्ता (तोत्स्यति) तुद्यात् अतौत्सीत् अतुदिष्यत तुतुदे तोत्ता (से, तोदिष्यते तौत्सीष्ट (अतुत्त) [स्यते] ॥
प्रच्छ (To ask) पप्रच्छ पृष्टा प्रक्ष्यति पृच्छ्यात् अप्राक्षीत् अप्राक्ष्यति
इष् (To wish) इयेष इषिता, एष्टा एष्यति इष्यात् ऐषीत् ऐषिष्यत्
मृ (To die) ममार मर्ता मरिष्यते मृषीष्ट अमृत अमरिष्यत्

७ रुधादि गण ।

रुध् उभ० (To cheak रुरोध [रुरुधे] रुद्धा, रोत्स्यति (ते) रुध्यात् [रुन्धीत] अरौत्सीत, [अरुद्ध] अरोत्स्यत [त]

८ तनादि गण ।

तन उभ० (To expand) ततान [तेने] तनिता [से] तनिष्यति [ते] तन्यात् [तन्वीत] अत [त] नीत अतनिठ अतनिष्यत् [त]
कृ उभ० (To be) चकार [चक्र] कर्तासि, [से] करिष्यति, [ते] कुर्यात् अकार्षी [अकरिष्यत] अकृषीष्ट अकृत अकरिष्यत [त]

९ क्र्यादि गण ।

क्री (To buy) चिक्राय [क्रये] क्रेष्यति [ते] क्रीयात् अक्रिष्ट [अक्रिषीत] अक्रिष्ट अक्रिष्यत् [त] ॥
अश (To eat) आश अशिता अशिष्यति अश्यात् आशीत आशिष्यत्
ग्रह (To take उभ० जग्राह जगृहे ग्रहितासि [से] ग्रहीष्यति [त] गृह्यात् अग्रहिषीष्ट अग्रहीत् अग्रहीष्ट अग्रहीष्यत् [त]

१० चुरादि गण ।

चोरी उभ० (To steal) चोरयां चकार [बभूव] [मास] [चक्रे] चोरयिता [से] चोरयिष्यति [ते] चोर्यात् अचोरीत् अचुरत् [त] अचोरिष्यत् [त]

णिजन्त प्रकरणम् (Cansative verbs)

१ प्रेरणार्थ में धातु के उत्तर णिच्="इ" होता है। वह धातु उभय-पदी होता है॥

२ णिजन्त धातु के अन्त्य स्वर और उपधा अ को वृद्धि होती है। यथा-श्रु+इ=श्रावि, कृ+इ=कारि, हृ+इ=हारि आदि धातु हो जाते हैं। लिपि+इ=लेपि, सिच+इ=सेचि। मुच+इ=मोचि, आदि॥

४ णिजन्त की हि धातु संज्ञा होती है। यथा, कारि, श्रावि यह धातु गिने जांयगे, कृ, श्रु नहीं॥

५ लडादि चार विभक्तियों में णिजन्त धातुः स्वादि गणीय धातुओं के तुल्य होते हैं॥

श्रावि।

लट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
श्रावयति	श्रावयतु	अश्रावयत्	श्रावयेत्

६ अमन्त तथा घटादि णिजन्त धातुओं में वृद्धि नहीं होती अमन्त गम, गमयति। दम, दमयति। रम, रमयति। शम् शमयति। आदि घटयति। व्यथयति, जनयति, त्वरयति आदि॥

७ णिजन्त जागृ और जृ को गुण नहीं होता। जागरयति जारयति॥

८ णिजन्त हन को घात, दुष को दूष, इ को आप् होता है। यथा—हन्+घातयति, दुष+दूषयति, अधि+इ=अध्यापयति इत्यादि॥

६ णिजन्त 'रुह' को रोप विकल्प से होता है। यथा—रुह, रोहयति रोपयति॥

१० णिजन्त प्री और धू के उत्तर विकल्प से न होता है, यथा—प्रीणयति, प्रापयति। धनयति। धावयीत॥

११ णिजन्त ऋ ह्री और आकारान्त धातुओं के उत्तर "प" होता है। यथा—ऋ, अर्पयति, ह्री ह्रेपयति, स्था, स्थापयति ख्या, ख्यापयति, ज्ञापयति इत्यादि॥

१२ णिजन्त पानार्थ "पा" के उत्तर "य" रक्षार्थ "पा" के उत्तर ल लगता है। पाययति=पालयति आदि॥

लुट्	लृट्	लङ्	आशीर्लिङ्	लिट्
भावयिता	भावयिष्यति	अभावयिष्यत्	भाव्यात्	भावयांचकार

लुङ् में णिजन्त धातु के उत्तर अ लगता है और धातु अभ्यस्त होकर लिट के सब कार्यों को प्राप्त होता है॥

१४ अ परे होने से णिजन्त के अन्त की "इ" लुप्त होती है। उपधा गुरु स्वर लघु होता है॥

१५ लुङ् में णिजन्त के पूर्वभाग का लघु स्वर गुण होता है॥

सेचि, चेलि	भेदि. पाति	मोचि, भाजि	मानि, हासि
असीचिचत्	अबीभिदत्	असुसूचत्	अमीमनत्
अचीचलत्	अपीपतत्	अबीभजत्	अजीहसत्

सनन्त प्रकरणम् (Desiderative Verbs)

१ इच्छा अर्थ में धातु के उत्तर सन् होता है और "स" मात्र रह जाता है और सनन्त की धातु संज्ञा होती है॥

२ सन् परे होने से धातु के उत्तर "इ" होता है, परन्तु अनिट् के नहीं॥

३ सनन्त धातु अभ्यस्त होता है और सारे अभ्यस्त कार्य इसे होते हैं॥

४ सनन्त के पूर्व भाग को "अ" को इ होती है॥

पठ	वद्	जीव
लट्—पिपठिषति	विवदिषति	जिजीविषति

अनिट् 'नप्' निनसति 'दह' दिधक्षति 'पा' पिपासति, 'क्षुध्' क्षुभसति

५ रुद् विद और मुष को छोड़ सन्नन्त के आगे होने से उपधा लघु स्वर को गुण होता है। लिख, लिलेखिषति, शुभ' शुशोभिषति।

६ सन्नन्त ग्रह के उत्तर "इ" नहीं होता, यथा जिघृक्षति।

७ सन्नन्त, ग्रह स्वप् पृच्छ को यथाक्रम गृह, सु, और पृच्छ होते हैं। यथा—जिघृक्षति, स्वप्, सुषुप्सति, पृच्छ पिपृच्छिषति, गम, जिगमिषति॥

८ सन्नन्त जि को गि होता है। यथा—जिगीषति॥

९ सन्नन्त हन के ह को इं और ह को 'घ' होता है। यथा-हन् जिघांसति॥

१० सन्नन्त धातु के ऋ को ईर होता है, यथा—'कृ' चिकीर्षति धृ=दिधीर्षति तृ=तितीर्षति आदि॥

११ सन्नन्त अभ्यस्त दा, धा, आप् मारा और रभ के स्थान यथा क्रम दित्स धित्स इप्स मित्स, रिप्स होते है। दा, दित्सति धाधित्सति आप्=ईप्सति, मा=मित्सति रारिप्सते लभ-लिप्सते।

लिट्

१२ लिट में सन्नन्त धातु के उत्तर आम् और कृ, भू अस् होते हैं, चिकीर्षांबभूव (चकार) (मास) चिकीर्षिता चिकीर्षिष्यति चचिकार्षिष्यत् [लुङ्] अचिकीर्षीत् [आशी०] चिकीर्षिष्यति॥

यङन्त प्रकरणम् (Presentative verbs)

१ धातु के उत्तर पौन. पुन्य* और अतिशय† अर्थ में यङ् आता है। यङ का य मात्र रहता है, और आत्मनेपद की विभक्ति होती है॥

२ यङन्त भी स्वतन्त्र धातु होते हैं, और लडादि चार विभक्तियों में भ्वादिगणीय धातुओं की न्याई जाने जाते हैं॥

---

* Frepuency (again and again)

† Intensity of the action.

३ यङ् आने से धातु अभ्यस्त होते हैं, और अभ्यस्त कार्य को प्राप्त होते हैं।

४ यङन्त धातु के अभ्यास के "अ" को "आ" होता है, और उपधा स्वर,को गुण होता है यथा—लोंट् ला-लालप्यते, ता तातप्यते लष लालष्यत, शुच-शोचुच्यते, दिप्,देदाप्यते, लुप-लालुप्यते, रुद-रोरुद्यते, सिच-सेसिच्यते, भिद वेभिद्यते ॥

५यङान्त मान्त और लान्त धातुओं के पूर्व भाग के स्वर वर्ण के पीछे अनुस्वार होता है। जन्-जञ्जन्यते भन्-भन्भन्यते, क्रम-चंक्रम्यते, गम्-जङ्गम्यते ॥

ऋकारोपध और ऋकारान्त के पूर्व भाग की, ऋ को ईर होता है। यथा नृत-नरीनृत्यते,सृप-सरीसृप्यते,कृष्-चरीकृष्यते,कृ-चक्रीयते स्तृ-सेस्तीयते ॥

लुट्	लृट्	लृङ्	लिट्	लुङ्	आशीर्लिङ्
शोशुचिता	शोशुचिष्यते	अशोशुचिष्यत	शोशुञ्चकार (वभूव)	(मास)	

नाम धातु (Nominal or Denominative Verbs)

१ शब्द के आगे कई एक प्रत्यय लगते हैं तदन्त शब्द धातु संज्ञक होते हैं ॥

२ सर्वनाम धातुओं के भ्वादिगणीय धातुओं की नाईं रूप होते हैं

३ आत्मनेच्छा का ज्ञान हो, तो शब्द के आगे काम्यप्रत्यय लगता है तदन्त शब्द धातु संज्ञक होते हैं। यथा आत्मनः पुत्रमिच्छति पुत्रकाम्यति, धन-काम्यति, यशः काम्यति पुत्र काम्येत, पुत्रकाम्यतु, अपुत्रकाम्यत पुत्रकाम्यात। अपुत्रकाम्यीत,पुत्रकाम्याञ्चकार (वभूव) [मास] पुत्रकाम्यिता पुत्रकाम्यिष्यत अपुत्रकाम्यिष्यत ॥

४ अभि प्रति अति पूर्वक क्षिप प०। यथा-अभिक्षिपति, प्रतिक्षिपति, अतिक्षिपति ॥

५ प्र० पूर्वक वह प० । यथा—प्रवहति ॥

६ णिजन्त बुध् युध् नश, जन् और पाठनार्थक "इ" प० यथा—बोधयति, योधयति, नाशयति, जनयति, अध्यापयति ॥

७ णिजन्त भोजनार्थ और चलनार्थ धातुओं में परस्मैपद होता है । यथा—भोजयति, आशयति चलयति, कम्पयति ॥

८ अणिच् अवस्था में प्राणिकर्ता, हो तो अकर्मक णिजन्त परस्मैपद होता है । यथा–[प्राणि,पुत्रः शेते,माता पुत्रंशाययति शिशुर्जागर्ति, माता शिशु जागरयति, वत्सः क्रीडति, गोपीवत्संक्रीडयति ।

(Rules for use of Atmnepada) [आत्मनेपद]

१ निपूर्व विश आ० । यथाः—निविशते सन्मार्गम् ॥

२ विपरि अव पूर्वक क्री आ०— यथाः—विक्रीणीते परिक्रीणीते अवक्रीणीते इत्यादि ॥

३ आङ पूर्वक दा० आ० । आदते वस्त्रम् । विस्तार अर्थ में नहीं, यथा– व्याददाति मुखं सिंहः, कूलंव्याददाति नदी, विस्फोटकं व्याददाति वैद्यः ॥

४ आ अनु पूर्वक क्रीड आ० । क्रीडन अर्थ में नहीं यथा—आक्रीडते, परिक्रीडते, अनुक्रीडन्ति पक्षिणः ॥

५ आ पूर्वक प्रच्छ आ० । आपृच्छते बन्धून् ॥

६ प्र, अव सम् पूर्वक स्था आ० । यथा— प्रतिष्ठते वितिष्ठते अवतिष्ठते सन्तिष्ठते ॥

७ उत पूर्वक स्था आ० । यथा—उत्तिष्ठते ॥

८ पूजा,मिलन,मैत्री करण अर्थ में उपपूर्वक स्था० आ० । यथा [पूजा] वैष्णवः विष्णुमुपतिष्ठते[पूजयति]गंगा यमुनामुपतिष्ठते [मिलति] साधुः साधूमुपतिष्ठते [मैत्री करोति] ॥

९ लाभ इच्छा का बोध हो तो उप् पूर्वक स्था विकल्प से आत्मनेपद होता है । धनिनमुपतिष्ठते [ति] वा धनलाभेच्छा से, धनी के पास जाता है ॥

१० उप पूर्वक अकर्मक स्था आ० यथा भोजन समय उपतिष्ठते सकर्मक, यथा—शिष्यो गुरुमुपतिष्ठति ॥

११ आ पूर्वक अकर्मक हन् यम् आ० यथा—आहते, आयच्छते ॥

१२ सम पूर्वक अकर्मक "गम्" और "श्रु" आत्मनेपद होते हैं। यथा—सङ्गच्छते, संश्रृणुते, सकर्मक सङ्गच्छति मित्रम्, संश्रृणोति शास्त्रम् ॥

१३ स्पर्द्धा अर्थ में आ पूर्वक 'व्हे' आत्मनेपद होता है। यथा-मल्ल माह्वयते मल्लः। पिता पुत्रमाह्वयति ॥

१४ उपसर्ग हीन क्रम से विकल्प आ०। यथा—क्रमते क्रामति ॥

१५ अपह्नव अर्थ में ज्ञा आ०। यथा—पुत्र मुपजानते ॥

१६ सम् और प्रति पूर्वक ज्ञा से आ० यथा—संजानीते, प्रति जानीते, स्मरणार्थ में नहीं। यथा—पुत्रं संजानाति स्मरतीत्यर्थः ॥

१७ उपसर्गहीन ज्ञा]से आत्मनेपद होता है। यथा—जानीते, जानाति

१८ तृतीयान्त पद के योग में संपूर्वक चर से आत्मनेपद होता है अश्वेन संचरत ॥

१९ रक्षा से भिन्न अर्थ में भुज से आ०! भुङ्क, भोजनम्; मही भुनक्ति राजा ॥

२० जब कर्त्ता स्वार्थ क्रिया करे तो उभयपदी धातु में भी केवल आत होता है। यथा—यजते विप्रः यजतियाजकः। यहां विप्र आत्मर्थ यज्ञ करता है। और याजक यजमान के हितार्थ ॥

कर्म वाच्य (Passive) भाववाच्य (intransitive)

१ उक्त वाक्यों में धातु आत्मनेपद होता है ॥

२ कर्म वाच्यों में कर्म कारक वचनानुसार, क्रिया के पुरुष वचन होते हैं ॥

३ भाववाच्य में केवल प्रथम पुरुष का एक वचन ही होता है ॥

४ लडादि चार विभक्तियों में कर्म-वाच्य और भाववाच्य के उत्तर सब गणकी धातुओं के आगे "य" लगता है। यथा—गम-गम्यते, पठ-पठ्यते स्रज-स्रज्यते, भुज-भुज्यते, भिद्-भिद्यते, छिद्-छिद्यते, शुच-शोच्यते, स्पृश-स्पृश्यते, लभ-लभ्यते, नी-नीयते, हन्-हन्यते, ज्ञा-ज्ञायते, इत्यादि ॥

५ धा, मा, गा, हा, पा, स्था इनके आ को ई होजाता है यथा—दा-दीयते, धा-धीयते, मा-मीयते, गा-गीयते, हा-हीयते, पा-पीयते, ला-लीयते, स्था-स्थीयते, इत्यादि ॥

[लकारार्थनिर्णय] (Rules for the use of tenses and moods)

१ वर्तमान में लट् होता है, यथा—भवति, तिष्ठति, पठति, आदि ॥

२ अतीतकाल में लिट् लङ् लुङ् होते हैं। यथा—लिट्-जगाम, बभूव, ददर्श, तस्थौ। लङ्-अगच्छत, अभवत, अपश्यत, अतिष्ठत। लुङ् अगमत अभूत अदर्शत अस्थात ॥

३ भविष्यत में लट् लृट् होते हैं। यथा—गन्ता, भविता, द्रष्टा, स्थाता। लृट्—गमिष्यति, भविष्यति, द्रक्ष्यति, स्थास्यति, आदि ॥

४ स्मा के योग में अतीत काल में लट् होता है। यथा—स गृहमागच्छतिस्म। स व्याकरणमधीतेस्म ॥

५ मा के योग में सर्वकाल में लुङ् होता है। यथा—माभूत दुःखम, माभूत शोकः ॥

६ यावत् पुरा का योग हो तो भविष्यत् में लट् आता है। यथा सयावत आगच्छति, तावद् गृहंगमिष्यामि ॥

७ कदा और कर्हि के योग में भविष्यत् काल में विकल्प से लट् होता है। यथा—कदा ददामि न जाने [दास्यामि] ॥

८ कथं के योग में सब काल में विधिलिङ् होता है। वदयामि यदा स आगच्छेत्। दास्यामि यदि स आगच्छेत् ॥

आशीः अर्थ में आशीर्लिङ् और लोट् होते हैं। यथा-तव सुखं भूयात् भवतु वा, सा चिरंजीव्यात्। जीवतु वा ॥

१० विधि अर्थ में लिङ् होता है। यथा—सत्यं वदेत,प्रियं ब्रूयात् वा अनृतं वदेत, गुरुं न निन्देत् ॥

११ अनुज्ञा नियोग निमन्त्रण अनुरोध प्रार्थना जिज्ञासा इन अर्थों में विधिलिङ् और लोट् होते हैं। अनुज्ञाः-गच्छतु भवान, नियोग करोतु भवान, निमन्त्रण-इह भुञ्जीत भवान, अनुरोध-इह शयीत भवान, प्रार्थना-पुत्रमध्यापयेद भवान्,जिज्ञासा-किं व्याकरण मधीयीत उत काव्यम् ॥

१२ क्रियाओं का कार्य कारण भाव हो तो दोनों के भविष्यत् में विधिलिंग होता है, यदि वाल्ये धीयीय यावज्जीवं सुखं लभेत्। यदि प्रियं वदेत् सर्वस्य प्रियो भवेत् ॥

१३ समर्थना अर्थ में धातु के उत्तर लोट् होता है। यथा—सिन्धु मपिशोषयाणि ॥

१४ क्रिया की अनिष्पत्ति में अतीत काल में धातु के उत्तर लृङ् होता है। यथा—सचेदागमिष्यम् ॥

१५ पौनः पुन्य और अतिशय अर्थ में सब धातुओं के परे सब काल, सब पुरुष और सब विभक्ति में लोट् के हि, त, स्व ध्वं वहीं कई एक विभक्ति होती हैं ॥

कृदन्त प्रकरणम् ।

१ धातु के उत्तर "तुम" और त्वाच यप आदि कई एक प्रत्यय होते हैं,जिन्हें,कृत प्रत्यय कहते हैं और तदन्त शब्द(Derivativeverbs) कृदन्ती कहलाते हैं, और क्रिया के सदृश अर्थ का बोधन करते हैं। वह कई हैं, जिन में से कुछ एक यहां दिखलाते हैं ॥

२ [तुम] निमित्त अर्थ[Infinitive sense]समझाने में लगता है : दा-दातुम, भुज-भोक्तम, पत-पतितुम, भू-भवितुम,शुच-शोचयितुम कृ-कर्तुम, दृश-द्रष्टुम् सह-सहितुम सोढुम, चिन्त-चिन्तयितुम् ॥

३ [त्वाच-यप] दो क्रियाओं का एक कर्त्ता हो तो अनन्तर अर्थ

में आते हैं, परन्तु यदि निषेध वाचक 'अ' अन्न को छोड़ और सब अव्यय पूर्व होने से होता है। यथा:-पा-पीत्वा, स्था-स्थित्वा दा-दत्वा वच उक्त्वा, भिद-भित्वा, बुध्-बुद्ध्वा-लभ्-लब्ध्वा, दृश्-दृष्ट्वा, विध-विधित्वा, उष, उषित्वा। आ-दा आदाय, आगम, आगम्य, [त्या] आ-हन आहत्य विजित्य, संस्मृत्य, विश्रभ्य, विचिन्त्य, प्र+श्रु-प्रश्रुत्वा अनु+वच-अनुक्त्वा आदि। रामो-गृहंत्यक्त्वा वनं जगाम, सविहस्य प्रोवाच॥

४ 'णम्' [यम] यह भी आता है जब वीप्सा हो। यथा-स्मारम् स्मारं नमति, वा स्मृत्वा २ नमति,। दरिद्र दश ददाति, विप्र दर्श-जर्यांजलि हस्त ग्राहं गृह्णाति, आदि॥

शतृ और शानच् [Present]

५ कर्त्ता [Active Voice] में धातु के उत्तर परस्मैपद में शतृ [अत] आत्मनेपद के उत्तर शान-[आन, उभय पदों के उत्तर दोनों होते हैं। यथा-भू-भवत्-स्था-तिष्ठत् गम-गच्छत, दृश् पश्यत् पा पिवत्, घ्रा-जिघ्रत नम्-नमत, दिव-दीव्यत श्रु-शृण्वत् इष् इच्छत् अश्-अश्नत भज-भजयत, वन्द-वन्दान् शी-शयान, सिच-सिञ्चत् (सिंचान) रुध-रुन्धत् (रुन्धान) क्री-क्रीणत् (क्रीणान) गृह-गृह्णत् (गृह्णाण)॥

६ भ्वादि दिवादि तुदादि और चुरादि धातुओं के उत्तर मान और अदादि गणीय आस के उत्तर "ई" भू-भवमान, सेव-सेवमान, वृत-वर्तमान, स्था-स्थापियमाद चिकीर्ष-चिकीर्षमाण। दिवादि (जन) जायमान, मन-मन्यमान, तुद-तुधमान, चुर-चोरयमान, मन्त्र-मन्त्रयमान, आस-आसीन। स चन्द्र पश्यन् गच्छति, तौ चन्द्र पश्यन्तौ गच्छन्तौ, ते चन्द्र पश्यन्तः गच्छन्ति गच्छन् पुरुषः, गच्छन्ती नारी, पतत् फलम् शयाना जारो शबानामिश्रम्॥

६ क्वसु कानच (Past Participle)

धातु के उत्तर परस्मैपद में [क्वसु (वस्) आत्मनेपद में कानच (आन) और उभयपदों के उत्तर दोनों होते हैं यथा- क्वसु श्रु-शुश्रुवस

विद्-विवद्वस भू-बभूवस यज्-ईजिवस हन जघन्वस रुच रुरुचान, युध-युयुधान, वन्द ववन्दान, सह सहान, स गानं शुश्रुवान् जगाम तौ गानं शुश्रुवांसौ जग्मतुः ते शुश्रुवांसः जग्मुः विविदुषी कन्या ॥

स्यत् स्यमान (Future Participle)

भविष्यत अर्थ में कर्तृ वाच्य में परस्मैपदी धातु के उत्तर स्यतृ (स्यत) आत्मेपदी के उत्तर स्यमान उभयपदी के उत्तर दोनों होते हैं। यथा—स्यतृ भू-भविष्यत गम्-गमिष्यत् दृश्-द्रक्ष्यत् (स्यमान) सेव-सेविष्यमाण कृत कर्तिष्यमाण। स्तु-स्तोष्यत् स्तोष्यमाण दा-दास्यत्-दास्यमान कारि-कारयिष्यत् कारयिष्यमाण दृश-दर्शयिष्यत् दर्शयिष्य-माण स वेदं पठिष्यन् गुरुगृहं गच्छति। पितरं सेविष्य माणः सत्वरं व्रजति, स पतिष्यन् फलं गृह्णाति।

९ कर्मवाच्य और भाव वाच्य से धातु के उत्तर तव्य अनीय और य प्रत्यय होते हैं तदन्त शब्द त्रिलिंग हो, सब विभक्तियों में उच्चरित हो विशेष्य का लिङ्ग बनते हैं। यथा—ग्रन्थः पठनीयः ग्रन्थौ पठनीयौ ग्रन्थाः पठनीयाः पुस्तकं पठनीयम् पत्रिका पठनीया एवं भवितव्यम् आदि ॥

१० भाव वाच्य (Intransitive Passive) में तव्य अनीय और य लगाने से जो शब्द सिद्ध होते हैं उनके रूप अकारान्त नपुंसकलिंग प्रथमा के एक वचनान्त की न्याई होते हैं। यथा—स्था-तव्य-स्थातव्य-मया स्थातव्यम्। क्रीडितव्यं क्रीडितव्यं मयाक्रीडितव्यम् स्थातव्यं भवितव्यं मया भवितव्यम् दा—अनीयदानीयम, जि अनीय-जयनीयम, जेतव्यम् श्रुश्रोतव्यम्, दृश्-द्रष्टव्यम् दर्शनीयम् वच्-वक्तव्यम वचनीयम, वाच्यम, भुज भोक्तव्यम् भोजनीयम् भोज्यम् चिति चिंतिनयम चिन्त्यम् चिन्तनीयम् ॥

११ कभी इसी अर्थ में ण्यत् (य) भी होता है परन्तु वहाँ होता है। यथा-श्रु श्र व्यम वह वाह्यम् ध धार्य्यम् आदि ॥

१२ कर्तृवाच्य में भूतकाल में धातु के उत्तर "तवत" प्रत्यय होता है। यथा—ज्ञा-ज्ञातवान् कृत-कृतवान् स्था-स्थितवान् गम-गतवान् हन-हनतवान् भुज्-भुक्तवान् ॥

कर्मवाच्य में।

१३ सकर्मक क्रिया से भूतकालिक क्रिया में क्त प्रत्यय लगता है। यथा—दृश् दृष्टं शी शयितं, कृ-कृतं, ग्रह ग्रहीतं, ज्ञा-ज्ञातं, श्रु श्रुतं वच-उक्तम्, कृ-कृतं क्त-प्रत्ययान्त शब्द कर्म के विशेषण होते हैं, और उसी के विभक्ति और वचन रखते हैं। यथा—तेन ग्रंथः पठितः ग्रन्थौ पठितौ ग्रन्थाः पठिताः। पुस्तकं पठितम् पुस्तके पठिते, पुस्तकानि पाठितानि, पत्रिका लिखिता, पत्रिके लिखिते, पत्रिका लिखिताः।

१४ भाववाच्य में अकर्मक धातु (Intrasitive Verbs) के उत्तर क्ति प्रत्यय लगता है और तदन्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है यथा—ख्याति, श्रुति भक्ति, भ्रम भ्रान्ति, वच् उक्ति आदि।

१५ कर्तृवाच्य में अकर्मक धातु के परे तृण (तृ) णक (अक) और णिन प्रत्यय होते हैं। यथा—दा-दातृ, जि-जेतृ श्रु-श्रोतृ, हन-हन्तृ भू-भवितृ, ग्रह-ग्रहतृ, (णक) नी-नायक, पू-पावक, कृ-कारक, पच-पाचक रिच्-रेचक, (णिन) वद-वादिन, गम्-गामिन, यम्-यामिन् स्थायिन् द्रुह-द्रोहिन् कृ-कारिन् ॥

१६ भाववाचक में धातु के उत्तर घञ् (अ) घल् (अ) प्रत्यय लगते हैं। पाकः पठ-पाठः, त्यज् त्यागः जि-जयः, स्तु-स्तवः, नी नयः ॥

१७ करण और अधिकरण अर्थ में धातु के उत्तर अनट् (अन्) होता है। यथा—गम-गमनम् भुज्-भोजनम् नी-नयनम् भू-भवनम् भू-भुवनम् ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

———

प्रश्न पत्रम् ।

वर्ण और सन्धि प्रकरण ।

(१) वर्ण किसको कहते हैं ? स्वरों के कितने भेद हैं ? स्पर्श कौन, अन्तस्थ और ऊष्म कौन अक्षर हैं ।

(२) श् ष् ह् ए् अ ण् (ं) (:) इनके कौन २ स्थान हैं ॥

(३) पद किसको संहिता किसको और संयोग किसको कहते हैं ? लघु और गुरु तथा 'प्लुत' कौन २ अक्षर हैं ? प्रकृति प्रातिपादक तथा क्रिया किसको कहते हैं ॥

(४) ने+अनं दधि+आनय, पौ+अकः, हरे+ अत्र, लखे+आगच्छ स्त्रियै+पति । महौषधिः उपेंद्र गिरीन्द्रः, देवर्षिः-मन्वन्तरः, वाग्जंशः, बिम्बोष्ठः स्थूलोतुः । जहां सन्धि नहीं करो, जहां की गई है छेदो ॥

(५) हच्छूवि, पतंस्तरु, वन्दाम्म् वृक्ष+छाया तन्निमित्तम् कश्शेते प्रथमस्सर्गः सञ्चित् निश्चयः पितः आगच्छ पुनर+रमते, शीघ्र+चलति, त्वं+करोषि । जिन में सन्धि है छेदो—जिन में किया है करो ॥

(६) शोभन;+गन्धः अन्तः+आसी देव+ अयं पयः+पाशं, सः आह भोःदेव । उक्त प्रयोगों में सन्धि करो, और बताओ नृणाम् षणाम् चतुर्णाम् इन में "ण" क्यों हुआ, और दुर्नीनि, नरनाथः इत्यादि में क्यों नहीं हुआ ॥

पद प्रकरणम् ।

(७) विभक्ति वचन किसको कहते हैं । और कितने २ हैं ? दिवानाम् रामेषुः विश्वपः मुनेः पत्युः लक्ष्मौ, पितरि भ्रातुः यह क्या २ विभक्ति हैं और जो २ वचन हैं उनके और दो २ रूप भी लिखो ?

(८) जरा, मति नदी, श्री, स्त्री, वधू, मातृ, नौ, ग्लै, रै, इनके उच्चारण लिखो ?

(९) नपुंसक किसको कहते हैं. फल की १मा, २या, बताकर पांच शब्द फलवत् बताओ, वारि, दधि, अस्थि, शब्द का जिस जिस विभक्ति में में भेद है लिखो ?

(१०) तिर्यञ्च को तिरश्च कहां होता है, पती क्योंकर सिद्ध हुआ यावत् तावत् युवन् पयस् धनुस, जगत् इन के उच्चारण लिखो ?

सर्वनाम् प्रकरणम् ।

(११) सर्वनाम किसको कहते हैं कितने गणों में विभक्त है बता कर त्यत् इनके तथा युष्मद मों ३था, से आगे के रूप लिखो ?

(१२ यस्यं, अमुष्यै, अनेन एतस्मात् एकस्मिन तिस्रः द्व द्वयः महान्ति अमुष्मिन् आभ्याम् एतयोः युष्माभिः मह्यम् क्या २ विभक्ति और वचन है ?

स्त्री प्रत्यय प्रकरणम् ।

(१३) गौर, कुमार, सिंह, गोप, सुकेश, कुर्वत, रुद्र भव आचार्य इन शब्दों के स्त्री लिंग बताओ ॥

कारक प्रकरणम् ।

(१४) कारक किसे कहते हैं, कितने हैं किस किस अर्थ में कौन २ कारक आता है ?

(१५) ब्राह्मणाय नमः, भवते स्वस्ति, यूपाय दारुः, यवात् ग्रामो योजने योजनं वा कोशाद्ध्ययम व्याघ्रात् त्रस्यति, अल्पाकाणः, पादेन खञ्जः, ग्रामं गच्छति, चतुर्थ्यादि विभक्तियें किन २ अर्थों में आती है।

(१६) साधूनां पूजितः। सतां मतः। अस्यासितं। पण्डितानां विदितः, तव पुस्तकं पाठ्यं, यहां षष्ठी और ३या, क्यों है ?

समास प्रकरणम् ।

(१७) समास किसको कहते हैं, कितने हैं, प्रत्येक का एक २ उदाहरण भी दो ?

(१८) इतरतो, द्यावाभूमी, काकोलूकं, वटवारूढः, प्रत्यक्षं, मांसास्थिकं-घिरं, त्रिपथं, किं सखः अनुषङ्ग, राजपुरुषः उक्त पदों में समास बताओ?

तद्धित प्रकरणम् ।

(१९) मेधावी पटुतः, द्रढिष्ठः, गुरुतम, घृतमयम्, व्रतमयम्, त्रिधा, सर्वत्र, एकदः, धनवान् उक्त पदों में क्या २ प्रत्यय हैं ?

क्रिया प्रकरणम्

(२०) धातु किसको कहते हैं, कितने प्रकार के हैं, वाच्य कितने हैं सहोदाहरण लिखो ?

(२१) लकार कितने हैं और किस २ अर्थ में आते हैं, बता कर भूत भविष्यत और अनुज्ञा के प्रत्यय लिखो ?

(२२) दश, वृत् अद् अ्, सु नशु इनके लट् लङ् लुङ् और लृङ् के रूप लिखो ?

(२३) धु भम, रुच, पृच् नृ इनके प्रेरणार्थक सन्नन्त, यङन्त में लोट् के रूप लिखो ?

(२४) नाम से धातु बनाने के क्या २ नियम हैं अभूत तद्भाव क्या होता है ?

२५) निविशतु, विकंपाने (उत्तिष्ठते) संगच्छति संशृणोति । इन में आ० पा० के नियम बताओ ।

(२६) कर्तृवाच्य, भाव वाच्य और कर्मवाच्य के नियम बतला कर कुछ उदाहरण कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के दो ।

कृदन्त प्रकरणम् ।

(२७) श्रोतुं स्मारं, स्थित्वा पायम्य. पचमानः गतः च्युतः गतवान् वक्तव्यम् । लाध्यम् । लाव्य भाव्यं, कृत्यम् । स्तुत्यं इन में जिन २ अर्थों में जो २ प्रत्यय हैं लिखो ।

विद्यारत्न पं० भानुदत्तः

॥ इति श्री ॥

UTTAR CHAND KAPUR & SONS,
Book-sellers and Publishers,
Anarkali, LAHORE.

Printed at the Union Steam Press, Lahore.